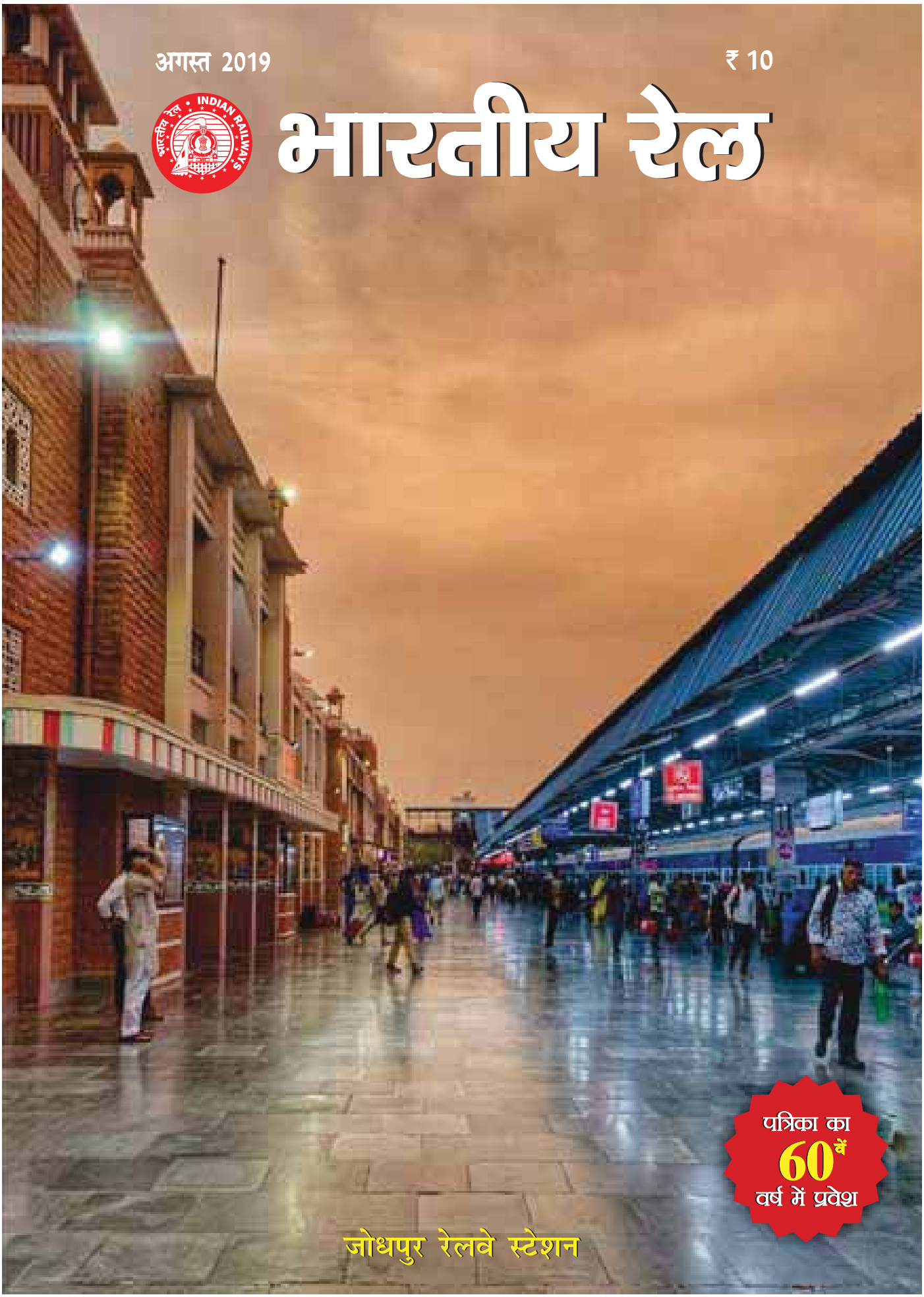
अगस्त 2019

₹ 10

भारतीय रेल



पत्रिका का 60वें वर्ष में प्रवेश

जोधपुर रेलवे स्टेशन

FLUID CONTROLS®



IREE 2019

13th INTERNATIONAL RAILWAY EQUIPMENT EXHIBITION

Aerocity | New Delhi | INDIA

22-24 October 2019

ENGINEERING COMPREHENSIVE SOLUTIONS FOR

RAIL & METRO BRAKE PIPING



- Design & Engineering
- High Performance Connectors
- Onsite Installation
- Swaging Services
- Pre-Piped Assemblies

Visit us at IREE 2019 at **Hall 3, Stand 47**

+91-22-68238000 railways@fluidcontrols.com fluidcontrols.com

MATRIX SECURITY AND TELECOM SOLUTIONS



COGNITIVE IP VIDEO SURVEILLANCE SOLUTIONS FOR RAILWAYS:

VIDEO MANAGEMENT SYSTEM

- Centralized Management and Control
- Scalable up to 65,535 Cameras and 10,000 Locations
- Integration with Access Control, Fire Alarm, Third-Party Cameras and NVRs
- Intelligent Video Analytics (Standard and Advanced)

NVR

- Cascading up to 20 NVRs
- Automatic Camera Initiation
- RAID 0, RAID 1, RAID 5, RAID 10 Support
- Storage up to 80TB (10TB x 8)
- 4K Resolution on HDMI 2.0 for LIVE View Streams
- Up to 12MP Camera Recording

IP CAMERAS

- Powered by SONY STARVIS Sensors for Colored Images
- True WDR (120dB) and H.265 Compression
- Larger Field of View (FOV > 90 degree)
- IK10 and IP66 Certified

www.MatrixVideoSurveillance.com

TELECOM

Communication Solutions for Modern Enterprises



- Unified Communication Solutions for Modern Enterprises
- IP PBX with In-Built Support for PRI, CO, GSM and VoIP Trunks
- Video Conference with IP Deskphone
- Universal Media Gateways – PRI, CO, GSM, VoIP
- 4G VoLTE-SIM Compatible FCT with Battery Backup New Launch

www.MatrixTeleSol.com

PEOPLE MOBILITY MANAGEMENT

Right People in Right Place at Right Time



- Face, Fingerprint, Palm Vein, RF Card and PIN as Credential
- Aadhaar Enabled Biometric Attendance System
- Access Control and Time-Attendance
- COSEC APTA - Mobile based Attendance Application

www.MatrixAccessControl.com

MATRIX
TELECOM | SECURITY

MATRIX COMSEC
394-GIDC, Makarpura, Vadodara-390 010, India.
Call: **(+91) 1800-258-7747**
E-mail: **Govt@MatrixComsec.com**

Designed, Developed and Manufactured in INDIA

Available on GeM Government e Marketplace

www.MatrixComSec.com

प्रिय विज्ञापनदाता

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एक मात्र मासिक हिन्दी पत्रिका

भारतीय रेल

में अपना विज्ञापन देकर लाखों उपभोक्ताओं तक अपने उत्पादों की पहुंच बनाएं

भारतीय रेल की विज्ञापन दरें (रुपये में)

विवरण	सामान्य दरें	अनुबंधित दरें
सेकण्ड कवर	10,450/-	9500/-
थर्ड कवर	9500/-	8550/-
पूरा पृष्ठ (विशेष स्थिति जैसे टेक्स्ट से पूर्व व बाद में)	8550/-	7600/-
पूरा पृष्ठ (सामान्य)	7600/-	6650/-
आधा पृष्ठ	5130/-	4180/-
सेन्टर स्प्रेड	15,000/-	13,300/-
सेन्टर स्प्रेड (स्पेशल पोजिशन)	16,500/-	14,700/-

(विज्ञापन चार कलर में)

तीन महीने या ज्यादा समय के लिए लगातार अथवा बारी–बारी विज्ञापन देने पर ही अनुबंधित दरें लागू होंगी

तकनीकी विवरण

पत्रिका का आकार 28 से.मी. x 20.5 से.मी.

छपाई क्षेत्र 23 से.मी. x 16.5 से.मी.

★ पत्रिका का प्रसार **समग्र देश में** ★

विज्ञापन सामग्री – ई–मेल, आर्टपुल, सीडी

संपर्क करें : व्यापार प्रबंधकः प्रशांत कुमार पट्टनायक, मोबाइल : 9717647367

310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली–110001

टेलीफोन : 011–23382531, 23303665, 23304456

Email : bmpr310rb@gmail.com

भारतीय रेल

रेल मंत्रालय की एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका

अगस्त–2019

आरंभ : 1960 | वर्ष : 60 | अंक : 1 | मूल्य : ₹10



संपादक मंडल

विनोद कुमार यादव
अध्यक्ष

विजय कुमार
वित्त आयुक्त (रेलवे)

सुशांत कुमार मिश्रा
सचिव

राजेश दत्त बाजपेई
निदेशक (सूचना एवं प्रचार)

योगेश अवस्थी
संपादक

संपादकीय कार्यालय

सम्पादक, भारतीय रेल,
कमरा नं. 337-बी, रेल भवन,
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001
रेलवे टेली - 44519, 9666
(मो.) 9717641075,9909909966
ई-मेल
editorbhartiyarailrb@gmail.com
editorbhartiyarail@gmail.com

विज्ञापन व सदस्यता हेतु संपर्क

प्रशान्त कुमार पट्टनायक
व्यापार प्रबंधक
कमरा नं. 310, रेल भवन
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001
टेलीफोन:
23303665, 23382531
रेलवे टेली. : 43665/9669
(मो.) : 9717647367

सदस्यता शुल्क

सर्वसाधारण - ₹ 100,
रेलकर्मियों के लिए - ₹ 90

संपादन सहयोग

दिनेश / रणमत सिंह

आवरण

जोधपुर रेलवे स्टेशन का दृश्य

फॉलो करें

Twitter
@bhartiyarailrb
Facebook
www.facebook.com\
kbhartiyarailpatrika
Instagram
bhartiyarailpatrika

अम्बाला में राष्ट्रीय रेल पुरस्कार समारोह, रेल प्रदर्शनी... 9
64वां वार्षिक रेल सप्ताह राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह... 10
64वां वार्षिक रेल राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह की झलकियां 11
रेल राज्य मंत्री ने अनूपगढ़-बठिण्डा एक्सप्रेस को... 13
भारतीय रेल का करगिल के बहादुरों को... 13
सदस्य, सामग्री प्रबंधन का उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय... 14
असम में रेल कनेक्टिविटी को प्रोत्साहन 15
इलाहाबाद और पं. दीन दयाल उपाध्याय जं. के बीच... 15
उत्तर प्रदेश में रेल संपर्क को प्रोत्साहन 16
जापानी प्रतिनिधिमंडल द्वारा ट्रैक अनुरक्षण प्रणाली... 16
संसद में भारतीय रेल 17
सदस्य, सामग्री प्रबंधन द्वारा पश्चिमी क्षेत्र 32



भायखला रेलवे स्टेशन के विरासत बहाली का कार्य प्रारंभ
7



64वें वार्षिक रेलवे राष्ट्रीय पुरस्कार...
8

महालक्ष्मी ईएमयू कारखाना भारतीय रेल का 32
सदस्य रोलिंग स्टॉक ने रायपुर वैगन रिपेयर शॉप 33
सदस्य कर्षण का साबरमती डीजल लोको केयर 33
श्री पूर्णेन्दु मिश्रा रेलवे बोर्ड के सदस्य, यातायात नियुक्त 34
हमारे नये सदस्य कर्षण, रेलवे बोर्ड: श्री राजेश तिवारी 34
उत्तर पश्चिम रेलवे में ई-ऑफिस की शुरुआत 34
स्वच्छ डीरेका - हरित डीरेका रश्मि गोयल 35
बेहतर यात्री सुविधाओं के संग सूरत स्टेशन को मल्टी-मॉडल ट्रांसपोर्टेशन हब बनाने की महत्त्वपूर्ण योजना 38
पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के प्लान 'बी' को मिला नवोन्मेष 40
इंजीनियरिंग का बेजोड़ नमूना नैनी यमुना ब्रिज 154 वर्ष का 41
उत्तर पश्चिम रेलवे : प्रगति के आयाम *शशि किरण* 48
उत्तर पश्चिम रेलवे मुख्यालय को मिला सर्वोच्च ग्रीन रेटिंग प्रमाणपत्र 49
हावड़ा रेलवे स्टेशन की रोचक जानकारी *विमलेश चन्द्र* 50
जगजीवन राम अस्पताल में पहली बार बच्चे की ओपन हार्ट सर्जरी... 55
'ऑपरेशन 5 मिनट' यात्रियों को मिनटों में मिलेगा टिकट 55
कालका-शिमला रेलवे में झरोखा और आर.ए.100 सेल्फ प्रोपेल्ड कोच... 56
पूर्व मध्य रेलवे ने हेड ऑन जेनरेशन सिस्टम का प्रयोग शुरू किया 58
शकूरबस्ती में कोचिंग टर्मिनल परिसर के भीतर ऑटोमैटिक अपशिष्ट जलशोधन 58
रेलों के अंचल से 59
खेल जगत 69
मूक प्यार (कहानी) *मंजु* 70
श्रावण मास में भक्ति एवं आनंद... *दुर्गादत्त शर्मा* 73
64वें राष्ट्रीय रेल सप्ताह 2019 में पुरस्कृत कर्मियों की सूची 76

साक्षात्कार



अरुण कुमार
महानिदेशक, रेल सुरक्षा बल
42-47

'भारतीय रेल' पत्रिका का गौरवशाली 60वें वर्ष में प्रवेश....



'भारतीय रेल' पत्रिका का प्रथम अंक

भारतीय रेल की ऐतिहासिक विकास यात्रा की साक्षी रही 'भारतीय रेल' पत्रिका अपने गौरवशाली 60वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। हमारा प्रयास रहा है कि हमारे सुविज्ञ पाठकों को रेल के विकास की नित नई जानकारियाँ उपलब्ध करवाई जाएँ, जो अविरत जारी हैं।

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एक मात्र हिन्दी मासिक पत्रिका 'भारतीय रेल' का प्रकाशन 15 अगस्त, 1960 से नियमित रूप से किया जा रहा है। 'भारतीय रेल' पत्रिका के 59 वर्ष के सफर में हमारे सुधी पाठकों के सहयोग को भी भुलाया नहीं जा सकता। हमारी टीम हमारे सभी पाठकों, लेखकों तथा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस पत्रिका को यहाँ तक पहुँचाने में सहयोग देने वाले सभी लोगों का दिल से धन्यवाद करती है। जल्द ही हम 'भारतीय रेल' पत्रिका के अभी तक के सफर की विस्तृत जानकारी वाला लेख प्रकाशित करेंगे।

पिछले कुछ वर्षों में पत्रिका में पठन सामग्री, साज-सज्जा, पेपर क्वालिटी, मुखपृष्ठ डिजाइन आदि में भी आमूल परिवर्तन किए गए हैं। नए-नए कॉलम शुरू किए जा रहे हैं। पाठकों के सुझाव ही हमारे मार्गदर्शक साबित हो रहे हैं। हम अपनी कमियों से सीख ले, उसे सुधारने का प्रयास कर रहे हैं।

पत्रिका को अधिक पठनीय बनाने के लिए समय-समय पर विषय आधारित विशेषांकों का प्रकाशन किया जा रहा है। हाल ही में 'अंतरराष्ट्रीय खेलों में भारतीय रेल', 'महिला एवं बाल विशेषांक', 'गांधी, भारतीय रेल और स्वच्छता', 'रेल संग्रहालय विशेषांक' आदि अंक पाठकों की सराहना के पात्र बने। आने वाले समय में रेल से संबंधित विशेषांक प्रकाशित किए जाएँगे।

इस अंक से हम 'साक्षात्कार' कॉलम की शुरुआत कर रहे हैं। इसमें हम हर माह रेलवे के एक उच्च अधिकारी का साक्षात्कार प्रकाशित करेंगे। इस अंक में हम अरुण कुमार, महानिदेशक, आरपीएफ का साक्षात्कार प्रकाशित कर रहे हैं। यदि आप किसी व्यक्ति का साक्षात्कार पढ़ना चाहते हों तो हमें जरूर बताएँ।

पत्रिका के इस अंक के मुखपृष्ठ की तसवीर देख कर आपको निश्चित रूप से आश्चर्य हुआ होगा कि यह तसवीर भारत देश के किसी रेलवे स्टेशन की है। जी हाँ, कुछ ऐसा ही महसूस किया रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल ने, और ट्वीट किया –

"एल.ई.डी. लाइट्स से जगमगाता, आधुनिकतम सुविधाओं से भरपूर राजस्थान का जोधपुर रेलवे स्टेशन मानसून के मौसम में किसी खूबसूरत पेंटिंग की तरह और अधिक आकर्षक हो गया है।

रेलवे द्वारा स्टेशनों के सौंदर्यीकरण और सुविधाजनक बनाने की योजनाओं से आज स्टेशनों का कायाकल्प हुआ है।"

श्री गोयल ने 45 शब्दों के इस ट्वीट में भारतीय रेल में चल रहे सौंदर्यीकरण तथा सुविधाओं में हो रही प्रगति की बात कही है।



'भारतीय रेल' पत्रिका का इस माह का अंक

भारतीय रेल श्रेष्ठ कार्य हेतु अपने कर्मियों, क्षेत्रीय रेलवे तथा उत्पादन इकाइयों को हर वर्ष पुरस्कृत करती है। 64वें रेलवे वार्षिक रेल राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह 2019 का आयोजन इस बार तीन चरणों में क्रमशः रांची, अंबाला तथा मुंबई में आयोजित किया गया। इन तीनों स्थानों पर क्षेत्रीय रेलों, उत्पादन इकाइयों ने अपनी विकास की झांकी प्रस्तुत करते स्टॉल भी लगाए थे, जिन्हें देखने के लिए स्थानीय लोगों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी थी।

आपको यह अंक कैसा लगा, हमें जरूर बताएँ। आपके सुझाव हमारे लिए मार्गदर्शक साबित हो सकते हैं। यदि आप रेल, पर्यावरण तथा साहित्य में अपने मौलिक लेख भेजना चाहें तो आपका स्वागत है। आप हमारे फेसबुक पेज को लाइक करना न भूलें।

भारतीय रेल में यात्रा करते समय दूसरे यात्रियों का भी ध्यान रखें। ऊँची आवाज़ में संगीत न बजाएँ। आपके मनोरंजन से किसी को परेशानी हो सकती है। आपकी यात्रा सुखमय हो। ■

भायखला रेलवे स्टेशन के विरासत बहाली कार्य का प्रारंभ





भायखला स्टेशन के विरासत बहाली कार्य का औपचारिक शुभारंभ करते हुए तथा यात्रियों के साथ सेल्फी खिंचाते हुए रेल और वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल

रेल और वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल ने भायखला स्टेशन के विरासत बहाली कार्य का औपचारिक शुभारंभ 20 जुलाई को किया। यह काम 'आई लव मुंबई' नामक एक गैर-सरकारी संगठन द्वारा किया जाना है, जिसे सुश्री शाइना एनसी द्वारा प्रायोजित किया गया है और इसे 'द बजाज' ग्रुप चैरिटेबल ट्रस्ट से सहायता प्राप्त हुई है।

परियोजना के औपचारिक शुभारंभ के बाद श्री पीयूष गोयल ने स्टेशन का निरीक्षण किया और विभिन्न सार्वजनिक सुविधाओं, जैसे स्टेशन और आस-पास के क्षेत्र की सफाई, वॉश रूम, फुट ओवर ब्रिज, वाई-फाई का जायजा लिया तथा पुराने एंटीक फर्नीचर के लिए आवश्यक संशोधन/परिवर्तन के लिए अधिकारियों को उचित दिशा निर्देश दिये, ताकि स्टेशन हैरिटेज के रेस्टोरेशन के काम के साथ दूसरे कार्य भी मेल खाएं। उन्होंने यात्रियों और रेलवे कर्मचारियों के साथ विभिन्न सुविधाओं के बारे में चर्चा भी की। मध्य रेल के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री सुनील उदासी ने बताया कि मुंबई मंडल, मध्य रेल और गैर सरकारी संगठन 'आई लव मुंबई' के बीच एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। विरासत संरक्षण समिति द्वारा जारी दिशानिर्देशों के अनुसार और विरासत समिति से उचित मंजूरी के बाद विरासत संरक्षण अधिनियम के तहत निर्धारित प्रतिबंधों के अनुसार काम किया जा रहा है। इस अवसर पर अध्यक्ष, म्हाडा, श्री मधु चव्हाण, श्री वारिस पठान, विधायक, श्रीमती मीनल और श्री नीरज बजाज, सुश्री आभा लाम्बा, डॉ. आर. बद्री नारायण, अपर महाप्रबंधक, श्री एस. के. जैन, मंडल रेल प्रबंधक, मुंबई मंडल और अन्य विशिष्ट अतिथि उपस्थित थे। ■



Piyush Goyal ✓
@PiyushGoyal

LED लाइट्स से जगमगाता, आधुनिकतम सुविधाओं से भरपूर जोधपुर, राजस्थान का रेलवे स्टेशन मानसून के मौसम में किसी खूबसूरत पेंटिंग की तरह और अधिक आकर्षक हो गया है।

रेलवे द्वारा स्टेशनों के सौंदर्यीकरण और सुविधाजनक बनाने की योजनाओं से आज स्टेशनों का कायाकल्प हुआ है।

-श्री पीयूष गोयल, रेल और वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री



रांची में 64वें वार्षिक राष्ट्रीय रेल पुरस्कार समारोह का आयोजन



64वें वार्षिक राष्ट्रीय रेल पुरस्कार समारोह का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए रेल राज्य मंत्री श्री सुरेश अँगडी साथ में हैं झारखंड के मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास, रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष श्री विनोद कुमार यादव एवं अन्य गणमान्य अतिथिगण

64वें वार्षिक राष्ट्रीय रेल पुरस्कार समारोह का आयोजन 14 जुलाई, 2019 को रांची में किया गया जिसमें रेलकमियों के विभिन्न रचनात्मक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में निहित प्रतिभावों के अनुकरणीय प्रदर्शन को पुरस्कृत किया गया।

श्री रघुवर दास, मुख्यमंत्री, झारखंड इस समारोह में मुख्य अतिथि थे, जबकि श्री सुरेश अँगडी, रेल राज्य मंत्री सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री वी.के. यादव, अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, बोर्ड के सदस्य, बोर्ड के सचिव, क्षेत्रीय रेलवे / उत्पादन इकाइयों एवं सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के महाप्रबंधकों के साथ-साथ अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

इस अवसर पर देश के विकास में भारतीय रेल के योगदान पर विभिन्न क्षेत्रीय रेलवे, उत्पादन इकाइयों एवं सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों द्वारा नई पहल, अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी एवं विभिन्न विकासात्मक गतिविधियों के ऊपर एक उत्कृष्ट प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था।

रेल राज्य मंत्री ने सभी पुरस्कार विजेताओं और रेलवे परिवार के सभी कर्मचारियों को राष्ट्र की जीवन रेखा को चलाने के लिए उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बधाई दी।

श्री रघुवर दास, मुख्यमंत्री, झारखंड ने रांची में इस प्रकार के राष्ट्रीय स्तर के समारोह का आयोजन करने के लिए भारत सरकार को धन्यवाद दिया। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि भारतीय रेल ने स्वच्छता बनाए रखने एवं सुरक्षा उपायों पर विशेष कार्य किया है।

राष्ट्रीय रेल पुरस्कार समारोह मुख्य रूप से इंटर रेलवे पेंटिग, क्विज, सांस्कृतिक एवं डॉक्यूमेंट्री प्रतियोगिता के विजेताओं एवं उपविजेता पर आधारित था, जो क्रमश गुवाहाटी, तिरुवंतपुरम, वाराणसी एवं अहमदाबाद में आयोजित किए गए थे। पेंटिंग प्रतियोगिता में पूर्व तट रेलवे के श्री पी. श्यामसुंदर आचार्य ने प्रथम स्थान हासिलं किया, जबकि मध्य रेल के श्री चन्द्रप्रकाश रामटहल ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। क्विज प्रतियोगिता में दक्षिण रेलवे चैंपियन रही, जबकि इंटीग्रल कोच फैक्ट्री ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। सांस्कृतिक वर्ग में इंटीग्रल कोच फैक्ट्री के श्री पंकज बंधु जाधव लाइट वोकल (पुरुष) दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के श्री गौरव कुमार पाठक उपविजेता रहे। लाइट वोकल (महिला) में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की श्रीमती पुष्पा त्रिपाठी प्रथम एवं उत्तर पूर्व रेलवे की श्रीमती सुभाश्रीदाम द्वितीय रहीं। चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना की श्रीमती मौसमी साहा ने प्रथम एवं दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की श्रीमती माहेश्वरी प्रधान ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। पूर्व तट रेलवे चैंपियन हुई एवं पश्चिम मध्य रेलवे उपविजेता रही। डॉक्यूमेंट्री फिल्म प्रतियोगिता में पूर्व तट रेलवे ने प्रथम स्थान प्राप्त किया जबकि पूर्वोत्तर सीमा रेलवे उपविजेता रही। इससे पहले मुख्यमंत्री, झारखंड, रेल राज्य मंत्री, अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड एवं क्षेत्रीय रेल, उत्पादन इकाइयों और पीएसयू के महाप्रबंधकों ने प्रदर्शनी का दौरा किया और रेलवे के प्रयासों की सराहना की।

तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री पी. एस. मिश्रा (वर्तमान में सदस्य यातायात, रेलवे बोर्ड) के कुशल मार्गदर्शन में इस राष्ट्रीय समारोह का आयोजन दक्षिण पूर्व रेलवे के रांची मंडल द्वारा किया गया। ■

अम्बाला में राष्ट्रीय रेल पुरस्कार समारोह, तथा रेल प्रदर्शनी का आयोजन

64वें राष्ट्रीय रेल पुरस्कार समारोह एवं रेल प्रदर्शनी का उद्घाटन हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल एवं रेल राज्य मंत्री, श्री सुरेश अँगडी द्वारा अम्बाला के सनातन धर्म कॉलेज में 21 जुलाई को किया गया। रेल राज्य मंत्री ने इस समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान, आयुष, विज्ञान एवं तकनीक, खेलकूद एवं युवा मामले एवं अभिलेखागार मंत्री, हरियाणा सरकार, श्री अनिल विज, जल शक्ति और सामाजिक न्याय एवं सशक्तिकरण मंत्रालय राज्य मंत्री, भारत सरकार, श्री रतन लाल कटारिया, रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष, श्री वी.के. यादव, रेलवे बोर्ड के सदस्यगण, उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक श्री टी.पी. सिंह, अन्य क्षेत्रीय रेलों के महाप्रबंधक, विभिन्न प्रमुख विभागाध्यक्ष, अम्बाला मंडल के मंडल रेल प्रबंधक, अन्य वरिष्ठ रेल अधिकारी एवं रेल यूनियनों, एसोसिएशनों व फेडरेशनों के प्रतिनिधि भी उपस्थिति थे।



अम्बाला में रेल प्रदर्शनी एवं मेला के उद्घाटन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए रेल राज्य मंत्री श्री सुरेश अँगडी

अपने सम्बोधन में रेल राज्य मंत्री श्री अँगडी ने कहा कि हमारी पहली प्राथमिकता रेलगाड़ियों की गति सीमा बढ़ाना है और हम रेलवे के रूपांतरण की दिशा में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने रेल परिचालन में अग्रणी भूमिका निभाने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सराहना की।

इस अवसर पर बोलते हुए हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने हरियाणा में चल रहे रेल कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि हरियाणा में सभी कर्मचारी रहित समपार फाटकों को समाप्त कर दिया गया है। श्री मनोहर लाल ने कहा कि उत्तर रेलवे द्वारा रोहतक में 5 किमी रेलवे लाइन को एलिवेटिड रूप में बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि रेलवे राज्य में बेहतर रोजगार अवसरों पर ध्यान केन्द्रित कर रही है।

श्री लाल एवं श्री अँगडी ने उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक एवं उनकी टीम, उत्तर मध्य रेलवे के महाप्रबंधक एवं उनकी टीम और पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबंधक और उनकी टीम को कुम्भ मेला-2019 के अवसर पर शानदार प्रदर्शन के लिए सराहना पत्र एवं शील्ड प्रदान की। उन्होंने अनुसंधान, अभिकल्प एवं मानक संगठन के महानिदेशक एवं उनकी टीम को डीजल इंजन को विद्युत इंजन में बदलने के लिए सराहना पत्र प्रदान किया। श्री लाल एवं श्री अँगडी ने भारतीय रेल पर एक वर्ष में 5,276 रूट किमी रेल मार्ग को विद्युतीकृत करने, जोकि एक रिकॉर्ड है, के लिए विभिन्न क्षेत्रीय रेलों के महाप्रबंधकों को प्रशस्तिपत्र प्रदान किए। इन्होंने अम्बाला मंडल द्वारा कालका-शिमला रेलवे पर तैयार की गई कॉफी टेबल बुक भी जारी की। ■





लक्ष्य समय से पहले अपने क्षेत्राधिकार से सभी मानवरहित समपारों का उन्मूलन करने के लिए पूर्व तट रेलवे के महाप्रबंधक श्री विद्याभूषण को सम्मानित करते हुए हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल एवं रेल राज्य मंत्री श्री सुरेश अँगडी (बाएं) उत्तर पश्चिम रेलवे के स्टॉल को समस्त क्षेत्रीय रेलवे में प्रथम स्थान मिला (दाएं)

64वां रेल सप्ताह राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह मुंबई में सम्पन्न

भारतीय रेल का '64वां रेल सप्ताह राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह' 30 जुलाई को मुंबई के जमशेद जी भाभा थियेटर (एनसीपीए) में सम्पन्न हुआ। अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, श्री वी.के. यादव इस समारोह के मुख्य अतिथि थे।



30 जुलाई को मुंबई में आयोजित '64वें वार्षिक रेल सप्ताह राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह' में मंच पर उपस्थित रेलवे बोर्ड के सदस्यगण एवं क्षेत्रीय रेलों के वरिष्ठ अधिकारीगण

श्री एस.एन. अग्रवाल, सदस्य, कार्मिक, श्री राजेश अग्रवाल, सदस्य चल स्टॉक, श्री विश्वेश चौबे, सदस्य, इंजीनियरी, श्री एन. काशीनाथ, सदस्य, सिग्नल एवं टेलिकॉम, श्री वी.पी. पाठक, सदस्य, सामग्री प्रबंधन, श्री राजेश तिवारी, सदस्य, कर्षण, श्री पी.एस. मिश्रा, सदस्य, यातायात, श्री विजय कुमार, वित्त आयुक्त, श्री एस.के. मिश्रा, सचिव, रेलवे बोर्ड, सभी क्षेत्रीय और उत्पादन इकाइयों के महाप्रबंधक एवं पुरस्कार विजेता इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

श्री वी.के. यादव, अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड ने 133 व्यक्तिगत पुरस्कार विजेताओं और चार क्षेत्रीय प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पदक, चेक और प्रमाणपत्र प्रदान किए। सर्वश्रेष्ठ रनिंग रूम शील्ड मध्य रेल के नागपुर मंडल को प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित 8 रेलकर्मी, मध्य रेल के थे जिन्होंने मध्य रेल को गौरवान्वित किया। इनमें सर्वश्री मिखिल कारेकर, वरिष्ठ दक्षता अधिकारी, डॉ. स्वप्निल निला, सीनियर डिविजनल ऑपरेशन मैनेजर, डॉ. दीपक डालमिया, सीनियर मेडिकल ऑफिसर, श्री अरुण कुमार, डिवीजनल इलेक्ट्रिकल इंजीनियर, श्री मोहित सोरारी, डिवीजनल सिग्नल एंड टेलीकॉम इंजीनियर (कंस्ट्रक्शन), श्री राजेंद्र देशपांडे, सीनियर सेक्शन इंजीनियर (वर्क्स), श्री अजीत म्हसलकर, प्रोटोकॉल इंस्पेक्टर और श्री राकेश पागी, कार्यालय अधीक्षक शामिल थे।

अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड ने कार्य निष्पादन व उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए भारतीय रेल के जोन और उत्पादन इकाइयों का प्रतिनिधित्व करने वाले कर्मचारियों / अधिकारियों को विभिन्न शील्ड प्रदान की। दक्षिण पूर्व रेलवे ने 'समग्र दक्षता' गोविंद वल्लभ पंत शील्ड जीती।

श्री पीयूष गोयल, रेल, वाणिज्य और उद्योग मंत्री ने दिल्ली से वीडियो लिंक के माध्यम से समारोह को संबोधित किया। श्री पीयूष गोयल ने पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी और कहा कि सफलता एक मौका नहीं है, लेकिन सफलता एक विकल्प है। मुंबई सामान्य रूप से देश के धैर्य को दर्शाता है और रेलवे सदैव चुनौतियों को स्वीकार करने के लिये तत्पर रहती है। उन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों में रेलवे को बहाल करने में रेलवे और विभिन्न एजेंसियों की सराहना की। इस अवसर पर रेल राज्य मंत्री श्री सुरेश अँगडी भी उनके साथ उपस्थित थे।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री वी.के. यादव, अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड ने कहा कि पिछले वर्ष के दौरान रेलवे द्वारा किए गए कार्यों को बजट चर्चा के दौरान संसद के सदस्यों द्वारा सराहा गया था। उन्होंने यह भी कहा कि कोचों के रिकॉर्ड उत्पादन में वृद्धि के कारण लोगों की उम्मीदें कई गुना बढ़ गई हैं और हमें इस चुनौती का सामना करना होगा। उन्होंने यह भी कहा कि अगले 10 वर्षों में भारतीय रेल को दुनिया में नंबर 1 रेलवे के रूप में देखने के प्रधानमंत्री के विज़न को हमें साकार करना है। उन्होंने समारोह के उत्कृष्ट आयोजन के लिए मध्य रेल को भी बधाई दी।

इससे पहले, मध्य रेल के महाप्रबंधक श्री ए.के. गुप्ता ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती वंदना और दीप प्रज्ज्वलन के बाद मध्य रेल सांस्कृतिक अकादमी द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति से हुआ।

पहली बार पुरस्कार विजेता कर्मियों को समारोह के तुरंत बाद उनके फोटो (फ्रेम के साथ) दिये गये। इस समारोह का यूट्यूब एवं फेसबुक पर सीधा प्रसारण किया गया था।

इससे पूर्व अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड ने छत्रपति शिवाजी महाराज, मुंबई हेरिटेज हॉल में आयोजित नई पहल और अत्याधुनिक तकनीकों/उपलब्धियों के बारे में एक प्रदर्शनी का अवलोकन किया। मध्य रेल, पश्चिम रेलवे, दक्षिण मध्य रेलवे, दक्षिण रेलवे, दक्षिण पश्चिम रेलवे, डीएफसीसीआईएल, भारतीय रेल स्टेशन विकास निगम, इंटीग्रल कोच फैक्टरी, मुंबई रेल विकास निगम, नेशनल हाई स्पीड रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, कोंकण रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, रेलवे सुरक्षा बल, केंद्रीय रेल विद्युतीकरण संगठन (कोर) और भारतीय रेल राष्ट्रीय अकादमी ने भी इस प्रदर्शनी में भाग लिया। ■

पुरस्कृत कर्मियों की सूची पेज नं. 76

64वें वार्षिक रेल राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह की झलकियाँ



अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड श्री वी.के. यादव से सिविल इंजीनियरी शील्ड (संयुक्त रूप से) प्राप्त करते हुए उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक, श्री टी. पी. सिंह, पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री ए.के. गुप्ता एवं दक्षिण मध्य रेलवे के प्रमुख मुख्य इंजीनियर श्री के. शिव प्रसाद



अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, श्री वी.के. यादव से सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियरी शील्ड (संयुक्त रूप से) हासिल करते हुए दक्षिण पूर्व रेलवे एवं पूर्व मध्य रेलवे के महाप्रबंधक श्री एल.सी. त्रिवेदी



श्री वी.के. यादव, अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, श्री एल. सी त्रिवेदी, महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे को समग्र दक्षता के लिए गोविंद बल्लभ पंत शील्ड प्रदान करते हुए, साथ में रेलवे बोर्ड के सभी सदस्य



अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड से लेवल क्रॉसिंग और रोड ओवर/अंडर ब्रिज सेफ्टी वर्क्स शील्ड (संयुक्त रूप से) हासिल करते हुए उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक श्री टी.पी. सिंह एवं पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री ए.के. गुप्ता



रनिंग रूम शील्ड आमला रनिंग रूम, नागपुर मंडल को प्रदान की गई। श्री वी.के. यादव, अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड से शील्ड प्राप्त करते हुए श्री ए.के. गुप्ता, महाप्रबंधक एवं श्री सोमेश कुमार, मंडल रेल प्रबंधक, नागपुर



अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड श्री वी.के. यादव से पर्यावरण एवं स्वच्छता शील्ड प्राप्त करते हुए पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक, श्री ए.के. गुप्ता, साथ में हैं पश्चिम रेलवे के प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर श्री अशेष अग्रवाल



अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड से कार्मिक प्रबंधन शील्ड प्राप्त करते हुए दक्षिण मध्य रेलवे के प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी, श्री एन.वी. रमन्ना रेड्डी



अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, श्री वी.के. यादव से बिक्री प्रबंधन शील्ड प्राप्त करते हुए पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक, श्री ए.के. गुप्ता



अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, श्री वी.के. यादव ने सिविल इंजीनियरी निर्माण शील्ड संयुक्त रूप से दक्षिण पश्चिम रेलवे एवं दक्षिण पूर्व रेलवे को प्रदान की



अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड श्री वी.के. यादव ने बिजली इंजीनियरी शील्ड उत्तर पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री टी.पी. सिंह को प्रदान की



अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड श्री वी.के. यादव ने भंडार शील्ड पूर्व मध्य रेलवे और दक्षिण मध्य रेलवे को संयुक्त रूप से प्रदान की



अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड श्री वी.के. यादव से यातायात परिवहन शील्ड प्राप्त करते हुए दक्षिण मध्य रेलवे के प्रमुख मुख्य इंजीनियर श्री के. शिव प्रसाद



पूर्व तट रेलवे की ओर से समग्र स्वास्थ्य सेवा शील्ड तथा लेखा एवं वित्त प्रबंधन शील्ड महाप्रबंधक श्री विद्या भूषण ने प्राप्त की



सुरक्षा शील्ड उत्तर पश्चिम रेलवे की ओर से महाप्रबंधक श्री टी.पी. सिंह एवं प्रमुख मुख्य सुरक्षा आयुक्त श्री एस. मयंक ने प्राप्त की

रेल राज्य मंत्री ने अनूपगढ़-बठिण्डा एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाई

अनूपगढ़-बठिण्डा-अनूपगढ़ खंड में गाड़ी सं. 04782/81 अनूपगढ़-बठिण्डा-अनूपगढ़ स्पेशल एक्सप्रेस रेल सेवा को श्री सुरेश अँगड़ी रेल राज्य मंत्री ने 6 जुलाई को अनूपगढ़ स्टेशन से झण्डी दिखा कर रवाना किया।

रेल राज्य मंत्री ने अपने भाषण में बताया कि विगत कुछ वर्षों में रेलवे पर बहुत से कार्य किए गए, जिसमें नई लाइनें, नई रेल गाड़ियाँ, विद्युतीकरण तथा यात्री सुविधाओं का विस्तार किया गया। हमने सफाई व्यवस्था पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया है तथा रेलकर्मियों को इसके लिए जिम्मेदार बनाया है, साथ ही इसमें आम जनता का भी सहयोग अपेक्षित है। इस अवसर पर उन्होंने स्टेशनों पर वाई-फाई सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए अधिकारियों को निर्देश दिए। रेल संचालन को सफलता से निष्पादित करने के लिए रेलकर्मियों को बधाई दी व कहा कि आने वाले समय में और भी अधिक चुनौतियों का सामना करते हुए पूर्ण मनोयोग से जनता के लिए कार्य करना है। इस अवसर पर संसदीय कार्य राज्य मंत्री एवं भारी उद्योग व सार्वजनिक उद्यम राज्य मंत्री, श्री अर्जुन राम मेघवाल ने 27 साल बाद किसी रेल राज्य मंत्री के अनूपगढ़ में आने



अनूपगढ़-बठिण्डा एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखा कर रवाना करते हुए रेल राज्य मंत्री श्री सुरेश अँगडी

के लिए धन्यवाद दिया। इस अवसर पर रेल राज्य मंत्री के साथ श्री अर्जुन राम मेघवाल, संसदीय कार्य राज्य मंत्री एवं भारी उद्योग व सार्वजनिक उद्यम राज्य मंत्री, श्री निहाल चंद, सांसद, श्रीगंगानगर, श्रीमती संतोष, विधायक, अनूपगढ़, श्री बलबीर लूथरा, विधायक, रायसिंह नगर एवं मंडल रेल प्रबंधक, बीकानेर, श्री संजय कुमार श्रीवास्तव मंच पर उपस्थित रहे। ■

भारतीय रेल का करगिल के बहादुरों को अलग अंदाज में सलाम

भारतीय रेल ने 1999 में करगिल युद्ध में भाग लेने वाले सैनिकों को एक अलग अंदाज में श्रद्धांजलि और सम्मान देने का निर्णय किया है। 20वें करगिल विजय दिवस की स्मृति में 218 रेल डिब्बों को सैनिकों की बहादुरी और बलिदान की कहानी कहने वाले वीरता के रंग में रँगा गया है। चूंकि ये डिब्बे रेलवे के विशाल नेटवर्क के



करगिल विजय दिवस की स्मृति में चलाये गये विशेष रेक को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए रेल राज्य मंत्री श्री सुरेश अँगडी एवं अन्य गणमान्य अतिथिगण

जरिए देश के विभिन्न भागों तक जाएंगे अत: यह देश भक्ति की भावना उत्पन्न करेंगे और सौहार्द और अखंडता का संदेश देंगे। इसी सिलसिले में 15 जुलाई को नई दिल्ली स्टेशन पर एक समारोह का आयोजन किया गया, जहाँ स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी एवं भू-विज्ञान मंत्री डॉ. हर्षवर्धन, रेल राज्य मंत्री, श्री सुरेश अँगडी और सांसद (लोकसभा), श्रीमती मीनाक्षी लेखी द्वारा विनायल रैप की गई एक रेलगाड़ी को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। इस रैक को 14258 नई दिल्ली-वाराणसी काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस में जोड़ा गया। इस अवसर पर श्री अँगडी ने कहा कि भारतीय रेल और भारतीय सेना, दोनों देश के सबसे बड़े विभाग हैं और दोनों ही अपने-अपने तरीके से देश की सेवा कर रहे हैं। करगिल युद्ध के दौरान सशस्त्र बलों द्वारा दिखाए गये पराक्रम और बलिदान के संदेश को ले जाने वाली यह रेलगाड़ी दूर-दराज के गांवों, नगरों और शहरों तक जाएगी तथा शहीदों के प्रति सम्मान और आभार प्रदर्शित करेगी।

इस अवसर पर जी.ओ.सी., दिल्ली क्षेत्र (जीओसी/दिल्ली एरिया) एवीएसएम, एसएम, वीएसएम, लेफ्टिनेंट जनरल असित मिस्त्री, लेफ्टिनेंट जनरल शांतनु दयाल, एवीएसएम, एसएम, वीएसएम, डीजी डीसी-डब्ल्यू, करगिल के शहीदों के परिजन शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा के जुडवां भाई विशाल बत्रा एवं उत्तर रेलवे के महाप्रबन्धक श्री टी.पी. सिंह उपस्थित थे। ■



14 जुलाई, 2019 को रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष, विनोद कुमार यादव ने भुवनेश्वर रेलवे स्टेशन, पूर्व तट रेलवे का निरीक्षण किया

सदस्य, सामग्री प्रबंधन का उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय का दौरा



26 जुलाई को सदस्य सामग्री प्रबंधन रेलवे बोर्ड श्री वी. पी. पाठक ने उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय का दौरा किया। बैठक में प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे श्री पी.एन. पाण्डेय ने बताया कि उत्तर मध्य रेलवे ने सामान की खरीद करने और नीलामी के कार्यों के डिजिटलीकरण के क्षेत्र में विभिन्न पहल की हैं और अधिकांश प्रक्रियाओं के कागज रहित होने से कार्य की गति में वृद्धि और पारदर्शिता आ रही है। डिजिटलीकरण के क्षेत्र में की गई प्रमुख पहल निम्नवत हैं:-

- सामग्री की खरीद करने में नान स्टॉक इंडेंट का प्लेसमेंट, रिक्यूजिशन एवं इश्यू नोट का जनरेशन, इम्प्रेस्ट आइटम का सबमिशन एवं इश्यू करने एवं अर्नेस्ट मनी के रिफंड किये जाने के कार्यों को 100% ऑनलाइन किया जा चुका है।
- इसी क्रम में इंडेंटिंग, टेंडर प्रक्रिया, ई-टेंडरिंग, टेंडर निस्तारण, ईएमडी के रिफंड करने, काउन्टर आफर जारी करने आदि कार्यों का भी पूर्ण रूप से डिजीटलीकरण किया जा चुका है।

बैठक के दौरान एक वेब आधारित ऐप 'North Central Railway Sales Delivery Management System & NCRSDMS' को भी लॉन्च किया गया, इस ऐप के माध्यम से नीलाम की गई स्क्रैप सामग्री का पारदर्शी तरीके से वितरण सुनिश्चित किया जा सकेगा।

सदस्य, सामग्री प्रबंधन ने कहा कि उत्तर मध्य रेलवे ने वित्तीय वर्ष 2018-19 में 25 करोड़ रुपये से अधिक के सामान की खरीद जेम के माध्यम से की है। श्री पाठक ने सामग्री प्रबंधन के क्षेत्र में की गई विभिन्न पहलों पर उत्तर मध्य रेलवे को बधाई दी। उन्होंने जोर देकर कहा कि हमारे लिए संरक्षा सर्वोपरि है और ट्रेन संचालन में संरक्षा को बेहतर बनाने के हमारे सभी प्रयास जमीनी स्तर तक पहुंचने चाहिए। ■

असम में रेल कनेक्टिविटी को प्रोत्साहन

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल की आर्थिक समिति ने असम में पूर्वोत्तर सीमा रेलवे की न्यू बोंगईगांव तथा अगठौरी वाया रंगिया (142.97 किमी) रेल लाइन के दोहरीकरण की मंजूरी दे दी है। इस परियोजना की अनुमानित लागत 2042.51 करोड़ रुपये हैं। यह परियोजना 2022-23 तक पूरी होगी। इसे पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के निर्माण संगठन द्वारा क्रियान्वित किया जाएगा। न्यू बोंगईगांव तथा अगठौरी वाया रंगिया के बीच लाइन क्षमता उपयोग 100 प्रतिशत से अधिक है। इस सेक्शन पर यातायात और बढ़ेगा क्योंकि रंगिया- मरगोंगसेलेक बड़ी लाइन 2015-16 में शुरू की गई है और बोगीबिल पुल नई लाइन हाल में चालू की गई है। वर्तमान नेटवर्क की क्षमता बाधाओं को दूर करने तथा बढ़ते ढुलाई और यात्री यातायात से निपटने के लिए न्यू बोंगईगांव-अगठौरी वाया रंगिया रेल लाइन का दोहरीकरण आवश्यक है। दोहरीकरण से न्यू बोंगाईगांव-अगथोरी वाया रंगिया रेल लाइन का समग्र परिचालन प्रदर्शन में सुधार होगा और काफी हद तक इस सेक्शन में भीड़-भाड़ में कमी आएगी। परियोजना से पूर्वोत्तर क्षेत्र में बढ़ता यातायात सहज होगा तथा प्रस्तावित डबल लाइन सेक्शन से आवाजाही में समय की बचत होगी। इस परियोजना से



निर्माण कार्य के दौरान लगभग 34.31 लाख मानव दिवस के लिए रोजगार सृजन होगा। बोंगईगांव-अगठौरी वाया रंगिया (142.97 किमी) लाइन की दोहरीकरण परियोजना बोंगईगांव, बक्सा, बारपेटा, नलबाड़ी तथा कामरूप जिलों से गुजरेगी। ■

इलाहाबाद और पं. दीन दयाल उपाध्याय जं. के बीच रेल संपर्क को बढ़ावा



केंद्र सरकार ने सघन रेल यातायात वाले इलाहाबाद और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन रेलमार्ग पर 150 किमी लंबी तीसरी रेललाइन के निर्माण को मंजूरी दे दी है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल की आर्थिक मामलों की समिति ने इसका अनुमोदन किया। कुल 2,649.44 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत वाली यह परियोजना 2023-24 तक पूरी हो जाएगी। परियोजना का क्रियान्वयन उत्तर मध्य रेलवे के निर्माण संगठन द्वारा किया जाएगा।

यह परियोजना भविष्य में बढ़ने वाले रेल यातायात के साथ सहजता से निपटने तथा इसके लिए आवश्यक क्षमताओं की कमी को दूर करने में मददगार होगी। वर्तमान में इस रेलमार्ग पर यात्री गाड़ियों और मालगाड़ियों पर क्षमता से अधिक दबाव है, जिसके कारण कई बार गाड़ियों की आवाजाही में देरी होती है। प्रस्तावित परियोजना रेलवे की यात्री और माल परिवहन क्षमता को बढ़ाने, रेलगाड़ियों के परिचालन में होने वाली देरी को दूर करने तथा भविष्य में बढ़ते रेल यातायात से निपटने में सहायक होगी। इलाहाबाद और पं. दीन दयाल उपाध्याय जं. के बीच तीसरी रेल लाइन बनने से इस रेलमार्ग पर नैनी के समीप छिवकी में रेलगाड़ियों के जमावड़े को कम किया जा सकेगा, जिससे राजधानी दिल्ली को जोड़ने वाले प्रमुख रेलमार्ग पर यात्री और मालगाड़ियों का समय पर परिचालन किया जा सकेगा। परियोजना की निर्माण अवधि में 36 लाख कार्य दिवस के प्रत्यक्ष रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। ■

उत्तर प्रदेश में रेल संपर्क को प्रोत्साहन

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने उत्तर प्रदेश में सहजनवा और दोहरीघाट के बीच (81.17 किमी) लंबी नई रेल लाइन के निर्माण को मंजूरी दे दी है। इस परियोजना के निर्माण पर कुल 1,319.75 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत आएगी। परियोजना का काम 2023-24 तक पूरा हो जाएगा। परियोजना का क्रियान्वयन उत्तर पूर्वी रेलवे के निर्माण संगठन द्वारा किया जाएगा।

परियोजना ऐसी जगह शुरू की गई है जो सघन आबादी, आर्थिक रूप से पिछड़े और सड़क संपर्क सुविधाओं के अभाव वाला इलाका है। प्रस्तावित परियोजना से स्थानीय लोगों को रेल संपर्क सुविधा मिलने के साथ ही लघु उद्योगों के विकास में भी मदद मिलेगी। परियोजना की निर्माण अवधि के दौरान 19.48 लाख कार्य दिवस के लिए प्रत्यक्ष रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होंगे।

सहजनवा से दोहरीघाट के बीच बनने वाली नई रेल लाइन का ज्यादातर हिस्सा गोरखपुर जिले और बाकी का छोटा हिस्सा उत्तर प्रदेश के मऊ जिले में पड़ता है। इंदारा-दोहरीघाट के बीच रेललाइन के दोहरीकरण को पहले ही मंजूरी दी जा चुकी है और अब दोहरीघाट-सहजनवा के बीच नई रेललाइन बनने से गोरखपुर से अलग एक वैकल्पिक मार्ग उपलब्ध होगा।



नई रेललाइन के बनने से अब छपरा से लखनऊ के लिए गोरखपुर होकर जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। यह रेल परियोजना स्थानीय पिछड़े क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए बेहद जरूरी थी। ■

जापानी प्रतिनिधिमंडल द्वारा ट्रैक अनुरक्षण प्रणाली का अध्ययन



पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में 18 जुलाई, 2019 को जापान की मेसर्स सेंकेन कोग्या कॉर्पोरेशन लिमिटेड एवं भारतीय पोर्ट रेल एवं रोपवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड की संयुक्त बैठक का आयोजन किया गया। जापानी प्रतिनिधि मंडल ने अहमदाबाद मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में मंडल अधिकारियों के साथ भारतीय रेल पर ट्रैक मेंटेनेंस से सम्बंधित प्रस्तुतीकरण देखा तथा साबरमती पी-वे डिपो खोडियार यार्ड स्थित ट्रैक मेंटेनेंस साइट का भी अवलोकन किया। उल्लेखनीय है कि मुंबई-अहमदाबाद के बीच हाई स्पीड रेल परियोजना का कार्य इन दिनों प्रगति पर है।

यह बैठक मुंबई तथा अहमदाबाद के बीच प्रस्तावित हाई स्पीड रेल परियोजना से जुड़े विभिन्न पहलुओं को समझने, विशेषत: भारतीय रेल पर ट्रैक अनुरक्षण की कार्य प्रणाली के बारे में जानकारी लेने हेतु आयोजित की गई थी। अहमदाबाद मंडल के अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री फतेहसिंह मीणा एवं श्री परिमल शिंदे ने जापानी प्रतिनिधिमंडल के आगंतुकों का स्वागत किया तथा उन्हें मंडल पर किये जा रहे ट्रैक मेंटेनेंस की प्रणाली से अवगत कराया। तीन सदस्यीय जापानी प्रतिनिधिमंडल के दौरे के दौरान उनके साथ भारतीय पोर्ट रेल एवं रोपवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड के मुख्य महाप्रबंधक श्री विनोद कुमार, महाप्रबंधक (सिगनल एवं आई.टी.) जेड एच सिद्धिकी तथा एजीएम प्रोजेक्ट, अहमदाबाद श्री ए.के. तिवारी एवं अहमदाबाद मंडल के इंजीनियरिंग विभाग के वरिष्ठ अधिकारी श्री विकास गढ़वाल और श्री रमेश तोलानी भी उपस्थित थे। ■



संसद में भारतीय रेल

संसद सत्र के दौरान सांसदों द्वारा भारतीय रेल के सम्बंध में पूछे गये विभिन्न प्रश्नों के उत्तर में रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल ने निम्नलिखित जानकारियाँ दीं

रेलवे में पर्यावरण अनुकूल प्रौद्योगिकियों का उपयोग

भारतीय रेल प्रतिदिन लगभग 56 मिलियन यूनिट ऊर्जा का उपयोग करती है। भारतीय रेल पर्यावरण अनुकूल प्रौद्योगिकियों के उपयोग पर जोर देने के लिए निम्नलिखित कदम उठा रही है:-

- **रेलपथों का विद्युतीकरण** - परिवहन के हरित मोड के रूप में भारतीय रेल ने मिशन मोड में अपनी बड़ी लाइन के रेल मार्गों को 100% विद्युतीकृत करने का निर्णय लिया है।
- **अक्षय ऊर्जा का उपयोग** - भारतीय रेल ने लगभग 1000 मेगावॉट (एमडब्ल्यू) सौर ऊर्जा और 200 मेगावॉट पवन ऊर्जा के स्रोत की योजना बनाई है।
- कार्बन फुटप्रिंट्स को कम करने के लिए विभिन्न ऊर्जा दक्षता उपाय किए गए हैं जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं:-

i) इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव, मेनलाइन इलेक्ट्रिकल मल्टीपल यूनिट्स (मेमू), इलेक्ट्रिकल मल्टीपल यूनिट्स (ईएमयू) के लिए पुनर्योजित सुविधाओं के साथ ऊर्जा कुशल 3-फेज प्रौद्योगिकी का उपयोग, बेहतर ऊर्जा दक्षता के लिए ट्रेन सेट।

ii) पॉवर कारों में डीजल ईंधन की खपत को कम करने के लिए गाड़ियों में हेड ऑन जनरेशन (एचओजी) प्रणाली को शुरू करना।

iii) बिजली की खपत में कमी के लिए रेलवे स्टेशनों, सेवा भवनों, आवासीय क्वार्टरों और कोचों सहित सभी रेलवे प्रतिष्ठानों में ऊर्जा कुशल लाइट एमिटिंग डायोड (एलईडी) प्रकाश का प्रावधान।

iv) **खपत प्वाइंटों पर नियमित ऊर्जा ऑडिट** - छह (6) उत्पादन इकाइयों (पीयू) और चार (4) कारखानों में ऊर्जा दक्षता अध्ययन किए गए थे और 15% तक ऊर्जा दक्षता सुधार हासिल किया गया था। इसमें महत्त्वपूर्ण ऊर्जा बचत की पहचान, एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, संभावित प्रौद्योगिकी आपूर्तिकर्ताओं की पहचान, जो इकाइयों को ऊर्जा की बचत करने वाली प्रौद्योगिकियों की पेशकश कर सकते हैं आदि जैसी गतिविधियाँ शामिल थीं।

v) 5 स्टार रेटेड बिजली के उपकरणों के उपयोग पर जोर।

vi) कॉस्टिंग के उपयोग के लिए लोको पायलटों का नियमित प्रशिक्षण, पुनर्योजित ब्रेकिंग सुविधाओं और बिजली रेल इंजनों का ब्लोअर बंद करना, यदि यार्ड में 50 मिनट से अधिक की रूकौनी होती है। इसी प्रकार, यदि संभावित रूकौनी अधिक होती है तब डीजल लोको को भी बंद कर दिया जाता है और इसके परिणामस्वरूप ग्रीन हाउस गैसों (जीएचजी) के उत्सर्जन में कमी आती है।

vii) खाली मालगाड़ियों को ले जा रही मल्टी यूनिट (एमयू) के पीछे जुड़े लोकोमोटिव को ऊर्जा बचाने के लिए बंद कर दिया जाता है।

viii) सभी इलेक्ट्रिक रेल इंजनों में दिए गए माइक्रोप्रोसेसर आधारित ऊर्जा मीटरों के माध्यम से विद्युत रेल इंजनों की ऊर्जा खपत की नियमित रूप से निगरानी की जाती है और औसत ऊर्जा खपत के आधार पर बेंचमार्किंग की जाती है।

ix) डीजल लोकोमोटिव चालकों की यात्रा राशन के संबंध में ईंधन की खपत की निगरानी करना।

x) लोकोमोटिव के निष्क्रिय होने पर ईंधन की खपत को कम करने के लिए 986 डीजल रेल इंजनों में सहायक विद्युत इकाई (एपीयू) मुहैया कराई गई है।

xi) रिमोट मॉनिटरिंग के जरिए डीजल रेल इंजनों की निष्क्रियता की निगरानी और लोकोमोटिव तथा गाड़ी प्रबंधन (जिसे रैमलोट कहा जाता है) की जा रही है। इस समय 2,606 लोकोमोटिव रैमलोट से लैस हैं।

xii) कर्षण ईंधन में 5% बायो-डीजल का उपयोग - एचएसडी को बचाने के लिए 5% की सीमा तक एचएसडी के साथ बायो-डीजल का सम्मिश्रण।

xiii) डेमू में 20% कंप्रेस्डस नेचुरल गैस (सीएनजी) प्रतिस्थापन - सीएनजी के उपयोग से तरल ईंधन की तुलना में कम जीएचजी का उत्सर्जन होता है। भारतीय रेल को दुनिया की एकमात्र रेलवे होने का गौरव प्राप्त है जो यात्री परिवहन के लिए सीएनजी से चलने वाली पॉवर कारों का उपयोग करती है। भारतीय रेल ने डेमू ड्राइविंग पॉवर कार (डीपीसी) को सीएनजी के साथ ड्यूअल फ्यूल मोड में बदलना शुरू कर दिया है। 25 अदद डीपीसी को बदल दिया गया है और वे परिचालन में हैं। ■

रेलवे स्टेशनों का आधुनिकीकरण

भारतीय रेल में रेलवे स्टेशनों का आधुनिकीकरण/अपग्रेडेशन एक सतत् प्रक्रिया है। यह कार्य समय-समय पर विभिन्न आधुनिकीकरण योजनाओं, जैसे 'मॉडल स्टेशन योजना', 'आधुनिक स्टेशन योजना' और 'आदर्श स्टेशन योजना' के तहत किया गया है। 'मॉडल स्टेशन योजना' (जून, 1999 से नवंबर, 2008) और 'आधुनिक स्टेशन योजना' (2006-07 और 2007-08) को बंद कर दिया गया है।

वर्तमान में स्टेशनों का अपग्रेडेशन आदर्श स्टेशन योजना के तहत् किया जाता है। 'आदर्श स्टेशन योजना' के तहत् रेलवे स्टेशनों का चयन, सुविधाओं के अपग्रेडेशन के लिए चिन्हित आवश्यकता पर आधारित होता है। 'आदर्श स्टेशन योजना' के तहत् विकास के लिए 1253 स्टेशनों की पहचान की गई है, जिनमें से अब तक 1103 रेलवे स्टेशनों को विकसित कर दिया गया है और शेष स्टेशनों को 2019-20 तक विकसित करने की योजना है।

इसके अलावा, सभी स्टेशनों पर बेहतर सुविधाएँ प्रदान करने के लिए भारतीय रेल द्वारा अन्य नीतिगत पहल भी की जा रही हैं। सॉफ्ट अपग्रेडेशन के लिए 68 स्टेशनों की पहचान की गई है और वर्ष 2018-19 में सभी 68 स्टेशनों को अपग्रेड किया जा चुका है:-

लोनावाला, बुरहानपुर, शोलापुर, इगतपुरी, वर्धा, पुणे, कटक, संभलपुर, विशाखापट्टनम, पटना, बरकाकाना, पं. दीन दयाल उपाध्याय जं., बापुधाम मोतिहारी, हाजीपुर, पाटलिपुत्र, सोनपुर, आसनसोल, हावड़ा, सियालदह, इलाहाबाद, झांसी, मथुरा, वाराणसी सिटी, इज्जतनगर, गोरखपुर, दार्जिलिंग, गुवाहाटी, न्यू तिनसुकिया, अलीपुरद्वार, रंगिया, अंबाला, दिल्ली मेन, शिमला, देहरादून, हरिद्वार, जयपुर, उदयपुर, बीकानेर, जोधपुर, विजयावाड़ा, गुंटूर, गुंतकल, कुर्नूल सिटी, वारंगल, बिलासपुर, रायपुर, राजनांदगांव, झारसुगुड़ा, रांची, आद्रा, मदुरै, कोट्टायम, चेन्नै एग्मोर, पालघाट, तिरुचिरापल्ली, सेलम, यशवंतपुर, मैसूर, धारवाड़, जबलपुर, भोपाल, इटारसी, अहमदाबाद, राजकोट, वडोदरा, रतलाम, भावनगर सिटी और वलसाड।

हाल ही में, भारतीय रेल स्टेशन विकास निगम लिमिटेड (आईआरएसडीसी) के माध्यम से स्टेशन पुनर्विकास कार्यक्रम के तहत् स्टेशनों के विकास के लिए 'जहाँ है जैसा है' के आधार पर एक पृथक् नीति तैयार की गई है। सरकार ने नोडल एजेंसी के रूप में, आईआरएसडीसी द्वारा सरलीकृत प्रक्रियाओं के माध्यम से और लंबी अवधि के पट्टे से रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास के लिए रेलवे के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। तद्नुसार, भारतीय रेल के सभी स्टेशनों को तकनीकी-आर्थिक व्यवहार्यता अध्ययन के लिए आईआरएसडीसी और अन्य सरकारी एजेंसियों को सौंप दिया गया है। व्यवहार्यता अध्ययन के परिणाम के आधार पर स्टेशनों का चरणों में पुनर्विकास किए जाने की योजना है, विशेष रूप से प्रमुख शहरों, तीर्थस्थलों और महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थलों में स्थित स्टेशन। स्टेशनों के आसपास खाली भूमि/एयर स्पेस को व्यावसायिक रूप से विकसित करके उससे लाभ उठाकर स्टेशनों के पुनर्विकास की योजना बनाई गई है। इस समय गांधीनगर (गुजरात) और हबीबगंज (मध्य प्रदेश) स्टेशनों पर पुनर्विकास का कार्य चल रहा है। गोमतीनगर, चारबाग (उत्तर प्रदेश) और पुदुचेरी (केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी) स्टेशनों के लिए पुनर्विकास के लिए ठेके प्रदान कर दिए गए हैं।

यात्री सुविधाओं के निर्माण कार्य का व्यय योजना शीर्ष 'पैसेंजर सुविधाओं' के तहत् वित्त पोषित है। वित्तीय वर्ष 2018-19 के दौरान भारतीय रेल में योजना शीर्ष 'पैसेंजर सुविधाओं' के तहत् आवंटन और व्यय क्रमशः 1,657.86 करोड़ रुपये और 1,585.89 करोड़ रुपये था।

देश के सभी रेलवे स्टेशनों का निर्माण कार्य और आधुनिकीकरण आवश्यकता पर आधारित एक सतत्द्यप्रक्रिया है जो वाणिज्यिक औचित्यिक, परिचालनिक आवश्यकता, तकनीकी व्यवहार्यता और संसाधनों की उपलब्धता के अध्यधीन है। ■

मदुरई-वांची, मनियाची-थुथुकुडी रेलमार्ग का दोहरीकरण और विद्युतीकरण

मदुरै-वांची, मनियाची-तूतीकोरिन (थुथुकुडी) के विद्युतीकरण सहित दोहरीकरण (160 किमी) कार्य को अपेक्षित अनुमोदनों के अध्यधीन बजट 2015-16 में शामिल किया गया था। परियोजना की स्वीकृति और 1,182.31 करोड़ रुपये का विस्तृत अनुमान अगस्त, 2017 में प्राप्त हुआ है। मार्च, 2019 तक 341.83 करोड़ रुपये का व्यय किया जा चुका है और वर्ष 2019-20 के लिए 170 करोड़ रुपये का परिव्यय प्रदान किया गया है।

इस परियोजना पर पूरे क्षेत्र की मिट्टी संबंधी कार्य, पुल संबंधी कार्य, गिट्टी की आपूर्ति आदि शुरू कर दिए गए हैं। 2019-20 के दौरान, कदंबूर-तट्टापरई (30 किमी) खंड को चालू करने का लक्ष्य रखा गया है और मदुरै-कल्लीगुडी (30.92 किमी) एवं कल्लीगुडी-सतूर (38.26 किमी) खंडों को 2010-21 के दौरान तथा परियोजना के शेष भाग को 2021-22 तक चालू करने की योजना है। ■

सार्वजनिक निजी भागीदारी मोड के अंतर्गत उत्तर-पूर्वी राज्यों को जोड़ने के कार्य का निष्पादन

सरकार ने सिक्किम, जहाँ पहले चरण में नई लाइन का कार्य रंगपो तक स्वीकृत किया गया है, को छोड़कर पूर्वोत्तर राज्यों की सभी राजधानियों को जोड़ने की योजना बनाई है। असम, अरुणाचल प्रदेश एवं त्रिपुरा राज्यों की राजधानियों को बड़ी लाइन रेल नेटवर्क से जोड़ दिया गया है।

केंद्र सरकार द्वारा पिछले पांच वर्षों के दौरान अवसंरचना और संरक्षा परियोजनाओं को तेजी से निष्पादित करने पर अधिक जोर दिया गया है तथा अवसंरचना संबंधी परियोजनाओं के वित्त पोषण में काफी वृद्धि की गई है। नई लाइन/आमान परिवर्तन/दोहरीकरण अवसंरचना संबंधी परियोजनाओं में 2009-14 के दौरान प्रतिवर्ष 11,527 करोड़ रुपये की तुलना में 2014-19 के दौरान औसत वार्षिक व्यय 25,894 करोड़ रुपये था, जो 2009-14 के दौरान किए गए व्यय से लगभग 125% अधिक है। पूर्वोत्तर राज्यों के लिए प्रतिवर्ष औसत आबंटन 2009-14 से प्रति वर्ष 2,121 करोड़ रुपये था। बहरहाल, 2014-19 के दौरान इस क्षेत्र के लिए यह 161% बढ़ कर प्रतिवर्ष 5,531 करोड़ रुपये हो गया है।

अरुणाचल प्रदेश में नाहरलगुन (ईटानगर की उपनगरीय सिटी) तक फरवरी, 2015 में एक बड़ी लाइन शुरू की गई थी और 20 फरवरी, 2015 को प्रधानमंत्री जी द्वारा नाहरलगुन (ईटानगर) से नई दिल्ली तक पहली बड़ी लाइन की ट्रेन को हरी झंड़ी दिखाई गई थी। ब्रह्मपुत्र नदी पर बोगीबील पुल के लंबे समय से शेष बचे कार्य को 2018 में पूरा किया गया था, जिसके परिणामस्वरूप डिब्रूगढ़ से नाहरलगुन (ईटानगर) तक की यात्रा दूरी में 705 किमी की (गुवाहाटी के रास्ते) और कमी आई है।

रेल राज्य मंत्री ने 13 जनवरी, 2016 को त्रिपुरा (अगरतला) राज्य की बड़ी लाइन की पहली ट्रायल रेलगाड़ी की अगवानी की थी और 31 जुलाई, 2016 को दिल्ली के लिए पहली बड़ी लाइन की यात्री गाड़ी (लंबी दूरी) का शुभारम्भ किया था।

कुछ राज्यों में, मुख्यत: भूमि अधिग्रहण में विलंब और कानून एवं व्यवस्था संबंधी समस्याओं के कारण राजधानियों तक रेल संपर्क के लिए नई रेल लाइन परियोजनाओं की प्रगति बाधित हुई है। राजधानी से जोड़ने की ये सभी परियोजनाएँ हिमालय के पहाड़ी क्षेत्र में होने के कारण इनमें बड़ी संख्या में सुरंगें और बड़े पुल बनाने का कार्य शामिल है, जिनमें बहुत ही चुनौतीपूर्ण भौगोलिक स्थितियों में बहुत ही ऊंचे पुल भी हैं।

पूर्वोत्तर राज्यों की शेष राजधानियों अर्थात् मेघालय (शिलांग) मणिपुर (इम्फाल), नागालैंड (कोहिमा), मिजोरम (आइजावाल) और सिक्किम (गंगटोक) को जोड़ने के लिए नई बड़ी लाइनों के कार्य शुरू कर दिए गए हैं। इन परियोजनाओं की मौजूदा स्थिति सहित इनका ब्यौरा निम्नानुसार है:-

मणिपुर : मणिपुर राज्य में जिरीबाम से इम्फाल (110.62 किमी) तक बड़ी लाइन की परियोजना 2003-04 में स्वीकृत की गई थी। परियोजना की नवीनतम प्रत्याशित लागत 13,809 करोड़ रुपये है और 31 मार्च, 2019 तक परियोजना पर 6,969.49 करोड़ रुपये खर्च हो चुके हैं।

जिरीबाम से वांगाइचुंगपो (12 किमी) का खंड मार्च, 2017 में शुरू किया गया था और वांगाइचुंगपो-तुपुल-इम्फाल (98.62 किमी) की पूरी लंबाई में कार्य शुरू कर दिया गया है। परियोजना के 102.62 किमी में भूमि अधिग्रहण का कार्य पूरा हो गया है और 8 किमी लंबे शेष भूमि अधिग्रहण का कार्य भी शुरू हो चुका है। रेलवे को पूरी भूमि सौंपे जाने के बाद पूरा करने का लक्ष्य 3 वर्ष है।

मिजोरम : मिजोरम में भैराबी से सारंग (51.38 किमी) (आइजाल का उपनगरीय शहर, मिजोरम की राजधानी) तक बड़ी आमान लाइन संपर्कता की परियोजना वर्ष 2008-09 में स्वीकृत की गई थी। परियोजना की नवीनतम प्रत्याशित लागत 4,968 करोड़ रुपये है और भूमि 2014-15 में उपलब्ध हो सकी तथा 2015-16 से कार्य में गति आई है एवं 31 मार्च, 2019 तक परियोजना पर 1,958.09 करोड़ रुपये खर्च हुए हैं।

इस परियोजना की समग्र लंबाई पर निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है और 80% सुरंग निर्माण का कार्य पूरा हो गया है तथा 6 बड़े पुलों का कार्य शुरू कर दिया गया है। परियोजना को पूरा करने के लिए शेष 53.90 हैक्टेयर भूमि के अधिग्रहण का कार्य शुरू कर दिया गया है। रेलवे को समग्र भूमि सौंपने के बाद संपूर्ण परियोजना को पूरा करने का लक्ष्य 2 वर्ष है।

नागालैंड : दीमापुर (धनसारी) से बड़ी आमान लाइन संपर्कता परियोजना- नागालैंड में जुब्जा (कोहिमा) (82.50 किमी) (कोहिमा का उपनगरीय शहर, नागालैंड की राजधानी) को वर्ष 2006-07 में स्वीकृत किया गया था। परियोजना की नवीनतम प्रत्याशित लागत 3,000 करोड़ रुपये है और सितम्बर, 2018 से कार्य में गति आई है तथा 31 मार्च, 2019 तक परियोजना पर 626.67 करोड़ रुपये का व्यय किया गया है।

इस परियोजना की समग्र लंबाई पर निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है। परियोजना को पूरा करने के लिए शेष 6 किमी लंबी भूमि के अधिग्रहण का कार्य शुरू कर दिया गया है। रेलवे को समग्र भूमि सौंपने के बाद संपूर्ण परियोजना को पूरा करने का लक्ष्य तिथि 3 वर्ष है।

मेघालय : मेघालय की राजधानी को संपर्कता मुहैया कराने के लिए बड़ी आमान की दो परियोजनाओं का कार्य शुरू किया गया है।

- **तेतेलिया से नई बड़ी आमान लाइन** – मेघालय में बर्नीहाट (21.50 किमी) को वर्ष 2006-07 में स्वीकृत किया गया था। परियोजना की नवीनतम प्रत्याशित लागत 1,532 करोड़ रुपये है और 2014-15 से कार्य में गति आई है, 10 किमी लंबी तेतेलिया से कामलाजारी तक असम राज्य में पड़ने वाली परियोजना को अक्टूबर, 2018 में पूरा कर लिया गया है तथा 31 मार्च, 2019 तक 515.82 करोड़ रुपये का व्यय किया गया है। कुछ संगठन आपत्ति कर रहे हैं कि रेल संपर्कता से बाहरी व्यक्तियों का प्रवेश बढ़ सकता है और इस कारण परियोजना को कुछ स्थानीय प्रतिरोध का सामना करना पड़ा है। अब मामले का शीघ्र समाधान करने की कार्रवाई की गई है। कार्य को पूरा करने की लक्षित तिथि निर्धारित नहीं है, रेलवे को समग्र भूमि वास्तविक रूप से सौंपने के बाद ही इस पर निर्णय लिया जाएगा।
- बर्नीहाट से शिलांग (108.40 किमी) तक नई बड़ी आमान लाइन को वर्ष 2010-11 में स्वीकृत किया गया था। परियोजना की नवीनतम प्रत्याशित लागत 6,000 करोड़ रुपये है और 31 मार्च, 2019 तक परियोजना पर 252.68 करोड़ रुपये खर्च हो गए हैं। कार्य को पूरा करने की लक्षित तिथि निर्धारित नहीं है, रेलवे को समग्र भूमि वास्तविक रूप से सौंपने के बाद ही इस पर निर्णय लिया जाएगा।

सिक्किम: सिवोक से रंगपो (44.39 किमी) तक बड़ी आमान संपर्कता की परियोजना को वर्ष 2008-09 में स्वीकृत किया गया था। परियोजना की नवीनतम प्रत्याशित लागत 4,085.69 करोड़ रुपये है और 31 मार्च, 2019 तक परियोजना पर 554.46 करोड़ रुपये खर्च हो चुके हैं।

फिर भी, परियोजना लंबे समय से अटकी हुई है क्योंकि पश्चिम बंगाल सरकार ने रेलवे को बाधा रहित भूमि (वृक्षों के कटने के बाद 77.78 हैक्टेयर वन भूमि) नहीं दी है, जिसके कारण समय पर ठेके को अंतिम रूप देना कठिन हो रहा है। इस मामले को पश्चिम बंगाल सरकार के साथ लगातार उठाया जा रहा है। परियोजना को पूरा करने की लक्षित तिथि रेलवे को समग्र भूमि वास्तविक रूप से सौंपने के बाद 3 वर्ष है। ■

अनधिकृत रूप से प्रवेश के कारण होने वाली मौतों को रोकने के लिए कदम

अनधिकृत रूप से प्रवेश सहित अप्रिय घटनाओं के कारण होने वाली मौतों के कारणों का अध्ययन करने तथा उन्हें कम करने के लिए विशिष्ट उपाय सुझाने के लिए रेलवे ने सभी क्षेत्रीय रेलों में संरक्षा, सुरक्षा, सिग्नल और इंजीनियरी विभागों के अधिकारियों की एक अंतर-विभागीय 'संयुक्त समिति' गठित की है। तदनुसार, मौतों को कम करने के लिए अवसंरचना को सुधारने और उसे सृजित करने के लिए निवारक और सुधारात्मक उपाय किए जाते हैं।

इसके अलावा, रेलपथ पर अप्रिय घटनाओं के कारण होने वाली मौतों की रोकथाम करने के लिए रेलवे द्वारा निम्नलिखित सुधारात्मक उपाय भी किए जा रहे हैं:-

- रेलवे ऐसे स्थानों पर एफओबी का निर्माण कर रहा है जहाँ यात्रियों को रेलपथ पार करना आवश्यक होता है।
- रेलवे स्टेशनों पर जन उद्घोषणा प्रणाली के माध्यम से नियमित घोषणाएँ की जाती हैं, जिसमें ऊपरी पैदल पुलों (एफओबी) का उपयोग करने और रेल पटरियों को पार करने से बचने के लिए यात्रियों को आगाह किया जाता है।
- रेल पटरियों को पार करने, पायदान पर/छत पर यात्रा करने, चलती हुई गाड़ियों में चढ़ने/उतरने आदि के कारण होने वाले नुकसान के बारे में यात्रियों को संवेदनशील बनाने के लिए रेलवे द्वारा विभिन्न जागरूकता अभियान चलाए जाते हैं।
- अनधिकृत प्रवेश, गाड़ियों के फुट-बोर्ड, पायदान, छत के ऊपर यात्रा करने, चलती हुई गाड़ियों में चढ़ने/उतरने से बचने के लिए नियमित अभियान चलाए जाते हैं और पकड़े गए व्यक्तियों पर रेल अधिनियम, 1989 के संगत प्रावधानों के तहत मुकदमा चलाया जाता है।
- अनधिकृत रूप से प्रवेश हेतु भेद्य स्थानों पर रेलवे सुरक्षा बल के कर्मियों को तैनात किया जाता है।
- पहचान किए गए स्थानों, अनधिकृत रूप से प्रवेश के भेद्य स्थानों पर चारदीवारी/बाड़ लगाना।
- यात्रियों की जागरूकता के लिए संदिग्ध स्थानों पर चेतावनी वाले साइन बोर्ड लगाए जाते हैं।
- रेल पटरियों सहित रेलवे परिसर में अनधिकृत रूप से प्रवेश करना रेल अधिनियम 1989 की धारा 147 के तहत एक दंडनीय अपराध है। मौजूदा वर्ष के दौरान मई, 2019 तक अनधिकृत प्रवेश के लिए कुल 60,740 व्यक्तियों के विरुद्ध मुकदमा चलाया गया है।

रेलपथों पर मवेशियों को कुचले जाने से बचाने और अप्राधिकृत आवागमन को रोकने के लिए रेल मंत्रालय द्वारा संवेदनशील स्थलों और बड़े रेलवे स्टेशनों के पहुंच मार्गों पर चारदीवारी का निर्माण करने/बाड़ लगाने की योजना बनाई गई है। वित्त वर्ष 2018-19 के दौरान, भारतीय रेल पर रेलपथ की सुरक्षा, अतिक्रमण रोकने और रेलपथ की संरक्षा में सुधार करने के लिए निर्धारित संवेदनशील स्थलों और उनके पहुंच मार्गों पर चारदीवारी की व्यवस्था करने के लिए रेल मंत्रालय द्वारा 3,150 करोड़ रुपये की लागत वाले निर्माण कार्य स्वीकृत किए गए हैं। ■

ग्रीष्मकालीन विशेष रेलगाड़ियाँ

भारतीय रेल राज्य-वार आधार पर गाड़ियों का संचालन नहीं करती हैं, क्योंकि रेल नेटवर्क कई राज्यों की सीमाओं से होकर गुजरता है। बहरहाल, व्यस्त अवधि में विशेष आयोजनों और त्यौहारों के दौरान यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को कम करने के लिए, भारतीय रेल, यातायात स्वरूप, परिचालनिक व्यवहार्यता और संसाधनों की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए दिल्ली क्षेत्र सहित अन्य क्षेत्रों से विशेष गाड़ियों का संचालन करती है। यह एक सतत् प्रक्रिया है। अप्रैल और मई, 2019 की अवधि के दौरान भारतीय रेल ने विशेष गाड़ियों के 6,544 फेरे संचालित किए हैं।

वर्तमान में, सवारी डिब्बों के लिए निवेश के कारण उच्च परिचालन लागत, एक स्थान से दूसरे स्थान तक कतिपय रेकों/इंजनों के खाली चालन, अतिरिक्त गार्ड/लोको पायलटों की व्यवस्था, रेक के संधारण/अनुरक्षण की विशेष व्यवस्था और कतिपय मामलों में, एक समान मांग स्वरूप इत्यादि के मद्देनजर विशेष गाड़ियों में कोई रियायत नहीं है। बहरहाल, कतिपय गाड़ियों में प्रतिबंध को छोड़कर, 58 वर्ष से अधिक अवधि की आयु वाली बुजुर्ग महिलाएँ नियमित गाड़ियों में मूल किराए पर 50% की छूट के लिए पात्र हैं इसके अलावा, विद्यार्थी भी मूल किराए पर 25% से 100% तक की छूट प्राप्त करने के लिए पात्र होते हैं, जो यात्रा की किस्म, विद्यार्थी की श्रेणी आदि पर निर्भर करता है। साफ-सफाई एक सतत् प्रक्रिया है और सवारी डिब्बों को साफ रखने और यात्रियों को साफ बेड रोल प्रदान करने के लिए हरसंभव प्रयास किया जाता है।

गाड़ियों के डिब्बों की दोनों छोरों पर सफाई की जाती है, जिसमें पेशेवर एजेंसियों के माध्यम से यंत्रीकृत सफाई शामिल है। पानी भरने की व्यवस्था प्रस्थान स्टेशन और मार्ग में पड़ने वाले नामित स्टेशनों पर की जाती है। चिह्नित गाड़ियों में मार्ग में उनके निर्धारित ठहरावों के दौरान नामित क्लीन ट्रेन स्टेशनों पर शौचालयों की सफाई सहित सीमित यंत्रीकृत सफाई पर ध्यान दिया जाता है।

बेड लिनेन की धुलाई की गुणवत्ता में सुधार के लिए भारतीय रेल में 61 स्थानों पर यंत्रीकृत लॉण्ड्रीज स्थापित की गई हैं। सवारी डिब्बों और बेड रोल की सफाई सुनिश्चित करने के लिए रेल अधिकारियों द्वारा नियमित और औचक जांचें की जाती हैं।

समर स्पेशल के रूप में चलने वाली गाड़ियों में खान-पान सेवा (भोजन और पेयजल) का प्रावधान मार्ग में पड़ने वाले स्टेशनों पर स्थैतिक खानपान इकाइयों के माध्यम से किया जाता है। इनमें खानपान स्टॉल, फूड प्लाजा, फास्ट फूड यूनिट्स आदि शामिल हैं। इसके अलावा, वॉटर वेंडिंग मशीनें भी कुछ स्टेशनों पर स्थापित कर दी गई हैं। यात्री इंडियन रेलवे केटरिंग एंड टूरिज्म कॉर्पोरेशन (आईआरसीटीसी) द्वारा दी जाने वाली ई-केटरिंग सेवाओं का भी लाभ उठा सकते हैं। भारतीय रेलों में भोजन की गुणवत्ता की जांच के लिए रेलवे अधिकारियों द्वारा समय-समय पर नियमित और औचक निरीक्षण किए जाते हैं। ■

रेलवे स्टेशनों का स्तरोन्नयन

रेल मंत्रालय विभिन्न एजेंसियों के माध्यम से रेलवे स्टेशनों की तकनीकी आर्थिक व्यवहार्यता अध्ययन करवा रहा है। इन व्यवहार्यता अध्ययनों के परिणामों के आधार पर, विशेषकर बड़े शहरों, तीर्थ स्थलों और महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थलों पर स्थित स्टेशनों का चरणों में पुनर्विकास करने की योजना बनाई जाती है। स्टेशनों पर और उसके आस-पास की भूमि और वायु क्षेत्र के वाणिज्यिक विकास का उपयोग करके स्टेशन पुनर्विकास योजना की लागत पूरी की जाएगी। इस समय, गांधीनगर (गुजरात) और हबीबगंज (भोपाल) स्टेशनों पर पुनर्विकास का कार्य प्रगति पर है। गोमतीनगर, चारबाग (लखनऊ) और पुडुचेरी स्टेशनों के पुनर्विकास के लिए ठेके प्रदान कर दिए गए हैं। किसी पुनर्विकसित स्टेशन में प्रस्तावित सुविधाओं में स्टेशन परिसर के लिए निर्बाध प्रवेश/निकास द्वार, यात्रियों के आगमन/प्रस्थान का पृथक्करण, भीड़भाड़ रहित पर्याप्त सम्मिलन क्षेत्र, जहाँ कहीं व्यावहारिक हो, शहर के दोनों सिरों को जोड़ना, परिवहन के अन्य साधनों अर्थात बस, मेट्रो आदि के साथ मेल प्रदान करना, उपयोगकर्ता अनुकूल अंतरराष्ट्रीय संकेतक, पर्याप्त रौशनी वाला परिचलन क्षेत्र और ड्रॉप ऑफ, पिक-अप और पार्किंग आदि के लिए समुचित व्यवस्था शामिल हैं। ■

उज्जैन-फतेहाबाद रेल लाइन को बड़ी लाइन में परिणत किये जाने संबंधी स्थिति

उज्जैन-फतेहाबाद (22.96 किमी) लाइन को बड़ी लाइन में परिवर्तित करने के लिए वर्ष 2016-17 में रतलाम-महू-खंडवा-अकोला आमान परिवर्तन परियोजना के लिए सामग्री आशोधन के रूप में 104.82 करोड़ रुपये की लागत की मंजूरी दी गई है। वर्ष 2019-20 के लिए उज्जैन-फतेहाबाद सामग्री आशोधन परियोजना सहित रतलाम-महू-खंडवा-अकोला आमान परिवर्तन परियोजना के लिए 555 करोड़ रुपये के परिव्यय की व्यवस्था की गई है। भूमि अधिग्रहण (उज्जैन-फतेहाबाद के लिए संबंधी कार्य शुरू किया गया है। उपलब्ध भूमि में मिट्टी संबंधी कार्य, ब्लैंकटिंग, पुल कार्य आदि निष्पादन के विभिन्न चरणों में हैं। इस खंड को चालू वित्त वर्ष 2019-20 में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। ■

ई-रेल टिकटों में दलालों की गतिविधियों को रोका जाना

त्यौहारों, ग्रीष्मकालीन छुट्टियों, अवकाशों आदि जैसी अधिक भीड़-भाड़ वाली अवधि के दौरान जब मांग उपलब्धता से अधिक हो जाती है, आरक्षण प्रणाली के दुरुपयोग के प्रयास के कुछ मामले नोटिस में आते हैं। बहरहाल, दलालों सहित बेईमान तत्वों की गतिविधियों को रोकने के लिए इंडियन रेलवे कैटरिंग एंड टूरिज्म कॉरपोरेशन द्वारा बहुत से नियंत्रण लगाए गए हैं, जो निम्नलिखित हैं:-

- किसी एक मोबाइल नंबर और ई-मेल आईडी पर केवल एक आईआरसीटीसी यूजर आईडी बनाना।
- एक माह में एक उपयोगकर्ता द्वारा 6 रेलवे टिकटों की बुकिंग की सीमा निर्धारित की गई है। जिन उपयोगकर्ताओं ने आईआरसीटीसी उपयोगकर्ता आईडी को अपने आधार नंबर से लिंक कराया हुआ है, उनके लिए यह सीमा बढ़ाकर एक माह में 12 रेल टिकट की गई है और यह सुनिश्चित किया जाता है कि यात्री सूची के कम-से-कम एक यात्री आधार के माध्यम से सत्यापन योग्य हो।
- यूजर आईडी की दैनिक आधार पर जांच और टिकटों की शीघ्र बुकिंग जैसे कदाचारों में लिप्त पाए जाने वाले आईडी को निष्क्रिय करना। 1 अप्रैल, 2018 से 31 मई 2019 तक लगभग 1.26 लाख यूजर आईडी को निष्क्रिय किया गया है।
- छोटे-मोटे उपयोगकर्ताओं द्वारा बुकिंग खुलने के पहले मिनट में तत्काल टिकटों की बुकिंग और संदेह होने पर ऐसी टिकटों के रद्दीकरण/रिलीज करने की दैनिक आधार पर जांच।
- 8.00 और 12.00 बजे के बीच वापसी/आगे की यात्रा को छोड़कर वन यूजर लॉग इन से केवल एक बुकिंग।
- ई-टिकट की बुकिंग के समय उपयोगकर्ता द्वारा यात्री का ब्यौरा एंटर करने के लिए अपेक्षित न्यूनतम समय की सीमा निर्धारित करना और कैप्चा लगाना।
- अग्रिम आरक्षण अवधि बुकिंग और तत्काल बुकिंग खुलने से पहले 15 मिनट के दौरान टिकटों की बुकिंग के लिए आईआरसीटीसी के प्राधिकृत एजेंटों पर प्रतिबंध लगाना।
- स्क्रिप्टिंग सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल सहित अप्राधिकृत टिकटिंग गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए पीआरएस केन्द्रों, बुकिंग कार्यालयों, प्लेटफॉर्मों, गाड़ियों आदि जैसे व्यापक संपर्क क्षेत्रों में नियमित जांच की जाती है। इस प्रकार की जांचें त्यौहारों, छुट्टियों आदि जैसी अधिक भीड़-भाड़ वाली अवधि के दौरान गहन कर दी जाती है। रेल सुरक्षा बल द्वारा गिरफ्तार किए गए दलालों/ब्रोकरों की संख्या और उनसे बरामद की गई ई-टिकटों की संख्या नीचे दी गई है:-

वर्ष	गिरफ्तार किए गए दलालों/ ब्रोकरों की संख्या	पकड़े गए ई-टिकटों की संख्या
2018	2,391	78,001
2019 (मई तक)	613	18,784

भारतीय रेल मार्गों का विद्युतीकरण

विद्युतीकरण के लाभों और समस्त बड़ी आमान नेटवर्क पर विद्युत कर्षण पर निर्बाध परिचालन प्राप्त करने के दृष्टिगत रेल मंत्रालय की वर्ष 2021-22 तक भारतीय रेल के शेष बड़ी आमान मार्गों को विद्युतीकरण करने की योजना है। दक्षिण मध्य रेलवे सहित बड़ी आमान मार्गों को विद्युतीकृत करने की जोन-वार कार्य योजना निम्नानुसार है।

क्रम संख्या	क्षेत्रीय रेलवे	विद्युतीकरण के लिए नियोजित मार्ग
1	मध्य	1,073
2	पूर्व	622
3	पूर्व मध्य	821
4	पूर्व तट	447
5	उत्तर	2,779
6	उत्तर मध्य	866
7	पूर्वोत्तर	2,340
8	पूर्वोत्तर सीमा	3,852
9	उत्तर पश्चिम	4,241
10	दक्षिण	1,471
11	दक्षिण मध्य	2,542
12	दक्षिण पूर्व	296
13	दक्षिण पूर्व मध्य	535
14	दक्षिण पश्चिम	2,702
15	पश्चिम	2,633
16	पश्चिम मध्य	850
17	कोंकण रेलवे	740
	कुल	28,810

केरल राज्य सहित विभिन्न राज्यों से रेलवे लाइनों के विद्युतीकरण के लिए प्रस्ताव प्राप्त होना एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। रेल मंत्रालय की केरल राज्य सहित भारतीय रेल, जिसमें सभी राज्य शामिल हैं, के शेष बड़ी आमान मार्गों को विद्युतीकृत करने की योजना है। शेष मार्ग विद्युतीकरण कार्य को पहले ही स्वीकृत कर दिया गया है।

सितम्बर, 2018 में 100% विद्युतीकरण के निर्णय के बाद रेलवे द्वारा डीजल रेल इंजन के उत्पादन के लिए कोई नई अवसंरचना प्रस्तावित नहीं की गई है। डीजल रेल इंजन फैक्ट्री, मरहौरा में विनिर्मित डीजल रेल इंजन को सामरिक, आपातकालीन एवं किन्हीं परिचालनिक कारणों हेतु भारतीय रेल द्वारा अपेक्षित होगा। ■

ग्रामीण क्षेत्रों में रेल नेटवर्क का विस्तार

ग्रामीण क्षेत्रों में रेल नेटवर्क का विस्तार के संबंध में राज्य सभा में पूछे गये एक प्रश्न के जवाब में रेल और वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल ने 21 जून, 2019 को राज्य सभा में बताया कि राज्य सरकारों, केन्द्रीय मंत्रालयों, संसद सदस्यों तथा अन्य जनप्रतिनिधियों द्वारा उठाई गई मांगों एवं रेलवे की अपनी आवश्यकता के आधार पर नई लाइन परियोजनाओं के प्रस्ताव पर विचार किया जाता है। इन्हें लाभप्रदता, अंतिम स्थान संपर्कता, मिसिंग लिंक और वैकल्पिक मार्गों, संकुलित/संतृप्त लाइनों के संवर्धन, सामाजिक-आर्थिक विचारधारा आदि के आधार पर शुरू किया जाता है, जिन्होंने चालू परियोजनाओं की भारी बकाया, निधियों की समग्र उपलब्धता तथा प्रतिस्पर्धी मांगें, जो पिछड़े एवं ग्रामीण क्षेत्र में भी संपर्कता को कवर करती है, के आधार पर पूरा किया जाता है। परियोजनाओं को राज्य-वार, क्षेत्रफल-वार और क्षेत्र-वार स्वीकृत नहीं किया जाता है। चूंकि नई लाइनें सामान्यत: एक से अधिक राज्य में फैली होती है, चालू परियोजनाओं का ब्यौरा जोन-वार रखा जाता है।

1 अप्रैल, 2019 तक भारतीय रेल ने रेल नेटवर्क के जरिए देशभर में 189 नई परियोजनाओं का कार्य शुरू किया है। ये परियोजनाएँ योजना/निष्पादन/स्वीकृति के विभिन्न चरणों में हैं।

यात्री गाड़ी सेवाओं को परिचालनिक व्यावहार्यता के अध्यधीन रेल संरक्षा आयुक्त से स्वीकृति के बाद नए जुड़े खंडों पर मुहैया कराया जाता है। तदनुसार, भारतीय रेल नेटवर्क पर 2014 से चालू की गई नई लाइनों पर 259 गाड़ी सेवाओं को शुरू किया गया है। 2014 से अभी तक 23 नई लाइन परियोजनाओं को शुरू किया गया है जो 2,165.49 किमी की कुल लंबाई को कवर करती हैं। इन परियोजनाओं ने भारत के ग्रामीण क्षेत्रों सहित बड़े क्षेत्र के लिए संपर्कता मुहैया कराई है। इन नई लाइन परियोजनाओं का ब्यौरा निम्नानुसार हैं:-

क्र.सं.	रेलवे	राज्य	वर्ष	परियोजना का नाम	लंबाई (किमी में)
1	पूर्व मध्य	झारखंड	2018-19	गिरडिह-कोडरमा	111
2	पूर्व मध्य	झारखंड	2018-19	टोरी-शिवपुर (निक्षेप कार्य)	88.8
3	पूर्वोत्तर	बिहार	2018-19	महराजगंज-मसरख	35.49
4	पूर्वोत्तर सीमा	असम	2018-19	लिंक लाइन के साथ बोगीबील पुल	92
5	पूर्वोत्तर सीमा	पश्चिम बंगाल	2018-19	हल्दीबाड़ी अंतरराष्ट्रीय सीमा	3
6	दक्षिण मध्य	आंध्र प्रदेश	2018-19	नंदयाल-येरागुंटला	126
7	दक्षिण मध्य	कर्नाटक	2017-18	बीदर-गुलबर्गा	110.4
8	दक्षिण मध्य	आंध्र प्रदेश/तेलंगाना	2017-18	जग्गयापेटा-मेलाचेरूवू-जनपहाड़	48
9	उत्तर मध्य	उत्तर प्रदेश	2016-17	इटावा-मेनपुरी	58
10	उत्तर	हरियाणा	2016-17	जींद-सोनीपत	80
11	दक्षिण मध्य	आंध्र प्रदेश	2016-17	नांदेड-येरागुंटला	126
12	दक्षिण मध्य	तेलंगाना	2016-17	पेद्दमपल्ली-करीमनगर-निजामाबाद	178
13	दक्षिण मध्य	कर्नाटक	2016-17	हसन-बेंगलूरु	167
14	पूर्व मध्य	बिहार	2015-16	पटना पुल	28
15	पूर्व मध्य	बिहार	2015-16	मुंगेर पुल	15
16	उत्तर	उत्तर प्रदेश	2015-16	इटावा-मैनपुरी	58
17	पूर्वोत्तर	उत्तर प्रदेश	2015-16	रामपुर-लालकुँआ आरओबी	2
18	पूर्वोत्तर सीमा	असम	2015-16	कुमारघाट-अगरतला	109
19	उत्तर	हरियाणा	2015-16	जींद-सोनीपत	89
20	पूर्वतट	ओडिशा	2015-16	दैतारी-बांसपानी	155
21	उत्तर पश्चिम	राजस्थान	2014-15	बंगुरग्राम-रास (27.8 किमी)	27.8
22	उत्तर मध्य	उत्तर प्रदेश	2014-15	आगरा-इटावा	110
23	उत्तर मध्य	उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश	2014-15	गुना-ग्वालियर-भिंड (348 किमी)	348
कुल					2165.49

दिव्यांगजनों हेतु सुविधाएँ

भारतीय रेल में 8,700 से अधिक स्टेशन हैं ओर रेलवे का हमेशा से ही यह प्रयास रहा है कि रेलवे स्टेशनों पर भिन्न रूप से सक्षम यात्रियों (दिव्यांगजनों) सहित सभी यात्रियों को पर्याप्त सुविधाएं प्रदान की जाएं, जो एक सतत् प्रक्रिया है। लोगों की जरूरतों और संसाधन की उपलब्धता के आधार पर भारतीय रेल के सभी स्टेशनों पर नि:शक्त व्यक्तियों (दिव्यांगजनों) के लिए सुविधाओं की व्यवस्था की जानी है। नि:शक्त व्यक्तियों (दिव्यांगजनों) के लिए सुगम पहुंच उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सभी स्टेशनों पर निम्नलिखित अल्पकालिक सुविधाओं और दीर्घकालिक सुविधाओं की योजना बनाई गई, जो आरंभ में गैर-उपनगरीय समूह एनएसजी-1, एनएसजी-2, एनएसजी-3 एवं एनएएसजी-4 (पूर्ववर्ती ए-1, ए एवं बी) कोटि के स्टेशनों से शुरू होगी। भारतीय रेल में स्टेशनों की सभी कोटियों के अंतर्गत नि:शक्त व्यक्तियों (दिव्यांगजनों) के लिए अब तक रेलवे स्टशनों पर मुहैया कराई गई अल्पकालिक सुविधाओं का ब्यौरा निम्नानुसार है:-

दिव्यांगजनों के लिए सुविधा	स्टेशनों की अनुमानित संख्या, जहाँ सुविधा मुहैया करा दी गई है
निर्बाध रूप से प्रवेश हेतु स्टैंडर्ड रैम्प	2,670
कम-से-कम दो पार्किंग स्थान निर्धारित करना	1,604
पार्किंग लॉट से स्टेशन बिल्डिंग तक फिसलन रहित मार्ग	1,557
समुचित दृश्यता के संकेतक	1,607
नि:शक्त व्यक्तियों (दिव्यांगजनों) के उपयोग हेतु पीने के पानी का कम-से-कम एक नल	2,184
कम-से-कम एक शौचालय (भूतल पर)	2,757
'क्या मैं आपकी सहायता कर सकता हूँ' बूथ	1,322

एनएसजी-1 से एनएसजी-4 श्रेणी के स्टेशनों पर दिव्यांगजनों के लिए मुहैया कराई जाने वाली दीर्घकालिक सुविधाएँ निम्नानुसार हैं:-

नि:शक्त व्यक्तियों (दिव्यांगजनों) के लिए सुविधा	स्टेशनों की अनुमानित संख्या, जहाँ सुविधा मुहैया करा दी गई है
प्लेटफार्मों के किनारों पर एन्ग्रेविंग	1,939
अंतर-प्लेटफार्म आवागमन हेतु सुविधा की व्यवस्था करना	1,288

इसके अतिरिक्त, वृद्धों, बीमार और भिन्न रूप से सक्षम (दिव्यांगजनों) यात्रियों की आवाजाही को सुविधाजनक बनाने और प्रमुख रेलवे स्टेशनों के प्लेटफॉर्म पर सुगम्य पहुँच 'सुगम्य भारत अभियान' के भाग के रूप में अब तक, 240 स्टेशनों पर 669 स्वचालित सीढ़ियां और 214 स्टेशनों पर 493 लिफ्ट्स मुहैया कराई गई हैं।

अब तक 1,609 रेलवे स्टेशनों पर वाई-फाई सुविधा मुहैया कराई गई है। देश भर के लगभग 4,800 रेलवे स्टेशनों में अभी तक वाई-फाई सुविधा नहीं मुहैया कराई गई है।

क्षेत्रीय रेलों के सभी महाप्रबंधकों को ग्राहकों के साथ सीधे संपर्क में आने वाले सभी फ्रंटलाइन कर्मचारियों को आरंभिक/पुनश्चर्या/विशेष पाठ्यक्रमों के भाग के रूप में सॉफ्ट स्किल के बारे में विशेष प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की व्यवस्था के लिए अनुदेश दिए गए हैं जहाँ ग्राहक संतोष पर अधिक बल दिया जाता है और ग्राहक को प्रमुख क्लाइंट के रूप में माना जाता है।

फ्रंटलाइन के सभी कॉमर्शियल कर्मचारियों को यात्री सुविधाओं के बारे में विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है, जहाँ दिव्यांगजनों के लिए मुहैया कराई गई विशेष सुविधाओं और व्हील चेयर की व्यवस्था के बारे में प्रशिक्षण दिया जाता है।

- क्षेत्रीय रेलों को ए-1 और ए कोटि के सभी स्टेशनों पर प्रति प्लेटफॉर्म एक व्हील चेयर और द्वीप-प्लेटफॉर्म के मामले में दो प्लेटफॉर्मों पर एक व्हील चेयर की व्यवस्था करने के बारे में अनुदेश दिए गए हैं।
- बड़े रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों द्वारा एनजीओ, चैरिटेबल ट्रस्ट, सीएसआर के अधीन पीएसयू के माध्यम से नि:शुल्क व्हील चेयर सर्विस एवं पोर्टर सर्विस बुक कराने के लिए यात्री मित्र सेवा की शुरुआत की गई है और इसकी जिम्मेदारी आईआरसीटीसी को सौंपी गई है। एनजीओ, चैरिटेबल ट्रस्ट, पीएसयू आदि से रिस्पोंस के अभाव में इस सेवा की व्यवस्था सर्विस प्रोवाइडर अथवा स्वयं ही भुगतान के आधार पर की जा सकती है।
- यात्री, आईआरसीटीसी के पोर्टल www.irctc.co.in के माध्यम से ऑनलाइन ई-व्हील चेयर बुक करा सकते हैं। वर्तमान में यह सुविधा 22 स्टेशनों अर्थात् अहमदाबाद, आगरा कैंट, वडोदरा, वाराणसी, भुसावल, विजयवाड़ा, कानपुर सेंट्रल, मुंबई सीएसटी, मुंबई सेंट्रल, हावड़ा, इंदौर, झांसी, जयपुर, लखनऊ जंक्शन, लखनऊ, नई दिल्ली, नागपुर, पठानकोट कैंट, पुणे, बेंगलुरु सिटी, सिकंदराबाद और माता वैष्णों देवी कटरा में उपलब्ध है।
- यात्री, आईआरसीटीसी के पोर्टल www.irctc.co.in से ऑनलाइन कैब/कोच और पोर्टर सेवाएं बुक करा सकते हैं। यह सुविधा चंडीगढ़, गया, गुंटूर, हावड़ा, जयपुर, लखनऊ जंक्शन, मदुरै, नई दिल्ली, दिल्ली जंक्शन, हजरत निजामुद्दीन, दिल्ली सफदरजंग, आनंद विहार, दिल्ली कैंट, दिल्ली सराय रोहिला, तिरुपति व विजयवाड़ा में उपलब्ध है।
- मंडल रेल प्रबंधकों को स्टेशन पर मेरिट के आधार पर - वाणिज्यिक प्रचार माध्यम के जरिए नि:शुल्क अथवा 'उपयोगकर्ता भुगतान करेगा' माध्यम से - बैट्री परिचालित वाहन (बीओवी) की व्यवस्था करने के बारे में विनिश्चय करने के लिए शक्तियाँ प्रत्यायोजित की गई हैं।
- मंडल स्तर पर, मुख्य यात्रा टिकट निरीक्षक/प्रभारी (सीटीटीआई/आईसी), स्टेशन प्रबंधक (एसएमआर) और संबंधित वाणिज्यिक निरीक्षकों को दिव्यांगजनों की सहायता के लिए डिसेबिलिटी इंस्पेक्टर के रूप में कार्य करने का निर्देश दिया गया है। ■

विस्टाडोम सवारी डिब्बा

शीशे की छत वाले मनोरम परिदृश्य युक्त लग्जरी कोच जिसे विस्टाडोम सवारी डिब्बा कहा जाता है, शुरू किए गए हैं। इनमें से कुछ सवारी डिब्बे इंफोटेनमेंट (सूचनोरंजन) प्रणाली से भी सुसज्जित होते हैं।

भारतीय रेल के निम्नलिखित खंडों में इस प्रकार के 13 सवारी डिब्बे उपलब्ध हैं।

- दादर और मडगांव (1 सवारी डिब्बा)
- अराकू वैली (1 सवारी डिब्बा)
- कश्मीर वैली (1 सवारी डिब्बा)
- दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे (4 सवारी डिब्बा)
- कालका शिमला रेलवे (2 सवारी डिब्बा)
- कांगड़ा वैली रेलवे (1 सवारी डिब्बा)
- माथेरान हिल रेलवे (1 सवारी डिब्बा)
- नीलगिरि माउंटेन रेलवे (2 सवारी डिब्बा)

इन सवारी डिब्बों में शीशे की खिड़कियाँ बड़ी और आंतरिक भाग अच्छी गुणवत्ता के होते हैं।

नई बड़ी लाइन (ब.ला.) के विस्टाडोम सवारी डिब्बों के निर्माण की लागत लगभग 4 करोड़ रुपये है।

सवारी डिब्बा कारखाना/चेन्नै में निर्मित ब.ला. विस्टाडोम सवारी डिब्बों की शीशे की खिड़कियां लेमिनेटड ग्लास शीट्स की बनी होती हैं, जो टूटती नहीं है।

क्षेत्रीय रेलवे गाड़ियों/डिब्बों के संचालन के दौरान, जहाँ भी आवश्यक होता है, आवश्यक सावधानी बरतते हैं। ■

खाली भूमि पर सौर पैनल लगाना

भारतीय रेल की अपनी अप्रयुक्त भूमि पर 500 मेगा वाट के भूमि आधारित सौर ऊर्जा संयंत्रों की स्थापना करने की योजना है। उपर्युक्त में से कुल 3 मेगावॉट को पहले से ही रेलवे की अप्रयुक्त भूमि पर संस्थापित कर दिया गया है। इसके अलावा, अप्रयुक्त रेलवे भूमि जहाँ पर सौर ऊर्जा परियोजनाओं की स्थापना के लिए कार्रवाई की गई है, का ब्यौरा निम्नानुसार है :

- रेलवे ऊर्जा प्रबंधन कंपनी लिमिटेड (आरईएससीएल) के माध्यम से भिलाई में 50 मेगावॉट का संयंत्र।
  इस परियोजना के लिए नोडल अधिकारी के रूप में प्रधान मुख्य बिजली इंजीनियर सहित दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे नोडल एजेंसी हैं।
  इस परियोजना को मार्च, 2021 तक शुरू करने की योजना है।
- पश्चिम मध्य रेलवे में सुखी-सिवानिया में 1.7 मेगावॉट का संयंत्र : इस परियोजना के लिए नोडल अधिकारी के रूप में प्रधान मुख्य बिजली इंजीनियर सहित पमरे रेलवे नोडल एजेंसी हैं। इस परियोजना को मार्च, 2020 तक शुरू करने की योजना है।
- उत्तर रेलवे के दीवान में 2 मेगावॉट का संयंत्र : इस परियोजना के लिए नोडल अधिकारी के रूप में प्रधान मुख्य बिजली इंजीनियर सहित उत्तर रेलवे नोडल अधिकारी एजेंसी हैं। इस परियोजना को मार्च 2020 तक शुरू करने की योजना है। ■

रेलवे में महिलाओं को रोजगार

गत तीन वर्ष में भारतीय रेल में तकनीकी कोटियों में लगभग 3,650 महिला उम्मीदवारों को रोजगार दिया गया है। विगत कुछ वर्षों में विभिन्न तकनीकी पदों के लिए जारी की गई अधिसूचना के प्रत्युत्तर में कुल 2,79,60,224 आवेदन पत्र प्राप्त हुए थे और इनमें से 46,76,928 (16.73%) महिलाओं के आवेदन पत्र के रेलभर्ती अधिसूचनाओं का व्यापक प्रचार किया जाता है और प्रत्येक उम्मीदवार बिना किसी जेंडर भेदभाव के जो पात्रता संबंधी मानदंड को पूरा करते हैं। आवेदन करने के लिए स्वतंत्र हैं।

जिन महिला उम्मीदवारों ने परीक्षा में भाग लिया, उनसे एकत्रित आवेदन फीस का उन्हें वापस भुगतान कर दिया जाता है।

इसके अलावा विधवा, तलाकशुदा महिलाओं और अपने पति से कानूनी रूप से अलग रहने वाली महिलाओं, जिन्होंने पुनर्विवाह नहीं किया है, के मामले में अधिकतम आयु सीमा में 35 वर्ष तक की छूट दी जाती है।

इसके अतिरिक्त लेवल-I कोटियों के लिए महिला उम्मीदवारों के लिए शारीरिक दक्षता परीक्षा के रियायती अर्हक मानक लागू किए जाते हैं।

महिला कर्मचारियों के लिए सुरक्षित कार्य स्थितियों सुनिश्चित करने के लिए अलग विश्राम कक्ष, अमानती समान घर, चेंजिंग रूम और क्रैच की व्यवस्था भी की गई है।

रेलवे की नौकरियों के लिए आवेदन करने के लिए महिला उम्मीदवारों को प्रोत्साहित करने हेतु रेल भर्ती अधिसूचनाओं का व्यापक प्रचार किया जाता है।

ऑनलाइन आवेदन की सुविधा से यह सुनिश्चित होता है कि महिलाएं रेल भर्ती अधिसूचनाओं के प्रत्युत्तर में अपने घर से भी आवेदन कर सकती हैं। ■

रेल दुर्घटनाएँ

भारतीय रेल द्वारा विभिन्न महत्त्वपूर्ण उपाय किए गए हैं, जिनके परिणामस्वरूप परिणामी गाड़ी दुर्घटनाओं की संख्या 2013-14 में 118 से कम होकर 2016-17 के 104 से घटकर 2017-18 में 73 और 2018-19 में 59 हो गई। भारतीय रेल के इतिहास में ये अब तक के न्यूनतम आंकड़े हैं।

भारतीय रेलों में संरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है और दुर्घटनाओं की रोकथाम तथा यात्रियों की संरक्षा के लिए सतत् आधार पर हरसंभव कदम उठाए जाते हैं। विगत वर्षों में दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए निम्नलिखित कदम उठाए/उपाय किए गए हैं:-

- महत्त्वपूर्ण संरक्षा संबंधी परिसंपत्तियों के बदलाव/नवीकरण/अपग्रेडेशन के लिए 2017-18 में एक लाख करोड़ रुपये की राशि संवर्धन के साथ पांच वर्ष के लिए राष्ट्रीय रेल संरक्षा कोष की शुरुआत की गई है, जिसमें वार्षिक परिव्यय 20,000 करोड़ रुपये हैं।
- भारतीय रेल ने सवारी डिब्बों में आशेधित सेन्टर बफर कपलर, बोगी मॉउंटेड एयर ब्रेक प्रणाली (बीएमबीएस), उन्नत सस्पेंशन डिजाइन और ऑटोमेटिक फायर एवं स्मोक डिटेक्शन प्रणाली का प्रावधान शुरू करने के तरीके से सवारी डिब्बों और मालडिब्बों के सुरक्षा पहलुओं में प्रौद्योगिकीय अपग्रेडेशन को पहले ही अपनाया है। नव निर्मित सवारी डिब्बों और मालडिब्बों में नियमित आधार पर इन आशोधनों की व्यवस्था की जा रही है।
- मेल/एक्सप्रेस गाड़ियों के परम्परागत आईसीएफ डिजाइन के सवारी डिब्बों का चरणबद्ध आधार पर एलएचबी डिजाइन के सवारी डिब्बों से बदलाव किया जा रहा है।
- धुंध प्रभावित क्षेत्रों में लोको पायलटों के लिए जीपीएस आधारित फॉग पास डिवाइस का प्रावधान जो एप्रोचिंग लैंडमार्क जैसे सिगनल, समपार गेटों आदि की स्पष्ट दूरी जानने में लोको पायलट को सक्षम बनाता है।
- संरक्षा में सुधार के उद्देश्य से प्राथमिक रेलपथ नवीकरण करते समय पूर्व बलित कंक्रीट, 60 किग्रा, 90 अथवा उच्चतर अल्टीमेट टेन्साइल स्ट्रैन्थ (यूटीएस) पटरियों, पीएससी स्लीपरों पर फैनशैप वाले लेआउट टर्नआउट, गर्डर पुलों पर स्टील चैनल वाले स्लीपरों वाली आधुनिक रेलपथ संरचना का इस्तेमाल किया जा रहा है।
- रेलपथ में अल्यूमीनों थर्मिट जोड़ों की संख्या को न्यूनतम करने के लिए इस्पात संयंत्र में 260 मी./130 मी. लंबे लॉन्ग रेल पैनलों का विनिर्माण किया जा रहा है।
- भारतीय रेल के सभी महत्त्वपूर्ण मार्गों पर थिक वेब स्विचों (टीडब्ल्यूएस) की व्यवस्था करने की योजना है। टीडब्लयूएस की व्यवस्था के कार्य में तेजी लाने के लिए थिक वेब स्विचों की खरीद का कार्य क्षेत्रीय रेलों को सौंप दिया गया है।
- दोषों का पता लगाने और खराब पटरियों को समय पर हटाने के लिए पटरियों की अल्ट्रासोनिक फ्ला डिटेक्शन (यूएसएफडी) जांच करना।
- मानवीय चूक को कम करने के लिए रेलपथ अनुरक्षण का यांत्रिकीकरण और डाटाबेस तथा निर्णय समर्थन प्रणाली के विकास के लिए एवं युक्तिसंगत संरक्षण आवश्यकताओं का निर्धारण और इनपुट के इष्टतम उपयोग के लिए भारतीय रेल पर रेलपथ प्रबंधन प्रणाली की शुरुआत की गई है।
- मानवीय विफलताओं के कारण होने वाली दुर्घटनाओं को रोकने और पुरानी यंत्रिक प्रणाली को बदलने के लिए वाइंट और सिगनलों के केन्द्रीकृत परिचालन सहित इलेक्ट्रिकल/इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग प्रणाली की व्यवस्था की जा रही है। मानव तत्व के स्थान पर विद्युत साधनों द्वारा रेलपथ अधिभोगिता के सत्यापन हेतु संरक्षा बढ़ाने के लिए स्टेशनों का संपूर्ण रेलपथ परिपथन, अगली गाड़ी को लाइन क्लीयर की अनुमति देने से पहले मैनुअल हस्तक्षेप के बिना और मानवीय तत्व को कम करने के लिए, गाड़ी का पूरी तरह से आगमन सुनिश्चित करने हेतु ब्लॉक खंड के स्वचालित क्लीयरेंस के लिए ब्लॉक खंडो पर एक्सेल काउंटरों की व्यवस्था की गई है।
- **गाड़ी सुरक्षा एवं चेतावनी प्रणाली :** खरते पर सिगनल पार करने अथवा तेज गति में चलने की मानवीय चूक के कारण गाड़ी दुर्घटनाओं/टक्कर से बचने के लिए यूरोपियन प्रौद्योगिकी आधारित ईटीसीएस लेवल-1, स्वचालित गाड़ी सुरक्षा (एटीपी) प्रणाली पर आधारित गाड़ी सुरक्षा एवं चेतावनी प्रणाली (टीपीडब्ल्यूएस) (i) कोलकाता मेट्रो के नौपाड़ा-कवि सुभाष खंड (28 मार्ग किमी), (ii) दक्षिण रेलवे के चैन्नै-गुमिडीपुंडी उपनगरीय खंड (50 मार्ग किमी), दक्षिण रेलवे के बेसिन ब्रिज-अरक्कोणम खंड (67 मार्ग किमी) और उत्तर/उत्तर मध्य रेलवे के हज़रत निज़ामुद्दीन-आगरा खंड (200 मार्ग किमी) पर मुहैया कराई गई है।
- **सहायक चेतावनी प्रणाली (एडब्ल्यूएस) :** सहायक चेतावनी प्रणाली (एडब्ल्यूएस) नामक स्वचालित गाड़ी सुरक्षा (एटीपी) इस समय मध्य रेलवे (289 मार्ग किमी) और पश्चिम रेलवे (124 मार्ग किमी) के मुंबई उपनगरीय खंड में 413 मार्ग किमी पर कार्य कर रही है।
- **गाड़ी टक्कर रोधी प्रणाली (टीसीएएस) :** यह एक स्वचालित गाड़ी सुरक्षा (एटीपी) प्रणाली है, जिसे 3 भारतीय विनिर्माताओं के सहयोग से विकसित किया जा

रहा है। इस प्रणाली को दक्षिण मध्य रेलवे पर लिंगमपल्ली-विकारबाद-वाड़ी, विकारबाद-बीदर खंड (250 मार्ग किमी) पर संस्थापित किया गया है। इसका स्वतंत्र संरक्षा आकलनकर्ता (आईएसए) द्वारा संरक्षा एकीकरण स्तर-4 (एसआईएल-4) के लिए विस्तृत फील्ड परीक्षण और संरक्षा सत्यापन का कार्य पूरा कर किया गया है। समूचे ब्लॉक खंडों में 110 किमी प्रतिघंटा की रफ्तार के लिए विकासात्मक आदेश हेतु सभी तीन फर्मों के उत्पाद को अ.अ.मा.सं. द्वारा अनुमोदित कर दिया गया है।

गाड़ी दुर्घटनाओं में परिचालनिक समस्याओं और अन्य कारकों की भूमिका की पहचान का विश्लेषण करने के लिए भारतीय रेल पर प्रत्येक परिणामी दुर्घटना पर नागरिक उड्डयन मंत्रालय के अधीन रेल संरक्षा आयुक्त द्वारा अथवा विभागीय जांच समिति द्वारा जांच की जाती है। प्रत्येक जांच में दुर्घटना के कारण के बारे में अपने निष्कर्ष दिए जाते हैं, जिम्मेदारी निर्धारित की जाती है और दुर्घटनाओं को रोकने के संबंध में सुझाव दिए जाते हैं। जांच रिपोर्टों के निष्कर्षों के आधार पर रेलवे द्वारा विभिन्न सुधारात्मक उपाय किए जाते हैं ताकि भारतीय रेल पर संरक्षा किया जा सके। दुर्घटना उपरांत विश्लेषण के लिए रेल इंजन में कर्मी दल के संवाद/वार्तलाप और ट्रैक साइड का दृश्य रिकॉर्ड करने के लिए एक क्रू-वॉयस एंड वीडियो रिकॉडिंग सिस्टम (हवाई जहाजों में मुहैया कराए गए ब्लैक बॉक्स के समान) विकसित किया गया है। फील्ड परीक्षणों के लिए 5 रेल इंजनों पर इस प्रणाली की व्यवस्था की गई है। ■

ट्रेन व स्टेशन पर गुणवत्तापूर्ण खान-पान की उपलब्धता

यात्रियों को सुरक्षित, स्वास्थ्यपरक और गुणवत्तापरक भोजन मुहैया कराने के लिए 27 जनवरी, 2017 को नई खानपान नीति जारी की गई है, जिसके द्वारा इंडियन रेलवे कैटरिंग एंड टूरिज्म कॉरपोरेशन लिमिटेड (आईआरसीटीसी) को गाड़ियों पर भोजन तैयार करने और भोजन वितरण करने के बीच अन्तर सृजित कर उनके विकेंद्रीकरण का आदेश दिया गया है। इस उद्देश्य के लिए गाड़ियों में भोजन आईआरसीटीसी द्वारा स्वामित्व, परिचालित और प्रबंधित किचनों से प्राप्त किया जा रहा है। यात्रियों को स्वच्छ एवं अच्छी गुणवत्ता वाला भोजन सुनिश्चित करने के लिए रेलवे द्वारा निम्नलिखित उपाय किए गए हैं:-

- भोजन तैयार करने की गुणवत्ता को बेहतर करने के लिए, आईआरसीटीसी ने विगत दो वर्षों में 46 बेस किचनों को अपग्रेड किया है। किचन की गतिविधियों पर केन्द्रीकृत निगरानी सुनिश्चित करने उद्देश्य से 38 बेस किचनों में सीसीटीवी कैमरे संस्थापित किए गए हैं और आईआरसीटीसी की वैबसाइट के जरिए इन किचन इकाइयों की लाइव स्ट्रीमिंग को साझा करने की प्रक्रिया शुरू की गई है।
- खाद्य सुरक्षा मानदंडों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक खानपान इकाई के नामित खाद्य सुरक्षा अधिकारियों से भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) प्रमाणन अनिवार्य कर दिया गया है। खाद्य सुरक्षा और स्वच्छता प्रक्रियाओं पर निगरानी रखने के लिए किचन इकाइयों में आहार संरक्षा पर्यवेक्षकों की तैनाती की गई है। आहार संरक्षा अधिकारियों/पर्यवेक्षकों द्वारा एकत्रित आहार के नमूने, खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम के तहत् विश्लेषण और जांच के लिए नामित मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं में भेजे जाते हैं। असंतोषजनक आहार नमूने पाए जाने पर जुर्माना लगाया जाता है।
- रसोई यानों और बेस किचनों में थर्ड पार्टी ऑडिट द्वारा भोजन की गुणवत्ता, साफ-सफाई और स्वच्छता की जांच। थर्ड पार्टी एजेंसियों के जरिए ग्राहक संतोष सर्वेक्षण भी किया जाता है।
- खाद्य सुरक्षा अधिकारियों सहित रेलवे अधिकारियों द्वारा नियमित और औचक निरीक्षण किए जाते हैं।
- उपर्युक्त के अलावा, यात्रियों के लिए स्वच्छ एवं अच्छी गुणवत्ता वाला भोजन सुनिश्चित करने के लिए रेलवे द्वारा निम्नलिखित उपाय भी शुरु किए गए हैं:
  - i) आहार पैकेटों पर क्यूआर कोड और किचन का नाम, पैकिंग की तारीख आदि जैसे अन्य ब्यौरे मुद्रित करने की प्रणाली शुरू की गई है।
  - ii) रेडी टू ईट (आरटीई) भोजन की शुरुआत
  - iii) गाड़ियों में ई-खानपान सेवाओं की व्यवस्था।
  - iv) केंद्रीकृत खानपान सेवा निगरानी कक्ष (सीएसएमसी) टोल फ्री नंबर 1800-111-321, ट्विटर हैंडल, सीपीग्राम्स, ई-मेल तथा एसएमएस आधारित शिकायत निवारण के संचालन द्वारा खानपान सेवाओं की निगरानी तथा पर्यवेक्षण।

यात्रियों को गुणवत्तापूर्ण और स्वच्छ भोजन मुहैया कराने के प्रयास में रेलवे द्वारा विभिन्न स्तरों पर नियमित निरीक्षण के जरिए गुणवत्ता, स्वच्छता और अधिसूचित दरों पर खानपान मदों की बिक्री पर निगरानी रखने के लिए एक तंत्र की शुरुआत की गई है। भारतीय रेल पर मोबाइल और स्थैतिक खानपान, दोनों इकाइयों के लिए खानपान संबंधी मदों की निर्धारित दर सूची पहले ही अधिसूचित कर दी गई है। यात्रियों की जानकारी के लिए अधिसूचित मैन्यू और दर सूची सुस्पष्ट स्थानों पर प्रदर्शित की जाती है और आईआरसीटीसी/भारतीय रेल की वेबसाइटों पर, 'ट्रेन्स एट ए ग्लांस', पैंट्री कारों आदि में भी उपलब्ध है। भारतीय रेल द्वारा 'कोई बिल नहीं- भोजन निःशुल्क है' अभियान भी शुरू किया गया है"। ■

रेलवे में शौचालयों और स्नानघरों की सफाई

गाड़ियों और स्टेशन क्षेत्र के शौचालयों तथा वॉशरूम में सफाई व्यवस्था बनाए रखना एक सतत् प्रक्रिया है और उनकी हालत तथा साफ-सफाई में सुधार के लिए भरसक प्रयास किए जा रहे हैं। गाड़ियों और रेलवे स्टेशनों में शौचालयों की हालत तथा साफ-सफाई में सुधार के लिए भारतीय रेल द्वारा किए गए कुछ महत्त्वपूर्ण उपाय नीचे दिए गए हैं:-

- यंत्रीकृत सफाई सहित दोनों छोरों पर शौचालयों सहित सवारी डिब्बों की सफाई की जाती है।
- गाड़ियों के चालन के दौरान सवारी डिब्बों के शौचालयों, प्रवेश द्वारों, गलियारों और यात्री कंपार्टमेंट की सफाई के लिए राजधानी, शताब्दी और लंबी दूरी की अन्य महत्त्वपूर्ण मेल/एक्सप्रेस गाड़ियों सहित लगभग 1,080 से अधिक जोड़ी गाड़ियों में ऑन बोर्ड हाउसकीपिंग सेवा (ओबीएचएस) उपलब्ध कराई गई है।
- लगभग 1,040 जोड़ी ओबीएचएस गाड़ियों में यात्रियों की सवारी डिब्बों से संबंधित आवश्यकताओं जैसे कि सफाई, कीटाणुनाशन, लिनन, गाड़ी प्रकाश व्यवस्था, वातानुकूलन और कोचों में जल भराई करने के लिए 'कोच मित्र' एक खिड़की व्यवस्था की गई है।
- निर्धारित स्टेशन पर गाड़ियों के मार्गवर्ती टहराव के दौरान शौचालयों की सफाई सहित चिह्नित की गई गाड़ियों की सीमित यांत्रिक साफ-सफाई करने के लिए क्लीन ट्रेन स्टेशन (सीटीएस) योजना को भी निर्धारित किया गया है।
- भारतीय रेल द्वारा अपने कोचिंग स्टॉक में बॉयो शौचालयों की संख्या में वृद्धि जा रही है ताकि सवारी डिब्बों से रेलपथ पर मानव मल ने गिरने पाए। लगभग 56,700 सवारी डिब्बों में करीब 2,05,000 बॉयो शौचालय फिट किए गये हैं।
- सवारी डिब्बों में बॉयो शौचालयों सहित डस्टबिनों की व्यवस्था।
- शौचालयों की सफाई सहित स्टेशनों पर एकीकृत यांत्रीकृत सफाई के ठेके।
- सभी एनएसजी-1, एनएसजी-2, एनएसजी-3, एनएसजी-4, एनएसजी-5, एनएसजी-6, एसजी-1, एसजी-2 और एसजी-3 कोटि के रेलवे स्टेशनों पर मानदंडों के अनुसार पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग शौचालय उपलब्ध हैं।
- बहरलाल, स्टेशनों पर शौचालयों समेत सुविधाओं का उन्नयन एक सतत् प्रक्रिया है और पिछले चार वर्षों में 2,894 शौचालयों का निर्माण/सुधार किया गया, और इसके अलावा इस संबंध में आवश्यकता, यात्री यातायात की मात्रा और प्राथमिकता के आधार पर धन की उपलब्धता के अध्यधीन निर्माण/सुधार कार्य किए जा रहे हैं।
- महिलाओं और पुरुष इकाइयों के साथ, डीलक्स और साधारण, दोनों सार्वजनिक शौचालयों का परिचालन, 'पे एंड यूज' आधार पर सार्वजनिक निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल के माध्यम से भी किया जा रहा है। संविदा के माध्यम से इन 'पे एंड यूज' शौचालयों की सफाई सहित परिचालन और अनुरक्षण के संबंध में क्षेत्रीय रेलों को अधिकृत किया गया है।
- 2 अक्टूबर, 2014 को भारतीय रेल में स्वच्छ अभियान के तहत विशेष स्वच्छता अभियान शुरू किया गया। तब से, रेलवे स्टेशनों और गाड़ियों के स्वच्छता मानकों में महत्त्वपूर्ण और टिकाऊ सुधार हासिल करने के एकमात्र उद्देश्य से, भारतीय रेल में नियमित गहन अभियान/जागरूकता अभियान आयोजित किए गए हैं।
- अधिकारी एवं पर्यवेक्षक स्तरों पर नियमित निरीक्षण किए जाते हैं और जब कभी कमियाँ ध्यान में आती हैं तो उन कमियों को सुधारा जाता है।
- भारतीय रेल (रेलवे परिसरों में सफाई-व्यवस्था को प्रभावित करने वाली गतिविधियों के लिए दंड) नियम 2012 लागू करना।

'स्टेशनों पर सफाई' तथा 'सवारी डिब्बों में सफाई' शीर्षों के अंतर्गत शिकायतें दर्ज की जाती हैं, जिनमें शौचालयों की सफाई भी शामिल है। 'स्टेशनों और सवारी डिब्बों में शौचालयों/वॉशरूम की सफाई के संबंध में अलग डाटा नहीं रखा जाता।

रेलों द्वारा पिछली बार वर्ष 2018 में देश के 407 बड़े रेलवे स्टेशनों पर शौचालयों में सफाई सहित सफाई-व्यवस्था के संबंध में थर्ड पार्टी सर्वेक्षण किया गया था। 2018 में, शौचालयों में सफाई सहित चलती गाड़ियों में स्वच्छता मानदंडों का आंकलन करने के लिए 209 जोड़ी गाड़ियों में भी थर्ड पार्टी गाड़ी सफाई सर्वेक्षण किया गया था।

इन सर्वेक्षणों का ब्यौरा स्वच्छ रेल स्वच्छ भारत-2018-गाड़ी सफाई सर्वेक्षण, और स्टेशन सफाई, रैंकिंग रिपोर्ट 2018 के अंतर्गत भारतीय रेल की वेबसाइट http://www.indianrailways.gov.in->Ministry of Railways->Railway Board -> पर उपलब्ध है।

इन रिपोर्टों को आवश्यक सुधार हेतु क्षेत्रीय रेलों के साथ साझा किया गया है।

उत्पादन इकाइयों को सभी नव विनिर्मित लिंक हॉफमैन बुश (एलएचबी) एसी सवारी डिब्बों में बॉयो शौचालयों सहित वैक्यूम वाले फ्लशिंग सिस्टम फिट करने के लिए कहा गया है

वैक्यूम फ्लशिंग सिस्टम वाले शौचालयों में गंदगी की कारगर/समुचित निकासी सुनिश्चित करते समय पानी की आवश्यकता काफी कम होती है। अत: इसमें कम पानी के साथ समुचित निकासी सुनिश्चित हो जाती है।

सफाई-व्यवस्था के संबंध में प्राप्त शिकायतें-

शिकायत प्रबंधन प्रणाली (सीओरएमएस) के माध्यम से सफाई के संबंध में प्राप्त शिकायतें :

वित्त वर्ष	स्टेशन पर सफाई	सवारी डिब्बों में सफाई
2015-16	939	11036
2016-17	2,403	21,584
2017-18	2,318	25,363
2018-19	2,139	32,182
2019-20 (30 जून 2019 तक)	679	10,458
कुल	8,478	1,00,623

केंद्रीकृत लोक शिकायत निवारण एवं निगरानी प्रणाली (सीपीजीआरएएमएस) के माध्यम से सफाई व्यवस्था के संबंध में प्राप्त शिकायतें -

वित्त वर्ष	स्टेशन पर सफाई	सवारी डिब्बों में सफाई
2015-16	100	211
2016-17	584	635
2017-18	262	400
2018-19	314	498
2019-20 (30 जून 2019 तक)	136	126
कुल	1,396	1,870

सोशल मीडिया के माध्यम से सफाई व्यवस्था के संबंध में प्राप्त शिकायतें -

वित्त वर्ष	स्टेशन पर सफाई	सवारी डिब्बों में सफाई
2016-17	1,543	7270
2017-18	2,881	20,262
2018-19	2,490	31,127
2019-20 (30 जून 2019 तक)	749	9,987
कुल	7,663	68,646

ई-टिकटिंग

आई-टिकट की अवधारणा शुरू करते हुए इंडियन कैटरिंग एंड टूरिज्म कॉरपोरेशन (आईआरसीटीसी) द्वारा वेबसाइट के जरिए ऑनलाइन टिकटों की शुरुआत 2002 में की गई थी, जहाँ आईआरसीटीसी वेबसाइट के माध्यम से टिकट बुक किया जाता था और यात्री द्वारा दिए गए पते पर वास्तविक टिकट कूरियर द्वारा भेजा जाता था। तत्पश्चात् वर्ष 2005 में ई-टिकट व्यवस्था शुरू की गई, जिसमें यात्री को इलेक्ट्रॉनिक रिजर्वेशन स्लिप (ईआरएस) का प्रिंट आउट लेना अपेक्षित था और आरक्षण चार्ट में नाम आने के अध्यधीन यात्रा करने के लिए मूल में पहचान के निर्धारित प्रमाणों में से एक को ले जाना आवश्यक होता था। इस समय, यात्री जिन्होंने ई-टिकटें बुक की है, वे या तो इलेक्ट्रॉनिक रिजर्वेशन स्लिप (ईआरएस) का प्रिंट आउट लेकर अथवा अईआरसीटीसी द्वारा भेजे गए सभी महत्त्वपूर्ण विवरण वाले वर्चुअल रिजर्वेशन मैसेज (वीआरएम)/शॉर्ट मैसेज सर्विस (एसएमएस) को दर्शा कर यात्रा कर सकते हैं। विगत दो वर्षों और चालू वर्ष के दौरान ई-टिकटिंग से हुई आमदनी का ब्यौरा निम्नानुसार है:-

वित्त वर्ष	ई-टिकटिंग से आमदनी (करोड़ रु. में)
2017-18	28,475.46
2018-19	32,069.68
2019-20 (जून तक)	8,791.12

कुल रद्द किए गए टिकटों के संबंध में रद्द किए गए ई-टिकटों के प्रतिशत के साथ-साथ रद्द किए गए टिकटों की कुल संख्या का वर्ष-वार ब्यौरा निम्नानुसार है:-

यात्री सुविधा बेहतर करने के संबंध में बुकिंग के समय प्रतीक्षा सूची टिकट के साथ-साथ प्रतीक्षा सूची टिकट की पीएनआर इनक्वारी के दौरान कंफर्म होने के संभावनाओं का आंकलन करने के लिए एक टूल को आईआरसीटीसी की वेबसाईट के साथ एकीकृत किया गया है। इसके अलावा प्रतीक्षा सूचीबद्ध यात्रियों को पुष्ट स्थान उपलब्ध कराने और उपलब्ध स्थान का ईष्टतम उपयोग सुनिश्चित करने के लिए सभी खंडों पर सभी किस्म की गाड़ियों को शामिल करने के लिए 'विकल्प' नामक वैकल्पिक गार्ड स्थान (एटीएएस) योजना शुरू की गई है। इस योजना का उद्देश्य खाली स्थान वाली वैकल्पिक गाड़ी में प्रतीक्षा-सूचीबद्ध यात्रियों को स्थान उपलब्ध करवाना है। इस सुविधा के लिए प्रतीक्षा-सूचीबद्ध को टिकट बुक करवाते समय एक विकल्प देना होता है और प्रतीक्षा सूची वाला यात्रियों को पहला आरक्षण चार्ट तैयार करते समय अन्य गाड़ियों में स्थानांतरित कर दिया जाता है। (अगर खाली स्थान उपलब्ध हो)। गाड़ियाँ की प्रतीक्षा-सूची पर नियमित निगरानी रखी जाती हैं और मौजूदा गाड़ियों में सवारी डिब्बों की संख्या बढ़ाई जाती है, बशर्ते ऐसा करना परिचालनिक दृष्टि से व्यावहारिक हो। यह एक सतत् प्रक्रिया है। यदि पहला आरक्षण चार्ट तैयार होने के बाद भी ई-टिकट की स्थिति प्रतीक्षा-सूची में ही रहती है, तब आरक्षण चार्ट से उस पैसेंजर नेम रिकॉर्ड (पीएनआर) पर बुक किए गए ऐसे सभी यात्रियों के नाम हटा दिए जाते हैं। ऐसे मामलों में किराए के रिफंड की राशि सीधे उसी खाते में अंतरित की जाती है, जिस खाते से बुकिंग लेन-देन किया गया था। ई-टिकटों के मामले में पूर्णतया प्रतीक्षा-सूचीबद्ध ई-टिकटों पर ऑटो रिफंड की सुविधा होने से इन यात्रियों को रेलवे आरक्षण काउंटरों से रिफंड लेने की चिंता नहीं होती है। इस समय, मौजूदा सुविधाओं की यात्री मांग के मौजूदा स्तर को पूरा करने के लिए पर्याप्त समझा जाता है और ई-टिकटों की अनावश्यक रद्दीकरण से बचने के लिए किसी नई नीति पर विचार नहीं किया जा रहा है। ■

रेल परिवहन को आकर्षक बनाने के लिए उठाए गए कदम

भारतीय रेल ने पिछले वर्ष की तुलना में वित्त वर्ष 2018-19 में यात्रियों की संख्या में 1.8 प्रतिशत और फ्रेट यातायात में 5% की वृद्धि दर्ज की है। भारतीय रेल ने अपने शेयर को बढ़ाने के लिए कई उपाय किए हैं, जिसमें निम्नलिखित शामिल हैं:

यात्री क्षेत्र

- अतिरिक्त सवारी डिब्बे जोड़ कर ऑन-बोर्ड क्षमता का संवर्धन करना, त्यौहारों और छुट्टियों के दौरान विशेष गाड़ियों को चलाना, सुविधा गाड़ियों को चलाना आदि।
- मोबाइल टिकट बुकिंग के माध्यम से टिकट बिक्री क्षमता का संवर्धन करना, स्वचालित टिकट वेडिंग मशीन (एटीवीएम) का परिचालन, जन साधारण टिकट बुकिंग सेवकों (जेटीबीएस) की सेवाओं का उपयोग, स्टेशन टिकट बुकिंग एजेंटों (एसटीबीए), यात्री टिकट सुविधा केंद्र (वाईटीएसके) आदि।
- यात्रियों की सुविधा के लिए नेट बैंकिग, क्रेडिट/डेबिट कार्ड, ई-वॉलेट, यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई)/भारत इंटरफेस फॉर मनी (भीम) जैसे डिजिटल भुगतान के तरीकों का विस्तार।
- प्रतीक्षा-सूचीबद्ध यात्रियों को कंफर्म स्थान मुहैया कराने और उपलब्ध स्थान का ईष्टतम उपयोग सुनिश्चित करने के लिए भी विकल्प नामक वैकल्पिक गाड़ी स्थान योजना (एटीएएस) की शुरुआत।
- पहला आरक्षण चार्ट तैयार होने के बाद बुक किए खाली बर्थों/सीटों पर आधार किराए में 10% की छूट ऑफर करना।
- फ्लैक्सी किराए वाली गाड़ियों और हमसफर गाड़ियों, जहाँ श्रेणी-वार अधिभोगिता 60% से कम है, में निर्धारित प्रस्थान से 4 दिन पहले ग्रेड-वार छूट ऑफर करना।
- द्वितीय श्रेणियों के यात्रियों की सुविधा के लिए चल रहे ऐसे शयनयान श्रेणी के सवारी डिब्बे जिसकी अधिभोगिता अपेक्षा से कम है, को किसी खंड विशेष पर द्वितीय श्रेणी के किराए पर द्वितीय श्रेणी अनारक्षित डिब्बे के साथ-साथ शयनयान श्रेणी के डिब्बों को डी-रिजर्व कर दिया जाता है।
- किसी खंड विशेष पर दिन के समय खाली चल रहे वातानुकूलित-III टीयर सवारी डिब्बों के मामले में, ऐसे वातानुकूलित-III टीयर सवारी डिब्बों को वातानुकूलित कुर्सीयान किराए पर वातानुकूलित कुर्सीयान घोषित करने की शक्तियाँ क्षेत्रीय रेलों को प्रत्यायोजित कर दी गई हैं।

मालभाड़ा क्षेत्र

- प्रमुख ग्राहकों के साथ लंबी अवधि टैरिफ अनुबंध बेंचमार्क से हटकर प्रोत्साहन देकर यातायात में वृद्धि और यातायात बनाए रखने की परिकल्पना है।
- परंपरागत खाली प्रवाह दिशा (टीईएफडी) नीति ग्राहकों को अधिसूचित स्ट्रीम में फ्रेट रियायत ऑफर करती है जिसके परिणामस्वरुप ग्राहकों और रेलवे, दोनों को परस्पर लाभ होता है।
- सामान्य प्रयोजन मालडिब्बा निवेश योजना (जीपीडब्ल्यूआईएस), उदारीकृत मालडिब्बा निवेश योजना (एलडब्ल्यूआईएस), विशेष फ्रेट रेलगाड़ी परिचालक (एसएफटीओ), और ऑटोमोबाइल फ्रेट रेलगाड़ी परिचालक (एफटीओ) जैसी योजनाएँ शुरू की गई हैं।
- कंटेनर यातायात को निम्नलिखित रूप में प्रोत्साहन दिए गए हैं:
  - खाली ढुलाई में 25% रियायत
  - फ्रेट ऑल काइंड (एफएके) ढुलाई के लिए अतिरिक्त पण्यों की अधिसूचना वापस लेना
  - मल्टीपल रेलवे रसीद (आरआर) और आरआर का इलेक्ट्रॉनिक संप्रेषण शुरू करना
- टर्मिनल एक्सेस प्रभार (टीएसी) का ड्यूल परिचालन से एकल प्रभार के रूप में यौक्तिकीकरण
- आवश्यक पण्यों, जैसे खाद्यान्न, नमक के माल किरायों को यथावत रखते हुए 1 नवम्बर, 2018 से माल भाड़ा यौक्तिकीकरण @ 8.75% रखा गया है। अन्य माल भाड़ा पण्यों, जैसे उर्वरक, सीमेंट, पीओएल को भी किसानों के हित में अर्थव्यवस्था की अवसंरचना की आवश्यकता और सामान्य मुद्रास्फीति घटकों को ध्यान में रखते हुए निम्न रखा गया है, क्योंकि ईंधन उत्पाद मूल्य का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

भारतीय रेल द्वारा क्षमता में वृद्धि संबंधी निर्माण कार्यों की दिशा में निम्नलिखित निर्माण कार्यों सहित विभिन्न पहलकदमियाँ शुरू की गई हैं:-

- समर्पित माल गलियारा, हाईस्पीड रेल, उच्च क्षमता वाले चल स्टॉक, लास्ट माइल रेल लिंकेज पोर्ट कनेक्टिविटी और बुलेट ट्रेन जैसे विभिन्न क्षमता आवर्धन कार्यों के वित्त पोषण के लिए पिछले चार वर्षों में भारतीय रेल द्वारा किए गए पूंजीगत व्यय में लगभग 42% की वृद्धि की गई है। रेलवे द्वारा पिछले चार वर्षों में किया गया पूंजीगत व्यय इस प्रकार है:

वर्ष	समग्र पूंजीगत व्यय (करोड़ रु में)
2015-16	93,519.79
2016-17	1,08,290.14
2017-18	1,01,985.47
2018-19 अनंतिम	1,33,387.05

- रेल मंत्रालय ने 81,459 करोड़ रुपये की कुल लागत पर दो समर्पित माल गलियारों की स्वीकृति दी है पूर्वी समर्पित माल गलियारा (1,856 किमी) को पास विश्व बैंक से लगभग 50% ऋण सहायता और सोननगर-दानकुनी सेक्शन (538 किमी) को सार्वजनिक निजी भागीदारी के माध्यम से कार्यान्वित किया जाना है और पश्चिमी समर्पित माल गलियारे (1,504 किमी) को वस्तुतः जापान इंटरनेशनल एजेंसी (जेआईसीए) से सॉफ्ट ऋण के माध्यम से वित्त पोषित किया गया है। 81,459 करोड़ रुपये की कुल अनुमानित लागत में से, 52,347 करोड़ रुपये विश्व बैंक और जेआईसीए से ऋण के माध्यम से मुहैया कराया जा रहे हैं। समर्पित माल गलियारा परियोजना फ्रेट और यात्री सेवाओं को अलग अलग करने, मौजूदा मार्गों पर भीड़ भाड़ कम करने, पैंसेजर सेवाओं की दक्षता में सुधार, रेलगाड़ियों की औसत गति में वृद्धि से तीव्र ट्रांजिट समय के साथ उच्च परिवहन आउटपुट में मदद करेगी। नियोजित डबल स्टैक कंटेनर रेलगाड़ियों और भारी ढुलाई वाली रेलगाड़ियों की वहन क्षमता में और वृद्धि करेगी और इस प्रकार फ्रेट में रेलवे के मार्केट शेयर को बढ़ाने में और फ्रेट परिवहन की इकाई लागत को कम करने में भी मदद करेगी।
- एक हाई स्पीड रेल परियोजना मुंबई और अहमदाबाद के बीच स्वीकृत की गई, जिसे जापानी तकनीक और परियोजना की 1,08,000 करोड़ रुपये की कुल लागत की 81% जापान की वित्तीय सहायता से कार्यान्वित किया जा रहा है। इस परियोजना की कुल लंबाई 508 किमी है इसमें 12 स्टेशन हैं। अधिकतम अनुमेय गति 350 किमी/ घंटा होगी और परिचालन गति 320 किमी/घंटा होगी। यह परियोजना वर्ष 2023 तक पूरा किए जाने की संभावना है।
- इसके अतिरिक्त, रेल मंत्रालय ने रेल संपर्क और समुद्री पत्तनों, बड़ी खदानों, लॉजिस्टिक पार्कों और अन्य उद्योग/ औद्योगिक क्लस्टर से क्षमता आवर्धन परियोजनाओं में निवेश आकृष्ट करने के लिए वर्ष 2012 में एक सहभागी मॉडल के लिए एक नीतिगत फ्रेमवर्क जारी किया है। सहभागी मॉडल के तहत् 4,000 करोड़ रुपये की 11 परियोजनाओं को कार्यान्वित किया गया है, 20,877 करोड़ रुपये की 12 परियोजनाएं कार्यान्वित की जानी हैं और 13,046 करोड़ रुपये की 7 परियोजनाओं को रेल मंत्रालय द्वारा सैद्धांतिक अनुमोदन प्रदान किया गया है। ■

प्रीमियम ट्रेनों की गति में वृद्धि

राजधानी और शताब्दी एक्सप्रेस गाड़ियों सहित भारतीय रेल पर परिचालित गाड़ी सेवाओं की गति अन्य बातों के साथ-साथ खंड की अधिकतम अनुमेय गति, सवारी डिब्बों के प्रकार, मार्गवर्ती खंडों की उपयोगिता क्षमता, सिगनलिंग और इंटरलॉकिंग प्रणाली आदि कारकों पर निर्भर करती है। इस समय, सभी राजधानी और शताब्दी एक्सप्रेस सेवाएँ मागवर्ती खंडों की अधिकतम अनुमेय गति पर परिचालित की जा रही हैं। राजधानी और शताब्दी एक्सप्रेस गाड़ियों सहित एक्सप्रेस गाड़ियों की गति बढ़ाना भारतीय रेल का निरंतर प्रयास और सतत् प्रक्रिया है।

रेल यात्रियों को अधिक आरामदायक और सुरक्षित यात्रा मुहैया कराने के अपने निरंतर प्रयास में भारतीय रेल लगभग सभी राजधानी और शताब्दी एक्सप्रेस सेवाओं को एलएचबी रेकों के साथ परिचालित कर रही है जिसमें बेहतर गति क्षमता और संरक्षा विशेषताएँ हैं। एलएचबी रेकों का बेहतर डिजाइन गाड़ी के पटरी से उतरने अथवा दुर्घटना होने के मामले में बेहतर संरक्षा उपलब्ध कराता है। इसके अतिरिक्त, सवारी डिब्बों को निर्धारित अनुरक्षण कार्यक्रम के अनुसार अनुरक्षण देने और यात्री गाड़ी सेवाओं में असुरक्षित सवारी डिब्बों को चलाने की अनुमति न देना सुनिश्चित करने के लिए प्रणालियां मौजूद हैं। रेलवे द्वारा चुनिंदा खंडों में स्वचालित गाड़ी सुरक्षा (एटीपी) प्रणाली को कार्यान्वित किया जा रहा है। इन प्रणालियों में कैब में लोको पॉयलटों के सामने डिसप्लेट मूवमेंट अथॉरिटी की सुविधा है। यह लोको पॉयलटों को धुंधली दृश्यता के दौरान भी आत्मविश्वास के साथ गाड़ी चलाने में मदद करता है। एटीपी प्रणालियों के प्रकार, जो कार्य कर रही हैं और जिनका कार्य प्रगति पर हैं:-

गाड़ी सुरक्षा और चेतावनी प्रणाली: यूरोपियन ट्रेन कंट्रोल सिस्टम लेवल-1 पर आधारित गाड़ी सुरक्षा और चेतावनी प्रणाली को भारतीय रेल पर 354 आरकेएम (मार्ग किमी) पर मुहैया कराया गया है।

सहायक चेतावनी प्रणाली (एडब्ल्यूएस): सहायक चेतावनी प्रणाली (एडब्ल्यूएस) नामक एटीपी इस समय मध्य रेल (289 आरकेएम) और पश्चिम रेल (124 आरकेएम) के मुंबई उपनगरीय खंड में काम कर रही है।

गाड़ी टक्कर बचाव प्रणाली (टीसीएएस): टीसीएएस एक ऑटोमेटिक ट्रेन प्रोटेक्शन सिस्टम है, जिसे 3 भारतीय विनिर्माताओं के सहयोग से विकसित किया जा रहा है। इस सिस्टम को दक्षिण मध्य रेलवे के लिंगमपल्लीम-विकाराबाद-वाडी, विकाराबाद-बीदर खंड (250 आरकेएम) में लगाया गया है। सभी 3 फर्मों के उत्पाद को पूर्ण ब्लॉक खंडों में 110 किमी प्रति घंटा तक गति बढ़ाने के लिए विकासात्मक आदेशों हेतु आरडीएसओ द्वारा अनुमोदित किया गया है। ■

सदस्य, सामग्री प्रबंधन द्वारा पश्चिमी क्षेत्र के भंगार निस्तारण की समीक्षा



सदस्य, सामग्री प्रबंधन, रेलवे बोर्ड, श्री वी.पी. पाठक ने पश्चिम रेलवे, मध्य रेल, पश्चिम मध्य रेलवे, तथा दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे वाले पश्चिमी क्षेत्र में भंगार निस्तारण की समीक्षा हेतु 19 जुलाई, 2019 को पश्चिम रेलवे प्रधान कार्यालय में आयोजित संयुक्त बैठक को सम्बोधित किया और विभिन्न पहलुओं की समीक्षा की। श्री पाठक द्वारा पश्चिम क्षेत्र की इन सभी क्षेत्रीय रेलों के लिए निर्धारित वरीयता क्षेत्रों की भी समीक्षा की गई।

श्री पाठक द्वारा भंगार निस्तारण में दर्ज की गई उपलब्धियों की सराहना की गई। श्री पाठक ने पश्चिम रेलवे के कारखानों तथा मंडलों में शून्य भंगार लक्ष्य सुनिश्चित करने की दिशा में की गई प्रगति हेतु पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री ए. के. गुप्ता तथा प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक श्री जे. पी. पाण्डेय की भूमिकाओं की सराहना की।

श्री पाठक ने पश्चिम रेलवे द्वारा सामग्री प्रबंधन तथा माँग की उत्पत्ति से खरीद अधिकार, टेंडरिंग, ऑर्डरिंग, बिल पासिंग, मैटीरियल एकाउंट तथा इंडेंटरों के इश्यू को पूर्णत: डिजिटलाइज करने की भी सराहना की। ■

महालक्ष्मी ईएमयू कारखाना भारतीय रेल का पहला शून्य स्क्रैप वर्कशॉप बना

रेलवे बोर्ड के सदस्य, सामग्री प्रबंधन, श्री वी.पी. पाठक और अतिरिक्त सदस्य (एमएम), श्री ओ.पी. खरे ने 20 जुलाई, 2019 को महालक्ष्मी में पश्चिम रेलवे के ईएमयू कारखाने का दौरा और निरीक्षण किया तथा महालक्ष्मी ईएमयू कारखाने को भारतीय रेलवे का 'पहला शून्य स्क्रैप कारखाना' घोषित किया।

श्री वी.पी. पाठक ने श्री ओ.पी. खरे और पश्चिम रेलवे के प्रिंसिपल चीफ मैटेरियल्स मैनेजर श्री जे.पी. पांडेय के साथ महालक्ष्मी ईएमयू कारखाने का दौरा किया, जिसमें उन्होंने विभिन्न शॉप्स का निरीक्षण किया और सामग्री के स्क्रैप और स्टैकिंग के निपटान में कार्यशाला द्वारा किये गये कार्यों की सराहना की। 2018-19 के दौरान वर्कशॉप ने 450.066 एमटी फेरस स्क्रेप और 77 पुराने ईएमयू कोच का निस्तारण किया, जबकि वर्तमान वर्ष (19 जुलाई, 2019 तक) में 150 एमटी और 12 पुराने ईएमयू कोच के निपटान के लक्ष्य के मुकाबले 248.021 एमटी का निपटान किया गया। श्री पाठक ने महालक्ष्मी कारखाने द्वारा इसे शून्य स्क्रैप कार्यशाला बनाने के लिए किए गए प्रयासों की सराहना की और इस उपलक्ष्य में रुपये 25,000 के पुरस्कार की घोषणा की। महालक्ष्मी ईएमयू वर्कशॉप ने फैरस और नॉन फैरस सामग्री को अलग करके और सामग्रियों को प्रत्येक सेक्शन में प्रदान किए गए अलग-अलग डिब्बे में रखकर यह उपलब्धि हासिल की और सभी वर्गों से स्क्रैप इकट्ठा करने के बाद इसे आगे निपटान



के लिए भंडार विभाग को सौंप दिया गया। कार्यशाला ने महाराष्ट्र सरकार और एनजीटी 2016 के एमपीसीबी मानदंडों को बनाए रखा है। यह वास्तव में पश्चिमी रेलवे के लिए एक गौरवपूर्ण उपलब्धि है कि इसकी कार्यशाला ने पूरे भारतीय रेल में पहली 'जीरो स्क्रैप कार्यशाला' होने का खिताब हासिल किया है और यह अद्वितीय उपलब्धि महालक्ष्मी कार्यशाला के कर्मचारियों के उत्कृष्ट टीम प्रयासों के साथ-साथ पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री ए.के. गुप्ता के कुशल एवं ऊर्जावान नेतृत्व तथा निरंतर प्रोत्साहन एवं उत्साहजनक प्रेरणा की बदौलत सम्भव हो पाई है। ■

सदस्य, रोलिंग स्टॉक ने रायपुर वैगन रिपेयर शॉप, बीएमवाय, पीपी यार्ड का निरीक्षण किया

27 जुलाई को रायपुर रेल मंडल में श्री राजेश अग्रवाल सदस्य, रोलिंग स्टॉक, रेलवे बोर्ड ने वैगन रिपेयर शाप (डब्ल्यूआरएस) का निरीक्षण किया। इस दौरान डब्ल्यूआरएस के फ्लो चार्ट से पूरे डब्ल्यूआरएस के इंफ्रास्ट्रक्चर एवं वैगनो के रख-रखाव का अवलोकन किया वहां बन रहे नये बॉडी शॉप स्थल का ड्रॉइंग से मिलान किया। डब्ल्यूआरएस के सुरक्षा मानकों, मशीनों की तकनीकी बारीकियों पर अधिकारियों, सुपरवाइजरों-कर्मचारियों से जानकारी ली वैगन के विभिन्न प्रकार बॉक्स एन, बीओबीआर एन, में लगने वाले बफर, बोगी, व्हील, बेअरिंग, कलपुर्जो, टूल्स, ब्रैकिंग सिस्टम बीएमबीसी के परीक्षण के तौर-तरीके का निरीक्षण किया तथा व्हील को टर्निंग में उपयोग आने वाली वर्टीकल टर्निंग मशीन एवं 1 मेगा वाट रूफटॉप सोलर पॉवर प्लांट का शुभारंभ किया।

तत्पश्चात पीपीयार्ड भिलाई का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होनें वैगन पार्क का उद्घाटन, हर्बल पार्क में वृक्षारोपण, यार्ड (लाईन 4-5) का निरीक्षण, आरओएच डिपो के ट्रॉली अनुभाग का निरीक्षण एवं कंप्रेसर का उद्घाटन किया।

डब्ल्युआरसी/बी एम वाई में निरीक्षण किया इस दौरान उन्होनें वृक्षारोपण किया। सक्षम-2 के तहत् आधुनिक रूप से सुसज्जित कर्मचारी प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन किया। सक्षम ट्रेनिंग बुक का विमोचन किया, एक हाइड्रा का मशीन का शुभारम्भ किया। पुनर्वास केंद्र का निरीक्षण किया। डबल्युआरसी



फेज-2 शेड का उद्घाटन किया।

श्री राजेश अग्रवाल ने पीपीयार्ड भिलाई के हर्बल पार्क, वैगन पार्क की खुले दिल से तारीफ की उसे भारतीय रेल में विशेष स्थान दिलाये जाने स्मार्ट यार्ड बनाये जाने पर जोर दिया ऊर्जा संरक्षण को बढ़ाने, तकनीकी कौशल को बढ़ाने, उपलब्ध साधन-संसाधनों में ज्यादा से ज्यादा आउट पुट देने पर जोर दिया। इस दौरान श्री राजेश अग्रवाल, सदस्य, रोलिंग स्टॉक, रेलवे बोर्ड के साथ ईडीएमई / फ्रेट रेलवे बोर्ड, श्री अजय नंदन, मंडल रेल प्रबंधक श्री कौशल किशोर, मुख्य कारखाना प्रबंधक श्री प्रदीप काम्बले, अपर मंडल रेल प्रबंधक (ओपी) श्री अमिताव चौधरी सहित रेलवे के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। ■

सदस्य, कर्षण द्वारा साबरमती डीजल लोको केयर सेन्टर का दौरा



रेलवे बोर्ड के सदस्य, कर्षण श्री राजेश तिवारी ने अपने प्रवास के दौरान अहमदाबाद स्टेशन तथा साबरमती डीजल लोको केयर सेन्टर का निरीक्षण किया। अहमदाबाद में उन्होंने स्टेशन रिडेवलपमेन्ट प्रोजेक्ट की प्रगति की समीक्षा की तथा स्थानीय अधिकारियों से चर्चा की। साबरमती डीजल लोको केयर सेन्टर में उन्होंने रेम्मलोट व पावर एसेम्बली सेक्शन सहित विभिन्न क्षेत्रों का दौरा किया। वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर साबरमती श्री अभिषेक कुमार सिंह ने उन्हें साबरमती डीजल लोको केयर सेन्टर की कार्य प्रणाली से अवगत कराया तथा लोको मेन्टेनेन्स प्रक्रिया की जानकारी दी। इस अवसर पर श्री तिवारी द्वारा वृक्षारोपण भी किया गया तथा शेड के कर्मचारियों व उनके परिजनों को भी वृक्षारोपण अभियान में जुड़ने का आह्वान किया। इस अवसर पर उनके द्वारा शेड द्वारा किये गये नवीन प्रयोग पर पुस्तिका का भी विमोचन किया गया। श्री तिवारी नें शेड में किये गये रचनात्मक कार्यों की सराहना की।

साबरमती के रेल विद्युतीकरण कार्यालय में उन्होंने मुख्य परियोजना निदेशक श्री श्याम सुन्दर मंगल व अधिकारियों के साथ गुजरात में चल रहे रेल विद्युतीकरण परियोजनाओं की समीक्षा की तथा कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिये।

इस दौरान उनके साथ रेलवे बोर्ड के एक्जीक्युटिव डायरेक्टर (रेल विद्युतीकरण) श्री बी.एस. बोध, प्रमुख मुख्य बिजली इंजीनियर श्री संजीव भूटानी, मंडल रेल प्रबंधक श्री दीपक कु. झा सहित वरिष्ठ अधिकारी भी थे। ■

श्री पूर्णेन्दु मिश्रा रेलवे बोर्ड के सदस्य, यातायात नियुक्त



भारतीय रेल यातायात सेवा (आईआरटीएस) के 1982 बैच के अधिकारी श्री पूर्णेन्दु एस. मिश्रा ने रेलवे बोर्ड के नए सदस्य यातायात और भारत सरकार के पदेन सचिव का कार्यभार 17 जुलाई को संभाल लिया। इससे पूर्व आप दक्षिण पूर्व और पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक थे।

श्री मिश्र विभिन्न क्षमताओं में जैसे महाप्रबंधक (पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर), प्रमुख कार्य प्रबंधक (पश्चिम रेलवे, मुम्बई), सलाहकार (सुरक्षा), कार्यकारी निदेशक (कॉरपोरेट समन्वयक), रेलवे बोर्ड, मंडल रेल प्रबंधक, रायपुर, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे और मुख्य परिवहन योजना प्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे में कार्य कर चुके हैं। इसके अलावा श्री मिश्रा पूर्व तट रेलवे और पूर्व मध्य रेलवे में मुख्य माल ढुलाई प्रबंधक, मुख्य परिवहन योजना प्रबंधक और मुख्य यात्री परिवहन प्रबंधक रह चुके हैं। श्री मिश्रा विदेश में विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल हो चुके हैं। इनमें पीट्सबर्ग अमेरिका में एडवांस्ड लीडरशिप प्रोग्राम और एडवांस्ड स्ट्रेटेजी मैनेजमेंट प्रोग्राम तथा दक्षिण अफ्रीका में लॉन्ग हॉल ऑपरेशन शामिल है। श्री मिश्रा की खेलों और कल्याणकारी कार्यों में काफी रूचि है। ■

हमारे नये सदस्य कर्षण, रेलवे बोर्ड: श्री राजेश तिवारी



भारतीय रेल विद्युत इंजीनियर सेवा (1981 बैच के अधिकारी श्री राजेश तिवारी ने 17 जुलाई, 2019 को सदस्य कर्षण, रेलवे बोर्ड (भारत सरकार के पदेन सचिव) का कार्यभार संभाल लिया है।

श्री तिवारी विभिन्न क्षेत्रीय रेलों तथा उत्पादन इकाइयों जैसे मध्य, उत्तर मध्य, पूर्व मध्य, दक्षिण पूर्व मध्य, पूर्व तट एवं उत्तर रेलवे, कोर, आरडीएसओ एवं डीएलडब्ल्यू में वरिष्ठ पदों पर कार्य किया है। आपने महाप्रबंधक, उत्तर पश्चिम रेलवे, अपर महाप्रबंधक, उत्तर रेलवे, मंडल रेल प्रबंधक, सोनपुर इत्यादि बेहद महत्त्वपूर्ण पदों पर अपना योगदान दिया है। आपको गाड़ी परिचालन, रखरखाव एवं सामान्य प्रशासन का बृहद अनुभव है।

आपने प्रसिद्ध मोतीलाल नेहरू इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी इलाहाबाद से विद्युत इंजीनियरिंग में बी.ई. की डिग्री हासिल की है। आपने जापान, जर्मनी, युनाईटेड किंगडम, स्वीडन, डेनमार्क एवं यूएसए में विभिन्न शासकीय असाइनमेंट में प्रशिक्षण लिया है। ■

उत्तर पश्चिम रेलवे में ई-ऑफिस की शुरुआत



श्री राजेश तिवारी, तत्कालीन महाप्रबंधक, उत्तर पश्चिम रेलवे ने 5 जुलाई को जोधपुर मंडल से प्राप्त ई-फाइल पर अनुमोदन प्रदान कर उत्तर पश्चिम रेलवे पर ई-ऑफिस की शुरुआत की। उत्तर पश्चिम रेलवे, भारतीय रेल पर दक्षिण मध्य रेलवे तथा उत्तर रेलवे के बाद ई-ऑफिस की शुरुआत करने वाला तीसरा जोन बन गया है। श्री राजेश तिवारी, महाप्रबंधक, उत्तर पश्चिम रेलवे ने ई-ऑफिस की शुरुआत करते हुए कहा कि इसके लिये इस रेलवे के सभी रेलकर्मी बधाई और धन्यवाद के पात्र हैं तथा दक्षिण मध्य रेलवे व रेलटेल के कर्मचारियों को भी धन्यवाद दिया, जिन्होंने इस रेलवे पर प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन किया।

उत्तर पश्चिम रेलवे पर ई-ऑफिस के प्रथम चरण में मुख्यालय व जोधपुर मंडल पर इस प्रणाली की शुरुआत की गई है तथा आगामी 6 माह में सभी मंडलों पर इसे लागू करने का लक्ष्य तय किया गया है। ■



स्वच्छ डीरेका - हरित डीरेका

रश्मि गोयल
महाप्रबंधक, डीजल रेल इंजन कारखाना



डीरेका में डीजल से विद्युत में रूपांतरित प्रथम रेल इंजन को झंडी दिखाकर रवाना करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

स्व. लाल बहादुर शास्त्री द्वारा 3 जनवरी, 1964 को डीजल रेल इंजन कारखाना (डीरेका) निर्मित प्रथम डीजल-विद्युत रेल इंजन को राष्ट्र को समर्पित करने के साथ अपनी शुरुआत करने वाले डीरेका ने वर्तमान में विश्व के अग्रणी डीजल रेल इंजन निर्माताओं में विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया है। डीरेका इस समय विश्व का दूसरा सबसे बड़ा डीजल विद्युत रेल इंजन निर्माता है। विभिन्न अंतरराष्ट्रीय रेल प्रणालियों द्वारा प्रयोग किये जा रहे मल्टी-गेज के रेल इंजन बनाने में सक्षम डीरेका ने एशिया और अफ्रीका में महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया है। डीरेका द्वारा निर्मित रेल इंजन बांग्लादेश, श्रीलंका, म्यांमार, तंजानिया, सूडान, सेनेगल, माली, मलेशिया, वियतनाम, अंगोला और मोजाम्बिक में दौड़ रहे हैं। अपने देश में भारतीय रेल के लिए मोटिव पॉवर प्रदाता होने के साथ-साथ डीरेका विभिन्न स्टील प्लांटों, पॉवर प्लांटों और पोर्ट ट्रस्टों को भी रेल इंजनों की आपूर्ति कर रहा है।

डीरेका ने डबल्यूएपी-7 कोटि के विद्युत लोकोमोटिव का उत्पादन प्रारम्भ कर दिया है। लोको संख्या 30509-वरुणा, को कोचिंग सेवा के लिए 14 फरवरी, 2017 को निर्मित कर दिया गया है। वर्ष 2016-17 में डीरेका ने विद्युत रेल इंजन निर्माण की यात्रा शुरू की और तब से पीछे मुड़कर नहीं देखा। कार्बन फुटप्रिंट कम करने एवं पर्यावरण के अनुकूल ट्रैक्शन उपलब्ध कराने की दृष्टि से डीरेका अब भारतीय रेल के लिए डीजल रेल इंजनों का निर्माण नहीं करेगा। वित्त वर्ष 2018-19 में 145 विद्युत लोको का निर्माण सफलता पूर्वक किया गया एवं इन्हें राष्ट्र के नाम समर्पित किया गया। विश्व इतिहास में पहली बार चार डीजल लोकोमोटिव को उच्च कर्षण शक्ति वाले विद्युत लोकोमोटिव में परिवर्तित कर राष्ट्र के नाम समर्पित किया गया। इस तरह के पहले ट्विन लोको का लोकार्पण प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के करकमलों द्वारा 19 फरवरी, 2019 को किया गया।

पुरातन शहर वाराणसी में स्थित डीरेका इस क्षेत्र की एक अग्रणी औद्योगिक इकाई है, जो अपनी सामुदायिक साझेदारी के साथ-साथ पवित्र गंगा नदी की स्वच्छता के लिए भी जागरूक है। पर्यावरणीय संरक्षण में सदैव अग्रणी डीरेका ने 1980 के दशक से पर्यावरणीय संरक्षण के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण एवं अग्रणी भूमिका का निर्वाह करते हुए मानव जनित मल-मूत्र के शोधन के लिए मल-जल शोधन संयंत्र (एस.टी.पी.) और संदूषित तथा मिश्रित पेट्रोलियम ऑयल एवं लुब्रिकेंट (पी.ओ. एल.) के लिए औद्योगिक निस्राव शोधन संयंत्र (आई.ई.टी.पी.) की स्थापना की है।

उक्त संयंत्रों ने 'गंगा निर्मलीकरण योजना' में सहयोग करने के साथ ही संसाधनों की रिसाइक्लिंग में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। एस.टी.पी. में प्रतिदिन लगभग 3 मिलियन लीटर जल का शोधन किया जाता है। शोधित जल को कृषि कार्य एवं बागवानी के उपयोग में लाया जाता है। डीरेका को गर्व है कि यहाँ से किसी भी प्रकार का शोधित अथवा अशोधित मल-जल पवित्र गंगा में नहीं छोड़ा जाता। इससे जो सूखी पंक प्राप्त होती है, उसका उपयोग उर्वरक के रूप में बागवानी में किया जाता है। एस.टी.पी. और आई.ई.टी.पी. के मानकों की ऑनलाइन निगरानी की जाती है और यह सुनिश्चित किया जाता है कि ये केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा दिए गए मानकों के अनुरूप रहें।

यथासंभव यह प्रयास किया जाता है कि जल, वायु, हानिकारक कचरे तथा निकलने वाले धुएँ इत्यादि के विभिन्न पैरामीटर निर्धारित मानकों के अनुरूप रहें। डीरेका को वर्ष 2001 में पर्यावरण प्रबंधन प्रणाली के लिए आई.एस.ओ.:14001 प्रमाणन प्राप्त हुआ है। इस प्रमाणन के फलस्वरूप डीरेका को कारखाना एवं उपनगर, दोनों स्थानों पर पर्यावरण संरक्षण हेतु सुपरिभाषित एवं लिखित नीति तैयार करने में मदद मिली है।

डीरेका स्वच्छ पर्यावरण के प्रति अपने प्रयासों के लिए प्रतिबद्ध है। पुन:प्रयोगी जल शोधन संयंत्र लगाकर डीरेका ने एक उल्लेखनीय कार्य किया है। पुन: प्रयोग के लिए प्रतिदिन 0.25 मिलियन लीटर जल शोधन की क्षमता वाले 2 पुन:प्रयोगी

जल शोधन संयंत्र लगाने हेतु डीरेका प्रक्रियारत है। पुन:प्रयोगी जल के पीने योग्य पानी की तरह ही निर्मल होने का दावा किया जाता है। टिकाऊ जल प्रबंधन के अंतर्गत पुन:प्रयोगी जल का उपयोग मानव गतिविधियों के लिए वैकल्पिक जल स्रोतों के रूप में बना रहेगा।

प्रचलित एनर्जी ऑडिट, ऊर्जा खपत की जांच एवं विश्लेषण के अतिरिक्त डीरेका में ऊर्जा की खपत को कम करने के दृष्टिकोण से ऊर्जा दक्षता में सुधार हेतु उपायों की भी संस्तुति करेगा।

ऊर्जा संरक्षण की दिशा में कदम बढ़ाते हुए, गैर परंपरागत ऊर्जा स्रोतों के लाभों को प्राप्त करने हेतु डीरेका ने ग्रिड कनेक्टेड सोलर पॉवर पैनल की स्थापना की तरफ महत्त्वपूर्ण कदम बढ़ाया है। वर्तमान में डीरेका ने विभिन्न स्थानों पर 1.86 मेगावॉट पॉवर के ग्रिड कनेक्टेड सोलर पॉवर संयंत्र स्थापित किये हैं।



वर्ष 2018 में डीरेका को लगातार तीसरी बार 'सर्वोत्तम उत्पादन इकाई' शील्ड प्रदान करते हुए रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल एवं तत्कालीन मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश श्री शिवराज सिंह चौहान

वर्ष 2017-18 के दौरान 1.86 मेगावॉट क्षमता को संयंत्र स्थापित किया जा चुका है और वर्तमान वित्तीय वर्ष में 2 मेगावॉट अतिरिक्त- क्षमता का संस्थापन प्रक्रियाधीन है। वर्ष 2017-18 तक डीरेका के आवासों एवं सेवा भवनों में 12,060 ऊर्जा दक्ष एल.ई.डी. उपकरण लगाए गए हैं।

डीरेका ऐसी पहली उत्पादन इकाई है, जहाँ ऊर्जा खपत एवं अनुकूल ऊर्जा प्रयोग की निगरानी के लिए स्काडा (एस.सी.ए.डी.ए.) प्रणाली को सामान्य सेवाओं के रूप में स्थापित किया गया है। उल्लेखनीय है कि डीरेका को उत्कृष्ट ऊर्जा संरक्षण के लिए आई.एस.ओ.: 50001 प्रमाणन प्राप्त है।

डीरेका कर्मियों को अपने आवासों में ऊर्जा दक्ष लाइट लगाने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया है। डीरेका भारतीय रेल का पहला संगठन है, जो अपने कर्मचारियों के बीच ऊर्जा दक्ष एल.ई.डी. लैम्प के वितरण में अग्रणी रहा है। डीरेका के 4,200 से अधिक कर्मचारियों को 50,000 से अधिक 7 वॉट वाले एल.ई.डी. लैम्पों का वितरण किया जा चुका है। डीरेका द्वारा किए गए इस कार्य का अनुकरण करते हुए भारतीय रेल की अन्य इकाइयों ने भी इसे अपनाना शुरू किया है। पंप ऑटोमेशन सहित मोटराइज्ड गेट वॉल्व का प्रयोग डीरेका द्वारा ऊर्जा की खपत में कमी लाने की दिशा में दूसरा कदम है। इस प्रणाली में सुधार से न केवल बहुमूल्य जल की बचत हुई, बल्कि पम्पिंग के समय में भी दो घंटे की कमी आई है।

विभिन्न उपायों से डीरेका विगत वर्षों में जल की खपत को कम करने में सफल रहा और वर्तमान समय में डीरेका में जल की खपत लगभग 12 मिलियन लीटर प्रतिदिन है। जल को एक मूल्यवान स्रोत मानते हुए एस.टी.पी. से शोधित जल को उद्यानों, क्रीड़ांगनों, हरित स्थलों की सिंचाई एवं जलीय स्थलों को भरने के काम में लिया जाता है।



मल-जल शोधन संयंत्र



औद्योगिक निस्राव शोधन संयंत्र





डीरेका परिसर में सौर ऊर्जा उपकरण

डीरेका भूमिगत जल को रीचार्ज करने हेतु 425 सोकपिट और 47 डीप रिचार्ज वेल के निर्माण के साथ वॉटर हार्वेस्टिंग के लिए प्रतिबद्ध है।



रिचार्ज वेल एवं सोकपिट

प्रधानमंत्री का 'स्वच्छ भारत अभियान' वातावरण को प्रदूषण मुक्त बनाए रखने का एक सशक्त माध्यम है। स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत डीरेका कर्मशाला, उपनगर, कार्यालयों तथा चिकित्सालयों में सघन स्वच्छता अभियान चलाए जा रहे हैं। डीरेका प्रांगण को साफ-सुथरा बनाए रखने के लिए सभी अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके परिजनों के साथ-साथ नागरिक सुरक्षा, भारत स्काउट्स एवं गाइड्स तथा सेंट जॉन्स एम्बुलेंस ब्रिगेड के सदस्य इस अभियान में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

डीरेका स्क्रैप की बिक्री में अग्रणी रहा है। वर्ष 2018-19 के दौरान रुपये 10.91 करोड़ की स्क्रैप बिक्री का रिकार्ड दर्ज किया गया, जो स्वच्छता सुनिश्चित करने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

डीरेका अपने रेल इंजनों में भी हरित ऊर्जा का प्रयोग कर रहा है। ऑग्जिलरी पॉवर यूनिट (ए.पी.यू.) एवं होटल लोड फीचर्स ने डीजल की खपत को कम किया है। फलस्वरूप, मौजूदा उत्सर्जन में अत्यधिक कमी आई है। इलेक्ट्रॉनिक फ्यूल इंजेक्शन सिस्टम के प्रयोग से भी डीजल रेल इंजनों का उत्सर्जन कम होगा और इसके द्वारा कार्बन फुट प्रिंट में कमी आएगी।

वर्तमान में डीरेका परिसर में 1,50,000 से अधिक छोटे एवं बड़े वृक्ष हैं, जिससे डीरेका में लगभग 40% क्षेत्र हरा-भरा दृष्टिगोचर होता है। सम्पूर्ण परिसर में प्रतिवर्ष हजारों वृक्षों का रोपण किया जाता है। वर्ष 2018-19 में डीरेका में 5,200 से अधिक वृक्ष लगाये गए। 'स्वच्छ डीरेका, हरित डीरेका' हेतु 'टीम डीरेका' के तत्संबंधी प्रयासों के फलस्वरूप यहाँ का वातावरण चहुं ओर न केवल हरा-भरा है, बल्कि जल, वायु, उत्सर्जन एवं हानिकारक कचरे का प्रदूषण स्तर भी सीमा के अंदर है। डीरेका का हरा-भरा परिसर स्वयं ही इस उपनगर के निवासियों की पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता एवं प्रतिबद्धता को दर्शाता है। डीरेका परिसर में प्रवेश करते ही तापमान में 3-4 डिग्री सेल्सियस की गिरावट स्पष्टतया महसूस होती है। यह पर्यावरण की समझ और इसके प्रति सम्मान का भाव है, जो डीरेका को हरित, स्वच्छ तथा स्थाई भविष्य के लिए निरंतर प्रोत्साहित करता है।

डीरेका की उपलब्धियों में एक और महत्त्वपूर्ण कड़ी उस समय जुड़ गई, जब सी.आई.आई.-गोदरेज ग्रीन बिजनेस सेंटर (सी.आई.आई.-गोदरेज जी.बी.सी.) ने डीरेका को पर्यावरण संरक्षण के लिए ग्रीन-को सिल्वर का दर्जा प्रदान किया। उपर्युक्त तथ्यों से विदित है कि डीरेका स्वच्छ, हरित एवं सतत् पर्यावरण के प्रति समर्पित है। ■



हरा-भरा एवं स्वच्छ डीरेका परिसर



वर्तमान में सूरत स्टेशन का दृश्य



बेहतर यात्री सुविधाओं के संग सूरत स्टेशन को मल्टी-मॉडल ट्रांसपोर्टेशन हब बनाने की महत्त्वपूर्ण योजना

गुजरात राज्य के सूरत शहर को पूरी दुनिया में हीरा उद्योग के साथ-साथ इसके प्रसिद्ध वस्त्र उद्योग के लिए भी जाना जाता है। सूरत रेलवे स्टेशन इस व्यस्त शहर को रेल मार्ग से जोड़ता है तथा यह व्यस्ततम रेलवे स्टेशनों में से एक है। मुंबई-दिल्ली रेल कॉरिडोर पर स्थित यह एक प्रमुख स्टेशन है तथा यहाँ से उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चिम भारत की तरफ आने एवं जाने वाली ट्रेनें गुजरती हैं। इस स्टेशन से 150 से अधिक पैसेंजर ट्रेनें गुजरती हैं, जिनमें से 21 ट्रेनें यहाँ से शुरू/समाप्त होती हैं। अत: सूरत स्टेशन पर रोजाना औसतन 45 ट्रेनों का परिचालन होता है। ट्रेनों के इन आंकड़ों में माल यातायात को नहीं दर्शाया गया है, जिनकी तादाद भी काफी अधिक है। वर्तमान में यात्रियों की यात्रा को सुखद बनाने के लिए सूरत स्टेशन पर पैदल ऊपरी पुल, सब-वे, पुरुषों एवं महिलाओं के लिए प्रतीक्षालय, विश्राम-कक्ष, बाथिंग क्यूबिकल, सभी स्टेशन परिसरों में बैठने की व्यवस्था, वॉटर कूलर, फूड प्लाजा, आपातकालीन चिकित्सा कक्ष आदि सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

मुंबई मंडल के दोहरीकृत एवं विद्युतीकृत उधना-जलगाँव खंड के शुरू होने के एक वर्ष के दौरान सूरत स्टेशन को मुख्यत: यात्री एवं माल यातायात से काफी लाभ पहुँचा है। गुजरात के सूरत जिले के उधना तथा उत्तरी महाराष्ट्र के जलगाँव जिले को जोड़ने वाली 307 किमी लम्बी इस दोहरीकरण परियोजना से इस रेल खंड के अंतर्गत आने-वाले क्षेत्रों के विकास में वृद्धि हो रही, जिसके अंतर्गत कुल 44 स्टेशन, 380 पुल, 31 पैदल ऊपरी पुल, 101 प्लेटफॉर्म हैं।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री रविंद्र भाकर के अनुसार, पश्चिम रेलवे यात्रियों के यात्रा अनुभव को अधिक सुखद, सुविधाजनक और आरामदेह बनाने के लिए हरसम्भव प्रयास कर रही है। सूरत स्टेशन के पुनर्विकास और निर्बाध कनेक्टिविटी प्रदान करने के उद्देश्य से एकीकृत हब के अंतर्गत बस टर्मिनल, मेट्रो, ऑटो रिक्शा और प्राइवेट वाहनों जैसी सेवाओं की संयुक्त सुविधा वाले मल्टी-मॉडल ट्रांसपोर्टेशन हब (एमएसमटीएच) का विकास करना इस दिशा में ऐसा ही एक कदम है। यह अत्याधुनिक एमएमटीएच रेलवे, गुजरात राज्य सड़क परिवहन निगम और सूरत महानगरपालिका तीनों से भूमि अधिग्रहण करके 3,40,131 वर्ग मीटर भूमि पर बनाया जाएगा।

भारत में यह अपनी तरह की पहली परियोजना है, जिसमें केंद्र, राज्य और स्थानीय नगरपालिका को एक साथ जोड़ा गया है। रिक्त पड़ी रेल भूमि और एयर स्पेस पर 90 वर्षों की लीज अवधि के लिए लीज होल्डर राइट्स के तहत वाणिज्यिक विकास के जरिए स्टेशन का पुनर्विकास किया जाएगा। इस हब से वर्ष 2033 तक प्रतिदिन लगभग 4 लाख यात्रियों को और वर्ष 2053 तक प्रतिदिन लगभग 5 लाख 25 हजार यात्रियों को ये सभी सेवाएँ प्राप्त होने की उम्मीद है। वर्तमान में स्टेशन का निर्मित क्षेत्र लगभग 36,950 वर्ग मीटर



प्रस्तावित सूरत स्टेशन का दृश्य

है और पुनर्विकास के पश्चात् यह क्षेत्र लगभग 1,01,750 वर्ग मीटर तक हो जायेगा।

श्री भाकर ने बताया कि इंडियन रेलवे स्टेशन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन, गुजरात स्टेट रोड ट्रांसपोर्ट कॉर्पोरेशन तथा सूरत म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन द्वारा 'सूरत इंटिग्रेटेड ट्रांसपोर्टेशन कम्पनी' नामक एक विशेष उद्देश्य कम्पनी का गठन किया गया है। सूरत स्टेशन की स्टेशन पुनर्विकास परियोजना अपने भौगोलिक एवं आर्थिक महत्त्व के कारण सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण परियोजनाओं में से एक है। पुनर्विकास परियोजना के अंतर्गत रेलवे स्टेशन भवन लगभग 55,374 वर्ग मीटर में बनाया जाएगा। कॉनकोर्स के प्रत्येक ओर 100 मीटर तक मौजूद सभी रेलवे ट्रकों के ऊपर 16,400 वर्ग मीटर की स्पेस फ्रेम रूफिंग और लगभग 10,800 वर्ग मीटर तक प्लेटफॉर्म शेल्टर रूफिंग की जाएगी। लगभग 4 हजार वर्गमीटर के प्लेटफॉर्म फर्श पर ग्रेनाइट लगवाया जाएगा।

पुनर्विकास कार्य के पश्चात् स्टेशन पर पार्किंग के लिए लगभग 750 इक्विवेलेंट कार स्पेस (ईसीएस) की आवश्यकता होगी। (मल्टीलेनल कार पार्किंग में 439 ईसीएस और सर्फेस पार्किंग एरिया में 311 ईसीएस)। यह पार्किंग व्यवस्था स्टेशन भवन के पूर्व-पश्चिम छोर के नजदीक की जाएगी। मौजूदा सब-वे और मौजूदा स्टेशन भवन का भूतल पार्सल सेवाओं के लिए उपयोग में लाया जाएगा। रेलवे स्टेशन, बस टर्मिनल और वाणिज्यिक क्षेत्र के मध्य स्काईवॉक की कनेक्टिविटी 4,290 वर्ग मीटर की होगी। सूरत एमएमटीएच में कुल 90 एस्केलेटर और 30 एलीवेटर्स का निर्माण किया जाएगा।

इनके साथ-साथ यात्रियों के आने-जाने की व्यवस्था भी अलग-अलग की जाएगी, जिससे एमएमटीएच पर भीड़ प्रबंधन करने में उल्लेखनीय रूप से सहायता मिलेगी। प्रतीक्षालयों एवं यात्रियों के बैठने की व्यवस्था आदि को दूसरी मंजिल पर स्थानांतरित किया जाएगा तथा शौचालय, टिकट काउंटर, पूछताछ काउंटर, क्लॉक रूम, पार्सल सुविधा, चिकित्सा कक्ष, प्रीपेड टैक्सी एवं सुरक्षा बल कक्ष आदि जैसी सुविधाओं को भी उच्च दर्जे तक अपग्रेड किया जाएगा। स्टेशन भवन के अग्रभाग में पर्याप्त सुधार किया जाएगा। साथ ही, विचरण क्षेत्र में भी इस प्रकार से सुधार कार्य किया जाएगा, जिससे दैनिक यात्रियों की उचित रूप से आवाजाही सुनिश्चित हो सके। स्टेशन क्षेत्र की समुचित प्रकाश व्यवस्था के लिए लाइटिंग टॉवर लगाया जाएगा और सभी प्लेटफॉर्मों के लिए आधुनिक एवं लागत प्रभावी प्रकाश व्यवस्था भी की जाएगी। वॉटर बूथों एवं पे एंड यूज शौचालयों का भी नवीकरण किया जाएगा। यात्रियों की सुविधा एवं आराम के लिए प्रतीक्षालयों एवं विश्रामालयों में आधुनिक एवं आरामदेह फर्नीचरों की व्यवस्था की जाएगी।

यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो, इस दृष्टि से उनके मार्गदर्शन के लिए साइनेज एवं कोच इंडिकेशन वाला पैसेंजर गाइडेंस सिस्टम भी लगाया जाएगा। बेहतर प्रकाश व्यवस्था एवं बुकिंग खिड़कियों के सामने यात्रियों की कतार के लिए पर्याप्त स्थान की व्यवस्था करते हुए बुकिंग कार्यालयों एवं पूछताछ कार्यालयों में भी उचित बदलाव किए जएँगे। सूरत एमएमसीएच को मॉडर्न फिक्सचर्स एवं आर्ट के जरिए सुसज्जित किया जाएगा, जिसके लिए वास्तुविदों एवं परामर्शदाताओं की सेवाएं ली गई हैं। सूरत स्टेशन की सम्पूर्ण पुनर्विकास परियोजना भविष्य में रेलों के आधुनिकीकरण एवं प्रगति की दिशा में पश्चिम रेलवे के लिए एक नया मील का पत्थर साबित होगी। ■

जंगली हाथियों को बचाने के लिए पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के प्लान 'बी' को मिला नवोन्मेष पुरस्कार





पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के रंगिया मंडल के अंतर्गत आजारा और कामाख्या स्टेशन के बीच हाथियों को बचाने के लिए लेवल क्रॉसिंग गेट एनएन-274 पर स्थापित पहला हनी 'बी' ध्वनि प्रवर्धित उपकरण

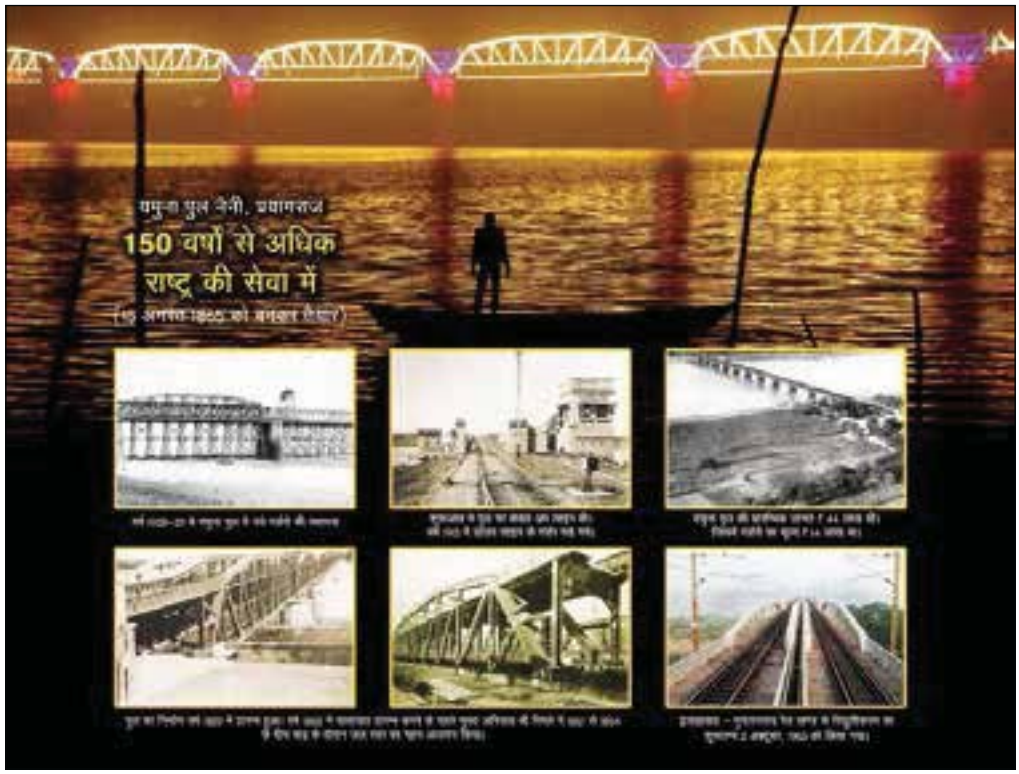
जंगली हाथियों को मधु मक्खियों की भिन्नभिनाहट की प्रवर्धित ध्वनि को बजाकर रेलवे ट्रैक को पार करने की गतिविधियों से दूर रखने की पूर्वोत्तर सीमा रेलवे द्वारा विकसित प्रणाली ने वर्ष 2018-19 के लिए भारतीय रेल में सर्वश्रेष्ठ नवोन्मेष पुरस्कार जीता है। प्रथम पुरस्कार में 3 लाख रुपये नकद के साथ प्रशस्तिपत्र शामिल है।

पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के ट्रैक का एक बड़ा हिस्सा वन भूमि के विशाल क्षेत्रों से गुजरता है, जो हाथियों सहित विभिन्न जंगली जानवरों का निवास है। पूर्वोत्तर सीमा रेलवे में ट्रेन की टक्कर से हाथियों की मौत एक गंभीर समस्या है, जो रेलगाड़ियों की पटरियों के आस-पास के क्षेत्र में हाथी आबादी के लिए खतरा है। यद्यपि हाथियों की सुरक्षा के लिए 29 गलियारे चिह्नित किए गए हैं, जहाँ गाड़ियों की गति धीमी रखी जाती है और गति प्रतिबंधों का पालन करने के लिए ड्राइवरों को संकेत निर्धारित किए जाते हैं। हाथी गैर-गलियारे क्षेत्रों में भी गाड़ियों के मार्ग में कदम रखते हैं, जिसके कारण दुर्घटनाओं में उनकी मौत हो जाती हैं। वर्ष 2013 से जून, 2019 तक ट्रेन की टक्कर से कुल 67 हाथी मरे, जबकि असम में हाथियों की संख्या करीब 5,620 है और कुछ हजार उत्तर बंगाल के डुआर्स क्षेत्र में हैं।

समस्या से निपटने के लिए वन विभाग के काउंटर पार्ट के परामर्श से पटरियों पर हाथियों को पीछे हटाने के लिए कुछ निवारकों का उपयोग कर 'आइडिया ओस' पर काम किया गया। तत्कालीन मंडल रेलवे प्रबंधक, श्री रवीश कुमार ने एक टीम बनाई, जिसमें अतिरिक्त मंडल रेलवे प्रबंधक, श्री संतोष के. शर्मा, वरिष्ठ मंडल अभियंता/111 श्री सीतेश दास, वरिष्ठ मंडल सुरक्षा अधिकारी, श्री सुरेश प्रसाद, मंडल अभियंता रंगिया, श्री अवदेश वर्मा, मंडल अभियंता/रंगिया, श्री आर.के. ढाका और सहायक मंडल अभियंता/रंगिया, श्री पिंकू ने एक पालतू हाथी पर मधुमक्खी भेज कर पहला परीक्षण किया। इसके बाद रंगिया मंडल के तहत फूलबाड़ी चाय बागान में दूसरा परीक्षण किया गया, तो पाया कि हनी बी ध्वनि उत्पन्न होने से जंगली हाथी दूर जाना शुरू कर देते हैं।

सफल परीक्षण के बाद एक उपकरण को लगभग 700-800 मीटर की दूरी से हनी बी श्रव्य की प्रवर्धित ध्वनि उत्पन्न करने के लिए डिजाइन किया गया था। पहला उपकरण रंगिया मंडल के अंतर्गत आजारा और कामाख्या स्टेशन के बीच लेवल क्रॉसिंग गेट एनएन-274 पर स्थापित किया गया था। इन परिणामों को बहुत उत्साहजनक बताते हुए सघन वन क्षेत्रों के आस-पास के क्षेत्र में स्थित कई स्तर के फाटकों में स्थापित किए गए थे। वर्तमान में 46 ऐसे उपकरण पूरे पूर्वोत्तर सीमा रेलवे में स्थापित किए गए हैं। ■

इंजीनियरिंग का बेजोड़ नमूना नैनी यमुना ब्रिज हुआ 154 वर्ष का



नैनी यमुना ब्रिज कोलकाता और दिल्ली, दो प्रमुख महानगरों को जोड़ने की एक प्रमुख कड़ी है। यमुना नदी पर इस पुल को बनाने का कार्य अत्यंत दुरूह एवं कठिन था। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से पूर्व 1855 में नैनी एवं इलाहाबाद के बीच इस पुल को बनाए जाने की तैयारी शुरू की गई। इस दौरान लोकेशन भी डिजाइन कर ली गई और सन् 1859 में पुल बनाने का कार्य प्रारंभ हुआ। इस पुल को बनाने में लगभग 6 वर्ष का समय लगा। इस पुल को इंजीनियर रेंडल ने डिजाइन किया था तथा ब्रिटिश इंजीनियर सिवले की देख-रेख में बने इस पुल पर रेल आवागमन 15 अगस्त, 1865 में प्रारंभ हुआ। नायाब इंजीनियरिंग का नमूना नैनी यमुना ब्रिज हावड़ा-दिल्ली रेल मार्ग का सबसे महत्त्वपूर्ण पुल है। यह दो मंजिला ठोस लोहे का पुल है। इसके ऊपरी हिस्से में रेल संचालन एवं निचले हिस्से में सड़क यातायात का संचालन होता है। 14 पिलर्स पर बने नैनी ब्रिज की खास बात यह है कि इसके एक पिलर का डिजाइन हाथी पाँव जैसा है। इस पुल की लंबाई 3,150 फीट है इसमें कुल 17 स्पैन है जिसमें 14 स्पैन 61 मीटर, 2 स्पैन 12.20 मीटर के हैं तथा 1 स्पैन 9.18 मीटर का है। इस पुल के प्रत्येक पिलर की लम्बाई 67 फीट एवं चौड़ाई 17 फीट है। इस पुल को बनाते समय काफी मुश्किलें भी आईं। पुल के अन्य पिलर 1,862 तक बन गए थे, लेकिन यमुना के तेज बहाव के चलते पिलर नंबर-13 को बनाने में अत्यंत कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। पिलर नंबर-13 बनाने के लिए पानी का जल स्तर 9 फीट नीचे कर कुआं खोदा गया और नीचे राख और पत्थर का फर्श बिछाकर पत्थर की चिनाई की गई, जिसका व्यास 52 फिट था। तत्पश्चात् इसके ऊपर पिलर का निर्माण किया गया। इस पिलर को एलीफेंट फुट (हाथी पांव) का आकार दिया गया। इस प्रकार 1,865 में इस पुल का निर्माण कार्य पूर्ण हुआ।

इस पुल में लगभग 30 लाख क्यूबिक ईंट एवं गारा का प्रयोग हुआ है। पिलर के नींव की गहराई 42 फीट तक है और निम्न जलस्तर से गर्डर के नीचे की ऊंचाई लगभग 58.75 फीट तक है। इसमें लगाए गए गर्डर का वजन लगभग 4,300 टन है उस समय इस पुल के निर्माण की लागत रुपये 4,446,300 आई थी, जिसमें गर्डरों की लागत रुपये 1,46,300 थी। वर्ष 1913 में इसे डबल लाइन में परिवर्तित किया गया तथा 1928-29 में पुराने गर्डरों के स्थान पर नए गर्डर लगाए गए तथा वर्ष 2007 में लकड़ियों के स्लीपर के स्थान पर स्टील चैनल स्लीपरों को लगाया गया।

ब्रिटिश काल में निर्मित नैनी यमुना ब्रिज 15 अगस्त, 2019 को 154 वर्ष का हो जाएगा और आज भी मजबूत स्थिति में है और पूरी तरह सुरक्षित है जबकि इसके बाद बनने वाले कई पुलों की उम्र सीमा समाप्त हो चुकी है। प्रयागराज में वर्ष 1978 में भयंकर बाढ़ आई थी, जिस कारण शहर का अधिकांश हिस्सा जलमग्न हो गया था परन्तु इस पुल पर निर्बाध रूप से आवागमन जारी रहा। नैनी पुल की मजबूती का यह एक प्रमाण है और आज भी यह पुल मजबूती से खड़ा है तथा प्रयागराज वासियों के नियमित जीवन का हिस्सा भी बन गया है। हावड़ा एवं नई दिल्ली व्यस्ततम मार्ग जोड़ने की यह एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है।

इस पुल पर प्रतिदिन लगभग 220 मेल/एक्सप्रेस एवं मालगाड़ियों का आवागमन होता है। कुंभ 2019 के अवसर पर एलईडी लाइट एवं फसाड लाइटिंग से इसे सुसज्जित किया गया था जिस कारण रात्रि के समय इसकी सुन्दरता देखते ही बनती थी। 5 जुलाई 2019 को पेश किये गए आम बजट में इसे सँवारने की घोषणा की गई है। ■

अत्याधुनिक तकनीक से महिलाओं की सुरक्षा तथा भागीदारी बढ़ाने



रेलवे में महिला यात्रियों की सुरक्षा

- महिलाओं के लिए आरक्षित डिब्बे में पुरुष यात्रियों के प्रवेश को रोकने के लिए विशेष अभियान चलाया जाता है और ऐसे लोगों के खिलाफ रेलवे अधिनियम की धारा 162 के तहत कार्रवाई की जाती है।
- महानगरों में चलने वाली महिला स्पेशल गाड़ियों को महिला आरपीएफ दल द्वारा एस्कार्ट किया जाता है, शेष गाड़ियों को एस्कार्ट करने वाले आरपीएफ दल को अकेली यात्रा करने वाली महिलाओं का यात्रा के दौरान और स्टेशन पर ठहराव के दौरान विशेष ध्यान रखने की ताकीद की गई है।
- आरपीएफ द्वारा चेन खींचने वाले, छेड़खानी एवं यौन उत्पीड़न करने वालों से महिलाओं को बचाने के लिए 'भैरवी', 'वैशाली', 'शक्ति', 'निर्भया', 'तेजस्वनी' इत्यादि महिला वाहिनियों का गठन किया गया है।
- फेसबुक, ट्विटर जैसे सोशल मीडिया प्लेटफार्म के माध्यम से आरपीएफ यात्रियों, विशेषकर महिला यात्रियों के संपर्क में रहती है, ताकि उनकी सुरक्षा चिंताओं का समाधान किया जा सके।
- 473 रेलवे स्टेशनों पर सीसीटीवी कैमरों द्वारा निगरानी की जा रही है।
- रेल यात्रियों, विशेषकर महिला यात्रियों को चोरी, स्नैचिंग, जहरखुरानी इत्यादि से बचाने के लिए जनसूचना प्रणाली द्वारा घोषणा कर लोगों को जागरुक किया जा रहा है।
- 301 महिला उपनिरीक्षक एवं 4216 महिला कांस्टेबलों की भर्ती की गई।
- बड़े स्टेशनों पर महिलाओं की सुरक्षा मजबूत करने हेतु आरपीएसएफ महिला प्लाटून का गठन किया गया है।
- रेलवे परिसर में अपराध पर लगाम लगाने, केस दर्ज करने, उनकी जांच करने, कानून व्यवस्था बनाये रखने इत्यादि के लिए राज्य पुलिस तथा जीआरपी के साथ नियमित समन्वय बैठक का आयोजन किया जाता है।

की ओर तत्पर रेलवे सुरक्षा बल : अरुण कुमार, महानिदेशक





श्री अरुण कुमार, महानिदेशक, रेल सुरक्षा बल

श्री अरुण कुमार भारतीय पुलिस सेवा (1985 बैच) के अधिकारी हैं। आईआईटी रूड़की से एम.टेक. श्री अरुण कुमार एक अक्टूबर, 2018 को महानिदेशक, रेलवे सुरक्षा बल का पद भार संभालने से पूर्व राज्य एवं केन्द्र में आईजी एवं एडीजी जैसे महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य कर चुके हैं। आपने वर्ष 2007 से 2009 के दौरान सीबीआई को और 2014 से 2016 के दौरान सीआरपीएफ तथा मार्च, 2016 से महानिदेशक, रेलवे सुरक्षा बल का कार्यभार ग्रहण करने से पूर्व तक सीमा सुरक्षा बल को अपनी महत्त्वपूर्ण सेवायें दीं हैं। अपने सुनहरे करियर के दौरान आपकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए आपको पुलिस मैडल फॉर गैलेन्ट्री-2000, इंडियन पुलिस मैडल-2003, प्रेसीडेन्ट पुलिस मैडल फॉर डिस्टिन्गाविस्ड सर्विस-2009 एवं आंतरिक सुरक्षा मैडल-2015 से नवाज़ा जा चुका है।

प्रश्न : यात्रियों की सुरक्षा बढ़ाने तथा अपराधों को रोकने के लिए आरपीएफ द्वारा अत्याधुनिक तकनीक का किस प्रकार प्रयोग किया जा रहा है?

उत्तर: आरपीएफ स्टेशनों में और कुछ रेलगाड़ियों में सघन तौर पर सीसीटीवी का उपयोग किया जा रहा है। इससे जो फीडबैक प्राप्त होता है, उसका आकलन करने के लिए हम कई सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल करने जा रहे हैं, आर्टिफीशियल इन्टेलिजेंस का उपयोग बढ़ाया जा रहा है, जिनमें 'फेस रिकगनीशन सिस्टम' यानी एफआरएस एक है। इस प्रणाली में घोषित एवं अपराधी प्रवृत्तियों में शामिल लोगों के चेहरे व डेटा इस सॉफ्टवेयर में फीड कर दिया जाएगा। इससे जैसे ही वह अपराधी परिसर में आएगा, सिस्टम एक एलर्ट देगा, जिससे उस इलाके में गश्त कर रहे सिपाही को सतर्क कर दिया जाएगा। यदि वह वांछित है, तो उसे तुरंत गिरफ्तार कर लिया जाएगा। इसी प्रकार 'साउंड रिकगनीशन सिस्टम' है। इसमें कहीं गोली चलने या कांच टूटने जैसी अन्य आवाजें होने पर, तुरंत कैमरा उधर की ओर जूम हो जाएगा।



इसके अलावा 'बॉडी-बार्न कैमरे' का इस्तेमाल किया जा रहा है, जिसे सुरक्षा बल के कंधे के भाग पर लगाया जाता है, जिसको ऑन करने से घटना रिकार्ड हो जाती है, जिसे बाद में या उसी समय लाइव भी देखा जा सकता है। कई बार जब उस समय की परिस्थिति का आकलन करना तथा जवान पर लगे आरोप की जांच करनी हो तो यह कैमरा काफी उपयोगी साबित होता है।



हम यात्रियों को प्लेटफॉर्म पर तुरंत मदद हेतु फास्ट मूविंग 'सेगवे' का प्रयोग भी कर रहे हैं, जिससे आपातकाल में तेजी से मौके तक पहुंचा जा सकता है। इसके अलावा मध्य रेल, पश्चिम रेलवे, उत्तर रेलवे और दक्षिण मध्य रेलवे में हमने साइबर सेल शुरू कर दिया है और अन्य रेलवे में जल्द शुरू करने का कार्य चल रहा है।



प्रश्न : अनधिकृत लोगों को स्टेशन में प्रवेश से रोकने के लिए क्या किया जा रहा है?

उत्तर : हमने एक 'स्टेशन सिक्योरिटी प्लान' बनाने की मुहिम शुरू की है, जिसमें आरपीएफ के सीनियर डीएससी से लेकर सीनियर डीईएन, सारे इंजीनियर और डीआरएम तक के हस्ताक्षर होते हैं। इसमें एक सर्वे किया जाता है, जिसमें स्टेशनों के सभी प्रवेश और निकास द्वार का ब्यौरा होता है कि वे कितने जरूरी हैं, कितने नहीं; उनमें से कितने बंद किये जा सकते हैं। जो खुले हैं, उन्हें कैसे रेगुलेट किया जा सकता है, जैसे बैगेज स्कैनर मशीन आदि इन सबका ब्यौरा होता है।



हमने रेलवे बोर्ड द्वारा स्टेशन के आसपास बनाई गई लगभग 3,000 किमी लंबी दीवार का भी भली तरह उपयोग किया है। लगभग 212 स्टेशनों का 'स्टेशन सिक्योरिटी प्लान' तैयार है।

प्रश्न : कुछ समय पहले आपने, यात्रियों को स्टेशन पर भी एयरपोर्ट की तरह काफी पहले आना होगा, के संकेत दिये थे, वह क्या है?

उत्तर : असल में, लोगों को अभी ऐन समय पर दौड़ते-दौड़ते गाड़ी पकड़ने की आदत है, लेकिन स्टेशन सिक्योरिटी प्लान लागू होने के बाद निश्चित रूप से सिक्योरिटी चेक में ज्यादा समय लगेगा। इसलिए उन्हें थोड़ा जल्दी तो आना पड़ेगा।

प्रश्न : रेलवे सुरक्षा बल को आधुनिक करने के लिए क्या कुछ किया जा रहा है?

उत्तर : आरपीएसएफ बटालियन में से एक बटालियन को अलग करके उसे पूरी तरह विशेष प्रशिक्षित किया गया है। अत्याधुनिक हथियारों से सुसज्जित इस बटालियन का ड्रेस कोड अलग प्रकार से डिजाइन किया गया है। इन कमांडो को विशेष रूप से छत्तीसगढ़ आदि नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में कश्मीर में और पूर्वोत्तर सीमा रेलवे में जो हमारी महत्त्वपूर्ण परियोजनाएं हैं, उनकी सुरक्षा में लगाया जाएगा।



प्रश्न : यात्रियों तथा ट्रेनों की बढ़ती संख्या के साथ-साथ रेल सुरक्षा बल के जवानों की संख्या किस प्रकार बढ़ाई जा रही है? उसमें महिला सुरक्षा कर्मियों की भागीदारी कितनी है?



उत्तर : 2,000 से अधिक महिला सुरक्षा कर्मी पहले से ही रेलवे सुरक्षा बल में कार्यरत हैं। रेलवे सुरक्षा बल में अभी हाल ही में लगभग दस हजार उपनिरीक्षकों एवं कांस्टेबलों की भर्ती गई है, जिसमें लगभग 4,500 महिलाकर्मी हैं। इससे कुल रेलवे सुरक्षा बल में लगभग 9 प्रतिशत महिलाएं हो जायेंगी। हालांकि इनमें और बढ़ोतरी का विचार है, क्योंकि इससे महिलाओं और बच्चों के विरुद्ध अपराध को रोकने में मदद मिलेगी और बल की संवेदनशीलता में भी वृद्धि होगी।

प्रश्न : महिला यात्रियों की सुरक्षा के लिए उठाये जा रहे कदमों के विषय में बताएँ?

उत्तर : हमारी 182 हेल्पलाइन चालू है, जो काफी सफल सिद्ध हुई है। इसमें जैसे ही मदद मांगी जाती है, तुरंत कार्रवाई की जाती है। हमने वर्ष 2015 में यह हेल्पलाइन शुरू की थी। उसी वर्ष 6,500 से अधिक शिकायतें हमें मिलीं थीं। वर्ष 2018 में शिकायतों की संख्या बढ़कर 25,000 हो गई और इस वर्ष अब तक इस पर 16 हजार शिकायतें आ चुकी हैं, जो यह दर्शाता है कि इस पर लोगों का भरोसा कितना बढ़ा है?

इसके अलावा हम जल्द ही एक ऐप भी लांच करने जा रहे हैं, जिसको डाउनलोड करने के बाद एक बटन दबाने भर से एलर्ट जारी हो जाएगा। इस ऐप से कण्ट्रोल रूम में कॉल भी कर सकेंगे। अन्य कई सुविधाएँ भी इस ऐप में समाहित की गई हैं, जो यात्रियों की सुरक्षा में काफी मददगार साबित होंगी। इसके अलावा चार्ट देखकर जहाँ आवश्यकता महसूस की जाती है, आरपीएफ महिला सुरक्षा कर्मियों की गश्त लगवाती है, ताकि सफर कर रही महिला यात्री सुरक्षित महसूस करें।



प्रश्न : फिलहाल कितनी रेलगाड़ियों को एस्कार्ट किया जा रहा है?

उत्तर : 2,500 रेलगाड़ियाँ आरपीएफ द्वारा और 2,200 गाड़ियाँ जीआरपी द्वारा एस्कार्ट की जा रही हैं। हमारी कोशिश है कि हम और गाड़ियों को एस्कार्ट करें।



रेलवे सुरक्षा बल द्वारा जून-2019 में एस्कार्ट की गई रेलगाड़ियों का विवरण

रेलवे का नाम	एस्कार्ट की गाड़ियों की औसत संख्या
मध्य रेल	185
पूर्व रेलवे	290
पूर्व मध्य रेलवे	116
पूर्व तट रेलवे	81
उत्तर रेलवे	225
उत्तर मध्य रेलवे	102
पूर्वोत्तर रेलवे	148
पूर्वोत्तर सीमा रेलवे	78
उत्तर पश्चिम रेलवे	70
दक्षिण रेलवे	290
दक्षिण मध्य रेलवे	198
दक्षिण पूर्व रेलवे	90
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे	24
दक्षिण पश्चिम रेलवे	56
पश्चिम रेलवे	138
पश्चिम मध्य रेलवे	144
योग	2235

हेल्पलाइन 182 पर प्राप्त शिकायतों का वर्षवार विवरण

क्रमांक	शिकायतों की प्रकृति	2015	2016	2017	2018	2019 (जून तक)	योग
1	यात्रियों के सामानों की चोरी	1397	3624	4064	5294	3226	17605
2	अराजक तत्वों द्वारा न्यूसेंस	1387	2212	2839	4240	2782	13460
3	आरक्षित डिब्बे में अनधिकृत प्रवेश	1344	1486	3392	5452	3255	14929
4	यात्रियों द्वारा छोड़े गये बैग	895	2030	3446	6816	5004	18191
5	लापता यात्री/ काल का जवाब न देने वाले यात्री	234	426	363	701	543	2267
6	चिकित्सीय सहायता	358	944	1145	1342	778	4567
7	छेड़खानी	39	92	82	124	30	367
8	विविधा/यात्री सुविधायें, बच्चों का बचाव, संदेहास्पद व्यक्ति/वस्तुयें, अप्रिय घटनायें, यांत्रिक समस्यायें, इत्यादि	872	589	876	1197	726	4260
	योग	6526	11403	16207	25166	16344	75646

प्रश्न : अनारक्षित कोच में यात्रियों को सीट देने के लिए 'बायोमेट्रिक्स सिस्टम' का प्रयोग शुरू किया गया है। यह क्या है और कैसे काम करता है?

उत्तर : कई गाड़ियों में यह शिकायत आती थी कि कुली या कुछ आरपीएफ कर्मी पैसे लेकर सीट दिलवाते हैं। ऐसी जगहों पर हमने एक 'बायोमेट्रिक्स क्यू मैनेजमेंट सिस्टम' शुरू किया



है, जिसमें यात्री के बायोमेट्रिक्स सिग्नेचर (फिंगर प्रिंट) लेकर एक टोकन नंबर दे दिया जाता है, जिससे उसे गाड़ी आने पर आराम से सीट मिल जाती है। हमने फिलहाल पूर्वोत्तर रेलवे, पश्चिम रेलवे और मध्य रेल पर यह सुविधा शुरू की है। जल्द ही अन्य स्टेशनों पर भी इसे लागू किया जाएगा।

प्रश्न : 'ऑपरेशन स्माइल', जिसे पहले ही काफी सराहना मिल रही है। इसे और कैसे आगे बढ़ाया जा रहा है?

उत्तर : हमने स्टेशनों के आस-पास के 120 ऐसे एनजीओ को भी जोड़ा है, जो महिला एवं बाल विकास मंत्रालय से मान्यता प्राप्त हैं। उनका अपना कियोस्क होता है, हेल्प डेस्क होती है। पहले तो हमारी कोशिश होती है कि बच्चों को उनके परिजनों से मिलवा दिया जाए और वे उनके साथ चले जाते हैं, लेकिन ऐसे बच्चे जो किन्हीं वजहों से रह जाते हैं, उन्हें एनजीओ को सौंप दिया जाता है।



इसके अलावा अभी अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड ने 'क्लेफ्ट परियोजना' शुरू की है, जो बच्चों की जन्मजात समस्या होती है। इस समस्या से पीड़ित बच्चों का एक एनजीओ के सहयोग से मुफ्त ऑपरेशन किया जाएगा, जिसके लिए एक विशेष स्माइल ट्रेन चलाई जा रही है। इसमें भी आरपीएफ सहयोग दे रही है।

प्रश्न : यात्रियों से आरपीएफ जवान और अच्छी तरह से पेश आएँ, इसके लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में बताएँ?

उत्तर : आपको यह बताते हुए हमें गर्व हो रहा है कि लगभग छूटा हुआ 85 प्रतिशत सामान हम यात्रियों तक वापस पहुंचा देते हैं। इसके अलावा रोजाना लगभग 25 बच्चों को हम उनके परिजनों से मिलवाते हैं, जिससे जनता में हमारी छवि अच्छी बनी है और उनका हम पर विश्वास बढ़ रहा है। इसके अलावा हम अपने बलकर्मियों को जनता से कैसे व्यवहार किया जाए, इसके लिए विशेष प्रशिक्षण भी देते हैं। रेलवे सुरक्षा बलकर्मियों में संवेदनशीलता बढ़ाने के लिए भी विशेष कदम उठाए जा रहे हैं।



प्रश्न : रेलवे सुरक्षा बल कर्मियों की सुविधा के लिए कौन-कौन से कदम उठाये जा रहे हैं ताकि वे और बेहतर सेवा दे सकें?

उत्तर : आरपीएफ जवानों को बेहतर सुविधाएँ देने के प्रयास किये जा रहे हैं। रेल मंत्री के मार्गदर्शन एवं निगरानी में कार्य हो रहा है। हमने एक आरबीएमएस यानि 'रेलवे बैरक मैनेजमेंट सिस्टम' शुरू किया है। इसमें बैरक में सुधार से पहले का और समय-समय पर फोटो लिया जाता है, ताकि निगरानी रखी जा सके कि क्या काम हो रहा है? इसके अलावा उनके लिए बनी मेस को सुधारा जा रहा है। वहाँ फ्रिज, आरओ, पंखे और कहीं-कहीं एसी की भी व्यवस्था की जा रही है। सफाई व्यवस्था को आउटसोर्स किया जा रहा है। खाने पकाने के लिए भी कुक आउटसोर्स





किये जा रहे हैं। इसके अलावा रेलवे सुरक्षा कल्याण निधि, जिसमें हमारे रेलवे सुरक्षा बल के ही जवान स्वैच्छिक योगदान देते हैं, के माध्यम से एक कल्याणकारी योजना चलाते हैं, जिसमें अगर कोई कर्मी ज्यादा बीमार होता है, तो उसे आर्थिक सहायता दी जाती है। साथ ही, रेलवे सुरक्षा बल कर्मियों के बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति दी जाती हैं। हमने लगभग सभी बैरकों के आसपास सेंट्रल पुलिस कैंटीन की भी शुरुआत की है, जिनमें जवान सस्ती दरों पर सामान खरीद सकें।

प्रश्न : हाल ही में सरकार ने आरपीएफ को ग्रुप 'ए' सर्विस बनाने के विषय में एक महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया है, उसके मायने क्या हैं?

उत्तर : आरपीएफ अभी भी ग्रुप 'ए' सेवा है, लेकिन अभी तक यह संगठित सेवा नहीं थी। हाल ही में कैबिनेट ने निर्णय लिया है कि यह ग्रुप-'ए' संगठित सेवा होगी। इससे अधिकारियों के वेतन में वृद्धि होगी, साथ ही विजिलेंस तथा अन्य स्थानों पर प्रतिनियुक्ति पर भी जा सकेंगे। इससे लगभग 500 से अधिक अधिकारियों को फायदा होगा। यह एक अच्छा कदम है। ■



'माय लेफ्ट इज माय राइट' : जन जागरूकता अभियान

मध्य रेल आरपीएफ, मुंबई मंडल ने जुलाई माह में पंक्ति अनुशासन को बनाए रखने और सुरक्षित रूप से यात्रा करने के बारे में रेलवे यात्रियों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए एक विस्तृत अभियान 'माई लेफ्ट इज माई राइट - प्लीज कीप लेफ्ट' चलाया था।

इस एक महीने लंबे अभियान से स्टेशनों पर और रेल यात्री संघों, स्कूल एवं कॉलेज के छात्रों, स्थानीय मंडलों और सामाजिक संगठनों के माध्यम से 2 मिलियन से अधिक यात्रियों तक पहुंचने और उनसे संवाद करने का लक्ष्य रखा गया था।

'माई लेफ्ट इज माई राइट-प्लीज कीप लेफ्ट' अभियान का उद्देश्य रेल यात्रियों को हमेशा जागरूक रखना है:-

- गाड़ियों में चढ़ते-उतरते समय बाएं चलें,
- लेवल क्रॉसिंग गेट का उपयोग करते समय बाएँ चलें,
- सीढ़ियों और एस्केलेटर का उपयोग करते समय बाएँ चलें,
- फुट ओवर ब्रिज का उपयोग करते समय बाएँ चलें,

इस अभियान का उद्देश्य यात्रियों को 'कृपया बाएँ चलें' चिह्न का पालन करने और भगदड़, जेबकतरी, चोरी आदि से बचने के लिए प्रेरित करना है। यह यात्रियों को चलती गाड़ियों से चढ़ने-उतरने से हतोत्साहित करने में मदद करेगा, जिससे आकस्मिक चोटों और मौतों को कम किया जा सके।

श्री के.के. अशरफ, सीनियर डिविजनल सिक्योरिटी कमिश्नर, मुंबई मंडल के नेतृत्व यह अनूठा अभियान चलाया गया। मध्य रेल के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी सुनील उदासी ने कहा, "इस अभियान को एक शानदार सफलता दिलाने में यात्रियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। बाएँ चलना हर रेल यात्री का कर्त्तव्य है और यात्रियों को बाएँ चलने का अभ्यास करना चाहिए।"

उत्तर पश्चिम रेलवे : प्रगति के आयाम



शशि किरण
उप महाप्रबंधक (सामान्य), उत्तर पश्चिम रेलवे

व्यावसायिक संगठनों का प्रबंधन हमेशा से ही चुनौतीपूर्ण रहा है। यह किसी भी संगठन के लिए आत्मघाती होता है, जब भी संगठन की सफलता के लिए 5 एम अर्थात मैन (व्यक्ति), मेटिरिअल (सामग्री), मिनट (समय) एवं मनी (धन) का समुचित एवं कुशलतापूर्वक नियोजन नहीं किया जाए। यह सभी 5 एम किसी भी संगठन के विकास के अति महत्त्वपूर्ण मापदंड हैं तथापि पांचों एम में प्रथम एम व्यक्ति (कर्मचारी) सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता है।

किसी भी संगठन की प्रगति कई पहलुओं पर निर्भर करती है, जिसमें कर्मचारियों की दक्षता एवं नैतिक मूल्य शामिल हैं। कर्मचारियों का उच्च मनोबल इस बात का संकेत होता है कि संगठन के भीतर अच्छा वातावरण है एवं इसलिए प्रत्येक संगठन यह सुनिश्चित करने का प्रयास करता है कि उसके कर्मचारियों का समग्र विकास हो। यह आवश्यक है कि कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया जाए एवं उनका निरंतर विकास किया जाए। इसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों, दक्षता परीक्षणों एवं पुरस्कार कार्यक्रमों से सुनिश्चित किया जा सकता है।

भारतीय रेल राष्ट्र के सेवा क्षेत्र की रीढ़ की हड्डी है एवं भारतवर्ष में सबसे बड़े नियोजकों में से एक है। भारतीय रेल में मानव संसाधनों की कुल शक्ति लगभग 13 लाख है। भारतीय रेल में मानव संसाधनों का नियोजन संगठन के दुर्लभ संसाधनों का प्रभावी व कुशल नियोजन में मदद करता है अपितु संगठन के लक्ष्यों को प्रभावी ढंग से प्राप्त करने में भी मदद करती है। वस्तुतः वे भारतीय रेल की वास्तविक परिसंपत्तियाँ हैं।

उत्तर पश्चिम रेलवे इस महत्त्वपूर्ण घटक को सर्वाधिक महत्त्व देता है। इस तथ्य को महसूस करते हुए कि कर्मचारियों का कल्याण अति महत्त्वपूर्ण है, जिससे कि वे अपने संगठन को एवं समाज को अपना बेहतरीन योगदान दे सकें, उत्तर पश्चिम रेलवे ने मानव संसाधन की गुणवत्ता में सुधार के कई नए प्रयास किए हैं एवं कर्मचारियों को अन्य लाभों के प्रस्ताव दिए जा रहे हैं जिससे कि अनुकूल वातावरण का निर्माण किया जा सके एवं परिणामस्वरूप कर्मचारी प्रतिबद्धता को बढ़ावा मिल सके। कुछ मानव संसाधन के नव प्रयास, जो किए गए हैं एवं प्रक्रियाधीन है, उनका सारांश इस प्रकार है:

वर्तमान अनुप्रयोगों जैसे कि आईपास, अर्पण, निवारण के साथ ई-एचआरएमएस का इंटरफेस – ई-प्रशासन की तरफ एक महत्त्वपूर्ण कदम है। रेलवे द्वारा अपने संचालन के लिए नियुक्त मानव संसाधनों का यह एक व्यापक एवं संयुक्त



दृश्य प्रदान करता है। कर्मचारी न केवल अपनी सेवा पंजिका विवरण, अवकाश, भविष्य निधि, वेतन इत्यादि देख सकते हैं अपितु विभिन्न प्रकार के दावों, ऋण/अग्रिम, अवकाश नकदीकरण इत्यादि के लिए आवेदन भी कर सकते हैं। फलतः कर्मचारियों की प्रशासन पर आंकड़े अपलोड करने की निर्भरता घटी है, वे अपने डाटा अपने लॉग इन से स्वयं अद्यतन कर सकते हैं जो कि संबंधित प्रशासन के सत्यापन पर जारी होगा। इस प्रयास में आईपास में शत-प्रतिशत कर्मचारियों के मोबाइल नं. फीड करना एक अतिरिक्त फीचर है।

कर्मचारी अधिकार पत्र (चार्टर) जारी करना – सेवा विभागों, जैसे कि चिकित्सा, वित्त, हाउसिंग, बिजली इत्यादि में प्रमुखता से कर्मचारियों जागरूक किया गया है कि संबंधित विभागों द्वारा किसी कार्य को करने की कितनी समय सीमा निर्धारित है।

रेलवे आवास प्रबंधन एसोशिएसन (रेमा) की स्थापना की गई है जिससे कि रेलवे आवासों की देखभाल निवासियों द्वारा स्वयं की जा सकेगी। इस उद्देश्य के लिए प्रत्येक मंडल में एक कॉलोनी प्राथमिक आधार पर चिह्नित की गई है एवं एक एसोशिएशन का निर्माण किया गया है। यह समस्याओं के समाधान के लिए एक घरेलू तंत्र के रूप में कार्य करेगा।

सुरक्षा, अग्नि एवं चिकित्सा के लिए आपातकालीन हेल्पलाइन (24x7) सभी मंडलों के लिए 182 है। संबंधित विभागों द्वारा जेपीओ जारी किए गए हैं, जिससे कि रेलवे कर्मचारियों के 182 पर सहायता के लिए फोन करने की स्थिति में समन्वित प्रयासों को सुनिश्चित किया जा सके।

रेलवे परिसरों में चारदीवारी के चारों तरफ सीमा पर प्रकाश व्यवस्था को बढ़ाना एवं सीसीटीवी कैमरे लगाना – इसे सुरक्षा कारणों से कार्यान्वित किया जा रहा है। जयपुर की दो कॉलोनियों में कार्यान्वित भी कर दिया गया है।

स्टाफ एवं उनके परिवार के लिए संविदा के आधार पर मनोवैज्ञानिक सलाहकारों को नियुक्त किया गया है - संगठन के लिए प्रत्येक कर्मचारी एक संपत्ति है एवं संगठन के प्रभावी रूप से सुचारू रूप से कार्य करने के लिए उसका मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य अच्छा होना आवश्यक है। अजमेर एवं जयपुर के लिए दो मनोवैज्ञानिक सलाहकारों को अनुबंध के आधार पर लगाया जा रहा है।

सभी श्रेणियों के कर्मचारियों के लिए प्रति 5 वर्ष में कौशल परीक्षण की योजना बनाई जा रही है एवं क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा इस संबंध में सुझाव मंगाए जा रहे हैं। यह आवश्यक है कि प्रत्येक रेल कर्मचारी दक्ष होना चाहिए एवं संगठन के लिए उपयोगी बना रहना चाहिए। इतना ही नहीं उसे प्रतिदिन के तकनीकी बदलावों के बारे में अद्यतित भी होना चाहिए। इसे ध्यान में रखते हुए उत्तर पश्चिम रेलवे ने बदलते हुए परिदृश्य में एक कदम और बढ़ाया है। अब कौशल के अंतराल का आकलन किया जाएगा।

अन्य कार्यों के लिए भी, जैसे कि सेवा रिकार्ड का सत्याापन प्रति 10 वर्ष में एवं लाइन स्टाफ के लिए मानव सहित समपार फाटकों पर प्रसाधनों सहित विश्राम की सुविधा हेतु प्रयास प्रारंभ किए जा रहे हैं।

भारतीय रेल राष्ट्र के सामाजिक एवं आर्थिक विकास हेतु एक मुख्य साधन के रूप में उभर रही है। रेलवे न केवल भारत में अपितु विश्व के कई भागों में तेजी से बढ़ने वाले उद्योग के रूप में उभरी है। भारतीय रेल का लक्ष्य है कि अगले 25 वर्षों में उस मुकाम पर पहुंच जाना है जहाँ संगठन की समस्त सूचना आवश्यकताओं को एक विस्तृत सूचनाओं के राजमार्ग पर जोड़ा जा सके, जो कि समस्त आंतरिक व बाहरी उपयोगकर्ताओं की पहुँच में हों।

कर्मचारी कल्याण को एक ऐसे रूप में देखा जा रहा है कि यह एक कम लागत में अधिक जोखिम का प्रबंधन है एवं इससे उत्पादकता में वृद्धि होती है, क्योंकि इससे कर्मचारियों की कार्यक्षमता में वृद्धि होती है, क्योंकि इससे वे अपने एवं अपने परिवार की सुरक्षा के प्रति आश्वस्त रहते हैं। यह विश्वास किया जा रहा है कि उपरोक्त उपायों से कार्यालय में निश्चित रूप से एक सौहार्दपूर्ण वातावरण बनेगा, जिससे कि रेलवे कर्मचारी अपनी अधिकतम दक्षता एवं कार्यक्षमता के साथ कार्य कर सकेंगे। इससे संगठन के विकास का मार्ग प्रशस्त होगा एवं समाज की बेहतर सेवा हो सकेगी। ■

उत्तर पश्चिम रेलवे मुख्यालय को मिला सर्वोच्च ग्रीन रेटिंग प्रमाणपत्र

18 जुलाई को सीआईआई/आईजीबीसी (इंडियन ग्रीन बिल्डिंग काउंसिल) द्वारा प्रधान कार्यालय, उत्तर पश्चिम रेलवे, जयपुर कार्यालय को सर्वोच्च 'प्लेटीनम' रेटिंग द्वारा पुरस्कृत किया गया है। इस रेटिंग को हरित पर्यावरण संकल्पना और तकनीक को प्रोत्साहित करने के लिए किया जाना है एवं अब तक इसका निर्धारण इस प्रकार से किया जाता है कि साइट एवं सुविधा प्रबंधन, जल दक्षता, ऊर्जा दक्षता एवं स्वास्थ्य एवं सुख-सुविधाएँ कितनी उपलब्ध हैं?

इन मापदंडों को प्राप्त करने के लिए अपनाए गए मुख्य संक्षिप्त उपायों का विवरण निम्नानुसार है:-

- वर्षा जल संचयन (आरडब्ल्यूएच)
- पानी बचाने वाले फिक्सचर अर्थात् वॉटरलेरा-ऑडरलेस यूरिनल, पानी के नल, टॉयलेट में दोहरी फ्लश की टंकियाँ इत्यादि।
- अपशिष्ट पानी उपचार एवं उसका पूनर्उपयोग (एसटीपी)
- जैविक अपशिष्ट परिवर्तक (ओडब्ल्यूसी)
- वॉटर मीटरिंग
- अपशिष्ट संग्रहण एवं निपटान
- पर्यावरण हितैषी लैंडस्केपिंग प्रैक्टिसेज (जैविक उर्वरकों का प्रयोग)
- पर्यावरण हितैषी रेफ्रीजरेंट
- ऊर्जा मीटरिंग
- स्वच्छ वायु संचार
- कार्बन डाईऑक्साइड पर निगरानी एवं नियंत्रण प्रणाली
- पर्यावरण अनुकूल गृह व्यवस्था रसायन
- तंबाकू धुआँ नियंत्रण
- विशेष रूप से अभिकल्पित टॉयलेट (स्थायी साइनेज सहित)
- अधिमानित कार पार्किंग स्थान (स्थायी साइनेज सहित)
- लिफ्ट में ब्रेल प्रणाली
- रेलकर्मियों के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक सुविधाएँ यथा शतरंज, कैरम, पुस्तकालय इत्यादि।
- प्रदूषण फैलाने वाले उपकरणों एवं प्रणाली का पृथक्करण

उत्तर पश्चिम रेलवे की अन्य इकाइयों ने पर्यावरण संरक्षण संबंधी प्रणालियों को अपनाया एवं उन्हें ग्रीन रेटिंग इमारतों के रूप में प्रमाणित किया गया, उनका विवरण निम्नलिखित है:

रेलवे स्टेशन : जयपुर रेलवे स्टेशन 'प्लेटीनम' रेटिंग

अस्पताल : रेलवे चिकित्सालय, अजमेर 'सिल्वर' रेटिंग

कारखाने (समस्त 4 कारखाने) :

- कैरिज कारखाना, अजमेर (सिल्वर)
- रेलवे कारखाना, बीकानेर (कांस्य)
- कैरिज कारखाना, जोधपुर (कांस्य)
- डीजल लोको एवं वैगन कारखाना, अजमेर (कांस्य)

इस प्रकार अब तक उत्तर पश्चिम रेलवे की कुल 7 इकाइयों को ग्रीन रेटिंग प्रमाणित किया जा चुका है। ■

हावड़ा रेलवे स्टेशन की रोचक जानकारी

विमलेश चन्द्र
सहायक मंडल यांत्रिक इंजीनियर, अहमदाबाद मंडल



हावड़ा रेलवे स्टेशन का बाहरी दृश्य

वर्तमान में भारतीय रेल का सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन हावड़ा रेलवे स्टेशन है। यह एक या दो कारणों से नहीं बल्कि दर्जनों कारणों से देश का सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन है। आमतौर पर सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन उसी को माना जाता है, जहाँ पर सबसे ज्यादा रेलगाड़ियाँ आती-जाती हों, सबसे ज्यादा यात्री आते-जाते हों, सबसे ज्यादा प्लेटफॉर्म हों, सबसे ज्यादा यात्री रुक सकते हों या अपनी गाड़ी की प्रतीक्षा कर सकते हों और साथ ही साथ वह सबसे बड़ा, लंबा और चौड़ा रेलवे स्टेशन हो। इस प्रकार के स्टेशन को सबसे बड़ा स्टेशन का दर्जा दे सकते हैं। संयोग से हावड़ा रेलवे स्टेशन इन सभी पैमानों पर खरा उतरता है। हावड़ा रेलवे स्टेशन कोलकाता शहर में है। कोलकाता वर्ष 1772 से 1912 तक ब्रिटिश भारत की राजधानी थी।

कोलकाता में दो क्षेत्रीय रेलवे का मुख्यालय है। पूर्व रेलवे का मुख्यालय फेयरली प्लेस में तथा दक्षिण-पूर्व रेलवे का मुख्यालय गार्डेन रीच में है। कोलकाता में दो मंडल कार्यालय भी हैं। इनमें पूर्व रेलवे का मंडल कार्यालय हावड़ा स्टेशन पर स्थित है जबकि दक्षिण पूर्व रेलवे का मंडल कार्यालय सियालदह में स्थित है। हावड़ा स्टेशन हुगली नदी के पश्चिम तट पर हावड़ा शहर में स्थित है। यह एक बड़ी रोचक और मजेदार बात है कि हुगली नदी के एक किनारे पर कोलकाता स्थित है और दूसरे किनारे पर हावड़ा और ये दोनों बड़े शहर आपस में किसी रेल लाइन से नहीं बल्कि सड़क वाले पुलों से जुड़े हैं। हालांकि अब हुगली नदी के नीचे बन रही मेट्रो रेल सुरंग से ये दोनों शहर कोलकाता मेट्रो रेल से जुड़ रहे हैं। हावड़ा स्टेशन को तत्कालीन ईस्ट इंडियन रेलवे कंपनी ने बनवाया था। वर्ष 1853 में भारत में पहली रेलगाड़ी मुम्बई से ठाणे के बीच चली थी। जबकि भारत की दूसरी रेलगाड़ी 15 अगस्त, 1854 को यहीं हावड़ा से हुगली के बीच चली थी। ईस्ट इंडियन रेलवे (ईआईआर) को अब पूर्व रेलवे कहा जाता है, जबकि बंगाल-नागपुर रेलवे (बीएनआर) को दक्षिण पूर्व रेलवे कहा जाता है।

भारत में पहली रेल कंपनी और हावड़ा की पहली रेलगाड़ी : भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना वर्ष 1844 में हुई थी। भारत में पहली रेल कंपनी, ईस्ट इंडियन रेलवे कंपनी। जिसकी स्थापना मई, 1845 में कोलकाता में हुई थी तथा इसके पहले एजेंट रोनॉल्ड मैकडोनॉल्ड स्टीफेंसन थे। इस पहली रेलवे कंपनी की स्थापना स्टीफेंसन ने की थी। ईस्ट इंडियन रेलवे कंपनी ने अपना कार्य वर्ष 1851 में शुरू की थी जबकि उसी समय दूसरी तरफ रविंद्र नाथ टैगोर के पूर्वज द्वारिका नाथ टैगोर ने ग्रेट वेस्टर्न बंगाल रेलवे नाम से स्थानीय व्यापारियों के सहयोग से रेल कंपनी शुरू की थी।

असफलता के कारण बाद में बीआईआर को ईस्ट इंडियन रेलवे में मिला दिया गया था। स्टीफेंसन ने सर्वप्रथम कोलकाता से मिर्जापुर तक रेल लाइन बनाने के लिए अपनी पहली रिपोर्ट वर्ष 1844 में सौंपी थी। 17 अगस्त, 1849 को तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री की भागीदारी के साथ ईस्ट इंडियन रेलवे कंपनी और ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए गए थे। हावड़ा से हुगली के बीच 11 अगस्त, 1854 को परीक्षण के तौर पर रेलगाड़ी चलाई गई थी। 15 अगस्त, 1854 की उद्घाटन वाली पहली रेलगाड़ी हावड़ा स्टेशन से हुगली (24 मील) के लिए चलाई गई थी। इसमें प्रथम श्रेणी के तीन और द्वितीय श्रेणी के दो कोच लगे थे और साथ में तृतीय श्रेणी के तीन कोच तथा एक गार्डवान कोच लगा था। बाली, श्रीरामपुर और चंद्रनगर में रुकने के साथ उसी दिन से सुबह और शाम से नियमित रेल सेवाएं शुरू कर दी गईं थीं। इसका टिकट बुकिंग कार्यालय अरमोनिया घाट में बना था।

हावड़ा रेलवे स्टेशन का पहला भवन : 17 जून, 1851 को ईस्ट इंडिया रेलवे कंपनी के मुख्य अभियंता जॉर्ज टर्नबुल ने हावड़ा में रेलवे स्टेशन के लिए एक योजना पेश की थी। मई, 1852 में टर्नबुल को स्टेशन के लिए विस्तृत योजना प्रस्तुत करने के लिए कहा गया था। तब उनकी योजना के अनुसार स्टेशन की अनुमानित लागत 2.5 लाख रुपये थी। अक्टूबर, 1852 में स्टेशन के निर्माण के लिए चार निविदाएँ प्राप्त हुईं थीं, किन्तु यह योजना आगे न बढ़ सकी। फिर छोटे स्टेशन से कार्य चलता रहा। हावड़ा रेलवे स्टेशन का छोटा और पहला भवन लाल ईंटों और आयरन शीट्स से बना हुआ था जिस पर केवल एक प्लेटफॉर्म था और केवल एक रेलवे लाइन बनी थी और यहाँ से केवल एक रेलगाड़ी चलती थी। वर्ष 1865 में दूसरा प्लेटफॉर्म बनाया गया था जबकि तीसरा प्लेटफॉर्म वर्ष 1895 में बनाया गया था। यह एक कमरे वाला स्टेशन भवन था, जिसमें एक छोटी खिड़की भी थी, जिसे टिकट विंडो के रूप में उपयोग किया जाता था।

हावड़ा रेलवे स्टेशन के वर्तमान भवन के वास्तुकार – इस नए स्टेशन भवन का निर्माण ब्रिटिश वास्तुकार, डिजाइनर और पत्रकार हल्से रिकार्डो ने किया था। इनका जन्म 6 अगस्त, 1854 को बाथ, इंग्लैंड में हुआ था। यहीं प्रसिद्ध विक्टोरियन आर्किटेक्ट फेडरिक विलियम स्टीवेंस (1847-1900) का भी जन्म हुआ था, जिन्होंने छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनल स्टेशन भवन और पश्चिम रेलवे मुख्यालय भवन का डिजाइन और निर्माण कराया था। रिकार्डो की पढ़ाई-लिखाई लंदन में हुई थी। यह संयोग की बात है कि रिकार्डो का जन्म 6 अगस्त, 1854 को हुआ था, जबकि उसके 9 दिन बाद 15 अगस्त, 1854 को ईस्ट इंडियन रेलवे (ईआईआर) की प्रथम रेलगाड़ी चलाई गई थी। कहा जाता है कि इन्होंने हावड़ा स्टेशन का डिजाइन, हुगली नदी की बनावट और दिशा के आधार पर यहाँ से हजारों मील दूर बैठे इंग्लैंड में अपनी कल्पना के आधार पर किया था। इनका यह एक बहुत बड़ा प्रोजेक्ट था। इनकी मृत्यु 15 जनवरी, 1928 को लंदन में हुई थी।

हावड़ा रेलवे स्टेशन का वर्तमान भवन – जब हावड़ा रेलवे स्टेशन पूरी तरह से संचालित हो गया था और दक्षिण की तरफ इसका विस्तार भी कर दिया गया था तब बंगाल-नागपुर रेलवे के हावड़ा से जुड़ जाने के कारण हावड़ा स्टेशन के विस्तार की आवश्यकता हुई थी, वर्ष 1901 में रेल यात्रा की बढ़ी मांग के कारण एक नया प्रस्तावित किया गया था, जिसका निर्माण कार्य वर्ष 1901 में शुरू हुआ था। इस नए भवन का डिजाइन 6 प्लेटफॉर्मों के साथ किया गया था। इस स्टेशन भवन के बनने के बाद स्टेशन मास्टर ने अपना रेल संचालन कार्य 1 दिसम्बर, 1905 से शुरू किया था। इसलिए इसकी शुरुआत 1 दिसम्बर, 1905 को मानी जाती है। हावड़ा स्टेशन भवन का विभिन्न निर्माण कार्य वर्ष 1911 तक चलता रहा। इस स्टेशन भवन का निर्माण ईस्ट इंडियन रेलवे ने तत्कालीन भारत की राजधानी कोलकाता के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए किया था। इस भवन में उपयोग किए गए पत्थरों को पहले झारिया पत्थर लगाकर बनाया गया था, लेकिन बाद में इसे बदलकर मिर्जापुर पत्थर का उपयोग किया गया। इसको बनाने में लाल ईंट, मिर्जापुर स्टोन, कोटा स्टोन, ग्रेनाइट, कंक्रीट इत्यादि का उपयोग किया गया। लाल ईंट के कारण इसके भवन का रंग लाल है तथा कुछ भाग बोन ह्वाइट है। इस भवन के खूबसूरत भाग इसके आर्क हैं, जिन्हें लाल ईंटों से बनाया गया है तथा खिड़कियों को भी हवादार बनाया गया है। इस भवन के सामने वाले भाग में 8 वर्गाकार टॉवर बने हैं जबकि कुल टॉवर्स की संख्या 11 हैं। इसके फ्रंट टावर पर बड़ी घड़ी लगी है जिससे हुगली नदी के पार से भी लोग इस घड़ी को साफ-साफ देख सकते हैं और समय का मिलान कर सकते हैं। हुगली नदी के किनारे से देखने पर स्टेशन भवन और इसके टावर की खूबसूरती और बढ़ जाती है। भवन के प्रतिक्षा क्षेत्र में वर्ष 1926 में लगी 2 घड़ियाँ 1 से 15 प्लेटफॉर्म तक साफ-साफ दिखाई देती है। हावड़ा रेलवे स्टेशन भवन रोमन वास्तुशिल्प का एक अच्छा उदाहरण है। उस समय इस स्टेशन भवन को इस प्रकार से बनाया गया था कि यह स्टेशन ईआईआर रेलवे और बीएनआर रेलवे के लिए टर्मिनल स्टेशन के रूप में कार्य करे। उस समय इस भवन से जुड़ा हुआ 6 प्लेटफॉर्म बनाया गया। इस भवन को नॉर्थ विंग कहते हैं। जबकि दूसरे भवन को साउथ विंग कहते हैं इन दोनों के बीच एक सड़क मार्ग बनाया गया। इस सड़क को कैब रोड कहते हैं। इसका उत्तरी भाग 1 नवंबर, 1906 को शुरू हुआ था, जिसमें तृतीय श्रेणी का प्रतिक्षालय भी बनाया गया था। उत्तरी भाग नॉर्थ ब्लॉक के अंतिम तल पर स्टाफ क्वार्टर भी बनाया गया था। वर्ष 1908 में इस भवन के दक्षिणी भाग का कार्य तेजी से हुआ। वर्ष 1909 में 7,8 और 9 नंबर वाले नए प्लेटफॉर्म बनाए गए। जून, 1910 में दक्षिणी भाग बनकर पूरा हो गया। यह एक रोचक बात है कि इस भवन स्टेशन

की शुरुआत ईआईआर तथा बीएनआर की रेलगाड़ियों के लिए टर्मिनल के रूप में विकसित करने की शुरुआत के साथ हुई थी, किंतु बाद में कई वर्षों तक केवल ईआईआर इसका उपयोग करता रहा। शुरुआत में प्लेटफॉर्म नंबर-1 को ईआईआर के लिए तथा प्लेटफॉर्म नंबर-6 को बीएनआर के लिए उपयोग किया जाता था। वर्ष 1960 में यहां सब-वे का निर्माण किया गया। जो हावड़ा ब्रिज की तरफ बना हुआ है। यह देश का सबसे बड़ा सब-वे माना जाता है। वर्ष 1980 के दशक में स्टेशन के दक्षिण की ओर 8 नए प्लेटफॉर्म बनाए गए और स्टेशन का विस्तार किया गया। वर्ष 1993 में न्यू कॉम्प्लेक्स का निर्माण किया गया, जिस पर 4 नए प्लेटफॉर्म बनाए गए। न्यू कॉम्प्लेक्स में अपने प्रकार की पहली यात्री व्यवस्था, रेल यात्री निवास स्थापित किया गया। अक्टूबर, 2005 में प्लेटफॉर्म नंबर-22 और 23 का निर्माण हुआ। वर्तमान समय में प्लेटफॉर्म नंबर-1 से 8 तक उपनगरीय ट्रेन का संचालन होता है। जून, 1909 में रेल मेल सेवा के लिए हावड़ा स्टेशन पर नया ऑफिस का कार्य शुरू किया गया था। इसी तरह पार्सल ऑफिस को भी बाद में इस भवन के पास में शिफ्ट कर दिया गया था। इस प्रकार इसके भवन और प्लेटफॉर्म कई चरणों में बन कर पूरे हुए।

हावड़ा रेलवे स्टेशन का वर्तमान भवन का आकार प्रकार - इसके स्टेशन भवन के फ्रंट साइड की लंबाई 174.5 मीटर और चौड़ाई 16.70 मीटर है। साउथ साइड भवन की लंबाई 89.30 मीटर और चौड़ाई 19.30 मीटर है, जबकि नॉर्थ साइड भवन की लंबाई 85.88 मीटर और चौड़ाई 26.60 मीटर है। प्रत्येक टॉवर की ऊंचाई 22.50 मीटर है। इसका सर्कुलेटिंग एरिया 7,735 वर्ग मीटर, प्लेटफॉर्म एरिया 38,510 वर्ग मीटर है।

सबसे बड़ा स्टेशन होने का प्रमुख रिकॉर्ड और अन्य रोचक रिकॉर्ड

- **सबसे ज्यादा प्लेटफॉर्म :** भारतीय रेल का सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन हावड़ा स्टेशन है। क्षेत्रफल या एरिया के मामले में, सबसे ज्यादा प्लेटफॉर्म (23 प्लेटफॉर्म) होने के मामले में, भी और सबसे ज्यादा रेलगाड़ियों के आगमन और प्रस्थान के मामले में भी। इसका 1 से 15 नंबर तक का प्लेटफॉर्म पूर्व रेलवे के अंतर्गत आता है जिन्हें 'टर्मिनल-1' कहा जाता है। यह पूर्व रेलवे के स्थानीय और लंबी दूरी की ट्रेनों को संचालित करता है। जबकि 17 से 23 नंबर तक का प्लेटफॉर्म दक्षिण पूर्व रेलवे की अंतर्गत आता है। ये नए परिसर में बनाए गए हैं जिन्हें 'टर्मिनल-2' कहा जाता है। यह दक्षिण पूर्व रेलवे की लंबी दूरी की गाड़ियों को संचालित करता है। इसकी एक और रोचक बात यह है कि इस दोनों रेलवे प्लेटफॉर्म और कोई नहीं बल्कि हावड़ा मंडल का मंडल कार्यालय भवन अलग करता है। स्वाभाविक बात है कि दोनों रेलवे अलग-अलग हैं तो प्लेटफॉर्मों का कंट्रोल भी अलग अलग होता है।



हावड़ा उपनगरीय ट्रेन

- **कोलकाता में 5 प्रकार की रेलवे होने का रिकॉर्ड है :** इनमें मेन लाइन रेलवे, उपनगरीय रेलवे, मेट्रो रेलवे, सर्कुलर रेलवे और ट्रॉम रेलवे शामिल हैं। यह अपने आप में एक रिकॉर्ड है। कोलकाता की पहली प्रकार की रेलवे प्रणाली मेन लाइन रेलवे है, जिसमें हावड़ा, सियालदह और कोलकाता की मेन लाइनें शामिल हैं। कोलकाता का दूसरा बड़ा स्टेशन सियालदह है। सियालदह स्टेशन की शुरुआत हावड़ा स्टेशन की शुरुआत से कुछ वर्ष बाद अर्थात् वर्ष 1869 में हुई थी। इसे तत्कालीन ईस्टर्न बंगाल रेलवे और बंगाल असम रेलवे ने बनवाया था। कोलकाता की दूसरी प्रकार की रेलवे प्रणाली उपनगरीय रेलवे है। कोलकाता उपनगरीय रेलवे, कोलकाता के उपनगरीय शहर और कोलकाता से जुड़े क्षेत्रों में चलने वाली रेल प्रणाली है। कोलकाता उपनगरीय रेलवे मुख्य रूप से सियालदह रेलवे स्टेशन से और हावड़ा जंक्शन से खुलती हैं। कोलकाता की तीसरी प्रकार की रेलवे प्रणाली मेट्रो रेल प्रणाली है। कोलकाता मेट्रो, कोलकाता में एक भूमिगत रेल प्रणाली है। इसे जोनल अर्थात् क्षेत्रीय रेलवे का दर्जा प्रदान किया गया है। यह भारतीय रेल द्वारा संचालित है। भारती की इस प्रथम भूमिगत एवं मेट्रो प्रणाली का शुभारंभ 24 अक्टूबर, 1984 का हुआ था। कोलकाता की चौथी प्रकार की रेलवे प्रणाली सर्कुलर रेलवे प्रणाली है। यह पूर्व रेलवे के अंतर्गत आती है। यह एक तरह से गोलाई में अर्थात् वृत्ताकार रेल मार्ग पर चलने वाली रेलगाड़ी है। यह उपनगरीय रेलगाड़ी जैसी ही है, किन्तु गोलाई में चलने के कारण उपनगरीय रेलगाड़ी से अलग है। यह दमदम जंक्शन

से शुरू होकर दमदम जंक्शन पर ही खत्म होती है। कोलकाता की पाँचवीं प्रकार की रेलवे प्रणाली ट्राम है, जिसे ट्राम-वे, ट्राम रेलवे, ट्राम ट्रेन या ट्रेन ट्राम कहते हैं। हालांकि यह ट्राम प्रणाली भारतीय रेल के अधीन नहीं आती है। ट्राम या ट्रॉली कार एक रेल वाहन है, जो अमूमन शहरी सड़कों के साथ-साथ बिछाई गई पटरियों पर चलती है। भारत में ट्राम सेवा सिर्फ कोलकाता में है।

- **कोलकाता का दमदम जंक्शन रेलवे स्टेशन :** दमदम स्टेशन भारतीय रेल का एक अनोखा जंक्शन स्टेशन है। यह एक ऐसा जंक्शन है, जहाँ 4 प्रकार की रेलगाड़ियाँ चलती हैं, जिसमें मेट्रो रेलवे, सर्कुलर रेलवे, मेन लाइन रेलवे और उपनगरीय रेलवे शामिल हैं। यह अपने आप में एक रिकॉर्ड है। हुगली नदी के नीचे सुरंग में बन रही भारत की पहली मेट्रो रेल होने का रिकॉर्ड भी कोलकाता के पास है।
- **पहली डबल डेकर ट्रेन :** अक्टूबर 2011 में भारत की पहली डबल डेकर ट्रेन हावड़ा से धनबाद के लिए चलाई गई थी।
- **प्रतिदिन गाड़ी और यात्री :** उपनगरीय सहित यहाँ से प्रतिदिन लगभग 700 से ज्यादा रेलगाड़ियाँ प्रस्थान करती या समाप्त होती हैं। जिनमें 200 से ज्यादा मेल/एक्सप्रेस रेलगाड़ियाँ हैं, यहां से प्रतिदिन लगभग 10.5 लाख यात्री आते-जाते हैं। हावड़ा स्टेशन पर सभी मिलाकर लगभग एक सौ टिकट बुकिंग काउंटर हैं। इतने बुकिंग काउंटर देश में और कहीं पर भी नहीं हैं। यहां सभी प्रकार की आय को मिलाकर एक दिन की अनुमानित आय एक करोड़ रुपये है।
- **सबसे लंबी कैब रोड :** हावड़ा रेलवे स्टेशन पर बनी कैब रोड, भारतीय रेल की सबसे लंबी कैब रोड है। पुरानी कैब रोड प्लेटफॉर्म नंबर-8 और 9 के लिए है जबकि 2004 में बनी हुई कैब रोड प्लेटफॉर्म-21 से जुड़ी हुई है। पुराने समय में यात्रियों को जानकारी देने के लिए 1 जुलाई, 1947 को 'पैसेंजर गाइड' नाम से एक परीक्षण शुरू किया गया था, जो काफी सफल रहा।
- **हावड़ा में प्रथम बिजली रेलगाड़ी :** हावड़ा से शेयराफुली के बीच 3,000 वोल्ट डीसी वाली प्रथम ईएमयू ट्रेन 12 दिसंबर, 1957 को चली थी। इसके अंतर्गत हावड़ा-वर्धमान मेन लाइन पर पहली बार 2 अक्टूबर, 1965 को बिजली रेलगाड़ी चलाई गई थी।
- **भारतीय रेल में सर्वप्रथम दोहरी (डुअल) संकर्षण प्रणाली :** भारतीय रेल में सर्वप्रथम दोहरी (डुअल) संकर्षण प्रणाली की शुरुआत सितंबर, 1962 में हावड़ा उपनगरीय रेल प्रणाली में हुई थी, जिसमें 3 केवी डीसी प्रणाली को और 25 केवी एसी प्रणाली को एक साथ चलाया गया था। मुंबई में इस प्रकार की डुअल प्रणाली 1996 में 1,500 वोल्ट डीसी/25 केवी एसी के साथ शुरू हुई थी।
- **देश की प्रथम राजधानी एक्सप्रेस :** देश की प्रथम राजधानी एक्सप्रेस 3 मार्च, 1969 को हावड़ा से नई दिल्ली के बीच चली थी। वर्ष 2000 में सियालदह से नई दिल्ली के बीच दूसरी राजधानी एक्सप्रेस चलाई गई थी।
- **देश की सबसे पुरानी रेलगाड़ी कालका मेल :** देश की सबसे पुरानी रेलगाड़ी कालका मेल है, जो वर्ष 1866 में दिल्ली तक शुरू हुई थी और तब से नियमित रूप से चल रही है। इसे वर्ष 1891 में कालका तक बढ़ाया गया था। 1 जुलाई, 1995 से हावड़ा-बोकारो स्टील सिटी/रांची शताब्दी एक्सप्रेस तथा 11 नवंबर, 2001 से हावड़ा/पटना शताब्दी एक्सप्रेस चल रही है।
- **भारत में सबसे पहले सिग्नल इंजीनियर :** भारत में सबसे पहले वर्ष 1889 में ईआईआर (EIR) में सिग्नल इंजीनियर एस.टी. डुटन की नियुक्ति हुई थी। हावड़ा में सर्वप्रथम वर्ष 1890 में 'लिस्ट-मोर्स सिस्टम' नाम से इंटरलॉकिंग शुरू की गई थी। काफी पहले यहाँ 1,197 रूट वाला रूट रिले इंटरलोकिंग स्थापित गया था। वर्ष 1907 में यहां इलेक्ट्रोन्यूमेटिक सिगनलिंग सिस्टम भी लगाया गया था।



कैब वे

भारत में किसी स्टेशन पर सबसे पहले पौधों की नर्सरी की दुकान हावड़ा स्टेशन पर वर्ष 1943 में खोली गई थी, जो अभी भी कार्यरत है। यहां पर ए.एच. व्हीलर बुक स्टॉल वर्ष 1905 में खोला गया था। यहां का फूड प्लाजा वर्ष 2003 में खोला गया था।







प्लेटफॉर्म इंडिकेशन बोर्ड

- **भारतीय रेल में सबसे बड़ा प्रतिक्षालय :** इसके 3 प्रतिक्षालय में 2 प्रतिक्षालय प्रवेश द्वार के पास में हैं तथा तीसरा प्रथम तल पर स्थापित है। स्टेशन परिसर में लंबा-चौड़ा खुला प्रतिक्षालय भी है। सब मिलाकर यात्री क्षमता के हिसाब से यहाँ का वेटिंग हाल भारतीय रेल का सबसे बड़ा वेटिंग हाल या परिसर है। इसकी अनुमानित यात्री क्षमता 10 हजार यात्रियों के लिए पर्याप्त है। चीन के बीजिंग के बाद इसे दूसरा सबसे बड़ा वेटिंग हाल माना जाता है।
- **हेयर कटिंग सैलून :** और तो और देश में किसी स्टेशन पर सबसे पहले वर्ष 1939 में यहाँ हेयर कटिंग सैलून भी खोला गया था।
- **सबसे पहले किसी रेलवे स्टेशन पर बैंक की शाखा :** देश में किसी स्टेशन पर सबसे पहले यहाँ स्टेट बैंक आफ इंडिया की एक छोटी शाखा वर्ष 1995 में खोली गई थी।
- **रेल संग्रहालय हावड़ा :** स्टेशन के उत्तर में ऐतिहासिक महत्त्व की रेलवे धरोहरों को प्रदर्शित करने वाला रेलवे संग्रहालय बनाया गया है। हावड़ा रेलवे स्टेशन के पास में स्थित यह रेल संग्रहालय चार एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है जोकि पूर्व रेलवे के लिए गौरव का विषय है। इसका शिलान्यास 12 अगस्त, 2005 को और शुभारंभ 7 अप्रैल, 2006 को हुआ था। ■

लेखकगण
कृपया ध्यान दें!



- कहानी
- कविता
- संस्करण
- पर्यटन
- स्वास्थ्य

इत्यादि विषयों पर कृपया 800 से 1000 शब्दों का मौलिक लेख (फोटो सहित)
editorbhartiyarail@gmail.com
पर मेल कर सकते हैं

लेख एवं फोटो में कॉपीराइट्स एक्ट का उल्लंघन नहीं होना चाहिए.

प्रकाशित लेखों के लिए उचित मानदेय भी दिया जायेगा। शर्तें लागू

भारतीय रेल
पत्रिका की
सदस्यता एवं प्राप्ति
हेतु
संपर्क करें
011-47845381
सोमवार से शुक्रवार
(सुबह 10 से 1 एवं
दोपहर 2 से 5 बजे तक)
editorbhartiyarailrb@gmail.com
bmpr310rb@gmail.com

जगजीवन राम अस्पताल में पहली बार बच्चे की ओपन हार्ट सर्जरी को टालने हेतु एएसडी पद्धति सफलतापूर्वक सम्पन्न

पश्चिम रेलवे का जगजीवन राम अस्पताल अपने रोगियों को समय पर सही इलाज उपलब्ध करवा कर, उनके जीवन को बचाने वाली पद्धतियों को अपनाने का हरसम्भव प्रयास करता है। ऐसे कई उदाहरण हैं, जिनमें डॉक्टरों और विशेषज्ञों के समर्पित प्रयासों के बल पर जगजीवन राम अस्पताल में जटिल एवं उच्च रुग्णदर एवं मृत्युदर वाले बहुत ही कठिन रोगों के मामलों में सफलतापूर्वक इलाज हुआ है। ऐसे ही एक मामले में पश्चिम रेलवे के जगजीवन राम अस्पताल के इतिहास में पहली बार 9 साल के बच्चे की एक दुर्लभ एवं जटिल कॉन्जेनिटल कार्डिक इंटरवेंशन प्रक्रिया सुनिश्चित की गई। डॉक्टरों की टीम ने विस्तृत मूल्यांकन के बाद इस पद्धति को अपनाने का फैसला किया।



9 वर्षीय बालक अभय राजकुमार राम इंटैरेट्रायल सैप्टम में एक बड़े छेद से पीड़ित था, जिसे चिकित्सीय भाषा में 'ऐट्रीयल सैप्टल डिफेक्ट' (ASD) के नाम से जानते हैं, जिसकी वजह से बचपन से उसे बार-बार रेस्पेरेटरी ट्रैक्ट इंफेक्शन तथा घबराहट होती थी। जगजीवन राम अस्पताल के हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. शिशिर कुमार राउल द्वारा उसकी बीमारी का गहन मूल्यांकन किया गया तथा यह पाया कि बच्चे को हृदय तथा प्ल्यूमिनरी आर्टीज के दाहिनी तरफ फैलाव के साथ एक बड़ा एएसडी था। डॉ. शिशिर के पास दो ही विकल्प थे, पहला सर्जिकल इलाज तथा दूसरा डिवाइस क्लोजर। मरीज की उम्र को देखते हुए इस केस की जटिलता तथा घावों की शरीर रचना विज्ञान के मद्देनजर परक्यूटेनियस डिवाइस क्लोजर सर्जिकल से बेहतर विकल्प था। 20 जुलाई, 2019 को विस्तृत मूल्यांकन के बाद इस पद्धति को अपनाने का निर्णय लिया गया। 20 जुलाई, 2019 को पश्चिम रेलवे के प्रधान मुख्य चिकित्सा निदेशक डॉ. विलास गुण्डा तथा जगजीवन राम अस्पताल की चिकित्सा निदेशक डॉ. हफिजुन्निसा के मार्गदर्शन में हृदय विशेषज्ञों डॉ. मिलिंद फडके, डॉ. एम.वी. रेड्डी, डॉ. शिशिर कुमार राउल, एनेस्थिसियोलॉजिस्ट डॉ. शुभ्रांशु कुमार तथा सीवीटीएस विभाग की कार्डिएक टीम द्वारा सामान्य एनेस्थिसिया के साथ 14 एमएम सेप्टल ऑक्यूडर के जरिये बहुत ही हाई रिस्क वाली परक्यूटेनियस एएसडी डिवाइस क्लोजर पद्धति को सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया गया। बच्चे का स्वास्थ्य अब स्थिर है। ■

'ऑपरेशन 5 मिनट' यात्रियों को मिनटों में मिलेगा टिकट

पश्चिम रेलवे के राजकोट मंडल द्वारा अनारक्षित टिकट काउंटरों से टिकट लेने वाले यात्रियों की सुविधा के लिए 'ऑपरेशन 5 मिनट' चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत टिकट काउंटर से टिकट लेने में लगने वाले समय को घटाने का प्रयास किया गया है। कोशिश की जा रही है कि टिकट के लिए लाइन में लगने वाले यात्री को पांच मिनट में टिकट दे दिया जाए।



राजकोट मंडल के वरिष्ठ मंडल रेल प्रबंधक श्री रवीद्र श्रीवास्तव ने बताया कि यात्रियों में जागरूकता लाने के लिए मंडल के प्रमुख स्टेशनों, जैसे कि राजकोट, जामनगर, द्वारका, ओखा, सुरेन्द्रनगर व वांकानेर पर इस अभियान के बारे में जानकारी देने के लिए जगह-जगह बुकिंग ऑफिस के टिकट काउंटर पर पोस्टर लगाए गए हैं। पोस्टरों पर लिखा गया है कि रेलवे यात्रियों को पांच मिनट में टिकट जारी करने का आश्वासन देता है। यदि किसी यात्री को पांच मिनट में टिकट नहीं मिलता है तो वह पोस्टर पर दिए गए फोन नम्बर पर फोन कर के शिकायत कर सकता है। साथ ही, रेल यात्रियों को इस विषय में अधिक जानकारी देने के लिए राजकोट स्टेशन पर नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया, जिसमें यात्रियों को यूटीएस ऐप के जरिए आसानी से टिकट बुक करने की प्रक्रिया समझाई गई। रेलवे के यूटीएस ऐप के जरिए किसी भी स्टेशन का अनारक्षित टिकट लिया जा सकता है। राजकोट मंडल रेल प्रबंधक श्री परमेश्वर फुंकवाल ने सभी रेल यात्रियों से अनुरोध किया है कि वे सरलतापूर्वक टिकट खरीदने के लिए अधिक-से-अधिक मात्रा में रेलवे के यूटीएस मोबाइल टिकटिंग ऐप का उपयोग करें। ■

कालका-शिमला रेलवे में झरोखा और आर.ए.100 सेल्फ प्रोपेल्ड कोच और रेल मोटर कार में चार्टर सीटों की शुरुआत



कालका-शिमला रेल सेक्शन पर पर्यटन को प्रोत्साहन देने के लिए उत्तर रेलवे ने इस ग्रीष्मकाल में 13 जून से 10 सितम्बर तक झरोखा और आर.ए.100 सेल्फ प्रोपेल्ड कोच और रेल मोटर कार में चार्टर सीटों की शुरुआत की है। अब यात्री चार्टर्ड सीट आधार पर इन रेलगाड़ियों और डिब्बों में टिकट बुक करा सकते हैं। वर्तमान में झरोखा और आर.ए.100 सेल्फ प्रोपेल्ड कोच और रेल मोटर कार पूरे चार्टर आधार पर उपलब्ध है। यात्री कालका-शिमला रेलवे स्टेशनों पर बने बुकिंग काउंटरों से इन सेवाओं को बुक कर सकते हैं। झरोखा और आर.ए.100 सेल्फ प्रोपेल्ड कोच में अधिकतम 8 यात्री जबकि रेल मोटर कार में 12-14 यात्री अपने टिकट बुक करा सकते हैं। यह सभी सेवाएँ मांग आधार पर परिचालित की जाएँगी। ये सेवाएँ तभी संचालित की जाएँगी जब झरोखा और आर.ए.100 सेल्फ प्रोपेल्ड कोच में न्यूनतम 6 यात्रियों की बुकिंग हो। रेल मोटर कार के मामले में न्यूनतम 8 यात्रियों



द्वारा टिकट बुक कराए जाने के बाद 2 घंटों के भीतर ये सेवाएँ उपलब्ध होंगी। एक बार खरीदे गए टिकटों पर कोई वापसी नहीं है। किंतु झरोखा और आर.ए.100 के मामलों में यात्रियों की संख्या 6 और रेल मोटर कार के मामले में 8 न हो तो ये सेवाएं उपलब्ध नहीं होंगी। ऐसी स्थिति में शिमला और कालका रेलवे स्टेशनों के काउंटरों से पूरे किराए की वापसी होगी। इन सेवाओं के लिए खरीदे गए टिकट अहस्तांतरणीय होंगे। इन टिकटों की बुकिंग के समय पर दिए गए पहचान के दस्तावेजों की मूल प्रतियाँ यात्रा के दौरान यात्री को अपने साथ रखनी होंगी। ऐसा न होने पर उसे बिना टिकट माना जायेगा और उससे नियमानुसार प्रभार वसूला जायेगा। चार्टर सेवा के संबंधित कोचों की अग्रिम बुकिंग के मामले में, उनकी पुष्टि एक दिन पहले ही की जाएँगी और ये सेवाएँ स्टॉक की उपलब्धता के अधीन होंगी। यदि किसी विशेष तिथि के लिए 'झरोखा' की बुकिंग अग्रिम रूप से हो जाती है और उस दिन वह उपलब्ध न हो तो यह सेवा विस्थापन के आधार पर उपलब्ध नहीं होगी। 5 वर्ष से अधिक की उम्र के बच्चों का पूरा किराया लगेगा और 5 वर्ष से कम के बच्चों का कोई किराया नहीं लगेगा, किंतु उन्हें कोई सीट नहीं दी जायेगी। प्रस्तावित किराया और सेवाओं की समय-सारणी निम्नानुसार है:

- इस क्षेत्र में बेहतर यात्रा और पर्यटन अवसरों को उत्पन्न करके राष्ट्र निर्माण में रेलवे सदैव अग्रणी रही है।
- इस संबंध में रेलवे ने यूनेस्को विश्व धरोहर वाली कालका-शिमला पर्वतीय रेलवे को गति देने और हिमाचल प्रदेश राज्य में पर्यटन को प्रोत्साहित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। ■



आर.ए. 100 और सी.टी./14 (झरोखा) और रेल मोटर कार में प्रति यात्री किराया

प्रति यात्री सीट बुक कराने का किराया	वयस्क यात्री का किराया		वयस्क यात्री का किराया
	आर.ए.-100	रेल मोटर कार किराया ढाँचा	सी.टी./14 (झरोखा)
	किराया ढाँचा		किराया ढाँचा
प्रति यात्री सीट बुक कराने का किराया	रेलवे=बेस किराया 2090 रुपये जीएसटी 5% =110 रुपये कुल किराया = 2200 रुपये	रेलवे = बेस किराया 1520 रुपये जीएसटी 5% =80 रुपये कुल किराया = 1600 रुपये	रेलवे=बेस किराया 3325 रुपये जीएसटी 5%=175 रुपये कुल किराया = 3500 रुपये

समय

आर.ए.-100 सेल्फ प्रोपेल्ड कोच	रेल मोटर कार	मार्गस्थ ठहराव
कालका और शिमला रेलवे स्टेशन से दोपहर 01.00 बजे के बाद कोई सेवा उपलब्ध नहीं होगी।	कालका और शिमला रेलवे स्टेशन से दोपहर 01.00 बजे के बाद कोई सेवा उपलब्ध नहीं होगी।	बडोग

सीटी/14 (झरोखा)	मार्गस्थ ठहराव
सुबह 8.15 बजे अप मिक्स पैसेंजर ट्रेन और सुबह 8.15 बजे डाउन मिक्स पैसेंजर ट्रेन के साथ	अप और डाउन मिक्स पैसेंजर ट्रेन के सभी ठहरावों पर

पूर्व मध्य रेलवे ने हेड ऑन जेनरेशन सिस्टम का प्रयोग शुरू किया





पूर्व मध्य रेल की हॉग कोचों से परिचालित होने वाली 10 जोड़ी ट्रेनों में हेड ऑन जेनरेशन सिस्टम (हॉग) लगा दिया गया है। इससे पूर्व मध्य रेल को डीजल के मद में होने वाले व्यय से 1 करोड़ रुपये प्रतिमाह की बचत हो रही है।

हॉग सिस्टम में ट्रेनों के कोच में बिजली की सप्लाई विद्युत इंजन से ओएचई से पैंटोग्राफ द्वारा प्राप्त बिजली का ट्रैक्शन ट्रांसफार्मर और लोड कनवर्टर के माध्यम से किया जाता है जहां इसका उपयोग कोच में लाइट, पंखे, एसी आदि के लिए किया जाता है। विदित हो कि हॉग सिस्टम उन्हीं ट्रेनों में लागू किये गये हैं जो अपने प्रारंभिक स्टेशन से गंतव्य स्टेशन तक पूरे मार्ग में विद्युत इंजन से परिचालित किये जा रहे हैं।

हॉग सिस्टम से कोचों में बिजली सप्लाई के निम्नलिखित लाभ हैं :

- पॉवर कार से छुटकारा मिलता है जिससे जेनरेटर में खपत होने वाले बहुमूल्य डीजल की बचत होती है।
- पॉवर कार से छुटकारा मिलने से पॉवर कार की जगह यात्रियों हेतु एक अतिरिक्त कोच लगाया जा रहा है।
- पॉवर कार से छुटकारा मिलने से जेनरेटर से होने वाले वायु प्रदूषण एवं ध्वनि प्रदूषण कम हुआ है।

पूर्व मध्य रेल में हॉग सिस्टम से युक्त रेक से परिचालित होने वाली ट्रेन : 12309/10 राजेन्द्रनगर-नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस, 12393/94 राजेन्द्रनगर-नई दिल्ली संपूर्ण क्रांति एक्सप्रेस, 13257/58 दानापुर-आनंद विहार जनसाधारण एक्सप्रेस, 13237/13238/13239/13240 पटना-कोटा एक्सप्रेस, 12397/98 गया-नई दिल्ली महाबोधि एक्सप्रेस, 12553/54 सहरसा-नई दिल्ली वैशाली एक्सप्रेस, 15279/80 सहरसा-आनंद विहार पुरबिया एक्सप्रेस, 12567/68 सहरसा-पटना राज्य रानी एक्सप्रेस, 13205/06 सहरसा-पाटलीपुत्र जनहित एक्सप्रेस, 13307/08 धनबाद-फिरोजपुर गंगा सतलज एक्सप्रेस। ■

शकूरबस्ती में कोचिंग टर्मिनल परिसर के भीतर ऑटोमेटिक अपशिष्ट जलशोधन एवं पुनर्चक्रण संयंत्र की पहल



शकूरबस्ती में कोचिंग टर्मिनल के निर्माण का कार्य प्रगति पर है। कोचिंग टर्मिनल परिसर में गाड़ियों की धुलाई और पानी की व्यवस्था के लिए दो वाशिंग लाइनें शुरू की गई हैं। शकूरबस्ती में पानी की भारी कमी है। दिल्ली जल बोर्ड के पास वाशिंग लाइनों की आपूर्ति के लिए पर्याप्त पानी नहीं है।

पानी की इस कमी को पूरा करने एवं पर्यावरण की रक्षा के लिए एक बड़े जल संरक्षण संयंत्र की शुरुआत की गई है। 27 जून को 6 लाख लीटर प्रतिदिन की क्षमता वाले ऑटोमेटिक अपशिष्ट जलशोधन एवं पुनर्चक्रण संयंत्र की शुरुआत की गई है। इससे प्रतिवर्ष 58 मिलियन गैलन पानी का अवशोधन और पुनर्चक्रण संभव होगा और इससे लगभग इतने ही ताजा जल की मांग में कमी आयेगी। ऑटोमेटिक अपशिष्ट जलशोधन एवं पुनर्चक्रण संयंत्र का निर्माण नवीनतम तकनीक का इस्तेमाल करते हुए 2.21 करोड़ रुपये की लागत से किया गया है। इसमें 5 वर्ष तक इसके संचालन और इसके अनुरक्षण का कार्य भी शामिल होगा। यह संयंत्र पूरी तरह से स्वचालित है और उत्तर रेलवे पर अपनी तरह का पहला संयंत्र है। इस संयंत्र से जल पुनर्चक्रण की प्रति लीटर लागत लगभग 3 पैसा होगी। वाशिंग लाइन का अपशिष्ट जल, जोकि पहले सीवर लाइन में छोड़ा जाता था, अब एक नाबदान (सम्प वेल) में संग्रहीत करके वाशिंग लाइन परिसर के पास ही के अवशोधन संयंत्र में भेजा जाता है। अवशोधन के उपरांत साफ किए गए पानी को रेलगाड़ियों की साफ-सफाई के लिए वाशिंग लाइन में भेज दिया जाता है। अवशोधित जल की परीक्षण रिपोर्ट यह दर्शाती है कि अवशोधित जल का पैरामीटर बी.आई.एस. मानकों की सुरक्षित सीमा के भीतर ही होता है। ■

पश्चिम मध्य रेलवे क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक



पश्चिम मध्य रेलवे क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक जबलपुर में सम्पन्न हुई। बैठक के आरंभ में अपर महाप्रबंधक, श्री अंशुल गुप्ता ने मुख्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका 'राजभाषा सरिता' के 32वें अंक का विमोचन किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि यह हर्ष का विषय है कि पश्चिम मध्य रेलवे पर रेल संचालन के साथ-साथ भारत सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन सुचारू रूप से किया जा रहा है। अध्यक्ष ने कहा कि राजभाषा का प्रयोग एवं प्रसार बढ़ाना हम सबकी संवैधानिक जिम्मेदारी है। अत: जिन मदों में हमारी रेलवे अभी भी पीछे है, उनमें राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाया जाए। विशेष रूप से मूल पत्राचार हिन्दी में किया जाए और धारा 3(3) के कागजातों को दोनों भाषाओं में जारी किया जाए। क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 46वीं बैठक में मुख्यालय के विभाग प्रमुखों, मंडलों व कारखानों के सदस्यों ने अपने विभागों, मंडलों तथा कारखानों की राजभाषा प्रगति से अध्यक्ष/अपर महाप्रबंधक को अवगत कराया तथा कई रचनात्मक सुझाव दिये। ■

पश्चिम रेलवे मुख्यालय में उच्चस्तरीय पुलिस समन्वयन बैठक



पश्चिम रेलवे एवं मध्य रेल के महाप्रबंधक श्री ए.के. गुप्ता की अध्यक्षता में 28 जून, 2019 को पश्चिम रेलवे के चर्चगेट स्थित प्रधान कार्यालय में उच्चस्तरीय पुलिस समन्वयन बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक का आयोजन पश्चिम रेलवे के रेल सुरक्षा बल के प्रमुख मुख्य सुरक्षा आयुक्त श्री ए.के. सिंह द्वारा किया गया, जिसमें मध्यप्रदेश की अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक श्रीमती अरुणा मोहन राव, मुंबई रेलवे पुलिस के आयुक्त श्री रविन्द्र सेनगाँवकर एवं गुजरात रेलवे पुलिस के उप महानिरीक्षक श्री गौतम परमार के अलावा अजमेर रेलवे की पुलिस अधीक्षक सुश्री पूजा अवाना, पश्चिम रेलवे की रेलवे पुलिस के उपायुक्त श्री पुरुषोत्तम कराड तथा मध्य रेल के डीसीपी/रेलवे श्री एम.एम. मकंदर भी मौजूद थे। पश्चिम रेलवे के सभी 6 मंडलों के मंडल रेल प्रबंधकों ने इस बैठक में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये भाग लिया। महाप्रबंधक श्री ए.के. गुप्ता ने मुंबई परिवहन नेटवर्क के समक्ष आने वाली चुनौतियों को रेखांकित किया और गुजरात, मध्यप्रदेश एवं राजस्थान प्रदेशों में पश्चिम रेलवे के व्यापक विस्तार की चर्चा की। श्री गुप्ता ने फटका डकैती, ट्रेनों पर पत्थरबाजी तथा पटरियों से छेड़छाड़ करने जैसे अपराधों पर फोकस करने के अलावा ट्रेनों में सफर करने वाले मुंबईकरों की सुरक्षा एवं संरक्षा के लिए हरसम्भव कारगर उपाय सुनिश्चित करने की जरूरत पर बल दिया। ■

पश्चिम रेलवे द्वारा इंडियन ऑइल कॉरपोरेशन लिमिटेड की सहभागिता से बांद्रा टर्मिनस परिसर में स्वच्छता अभियान



पश्चिम रेलवे द्वारा इंडियन ऑइल कॉरपोरेशन लिमिटेड की सहभागिता से 13 जुलाई को बांद्रा टर्मिनस स्टेशन पर एक स्वच्छता जागरूकता अभियान चलाया गया। पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री ए.के. गुप्ता तथा आइओसीएल के कार्यकारी निदेशक- एमएसओ श्री अमिताभ अखौरी ने बांद्रा टर्मिनस स्टेशन पर अधिकारियों, कर्मचारियों, स्वयंसेवकों एवं आम जनता को स्वच्छता शपथ दिलवाई। श्री गुप्ता एवं अखौरी के साथ मुंबई सेंट्रल मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री संदीप राजवंशी ने बांद्रा टर्मिनस स्टेशन पर आयोजित स्वच्छता अभियान में स्टेशन की सफाई कर श्रमदान किया। पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री गुप्ता ने रेलवे एवं आईओसीएल के अधिकारियों के साथ पौधारोपण अभियान भी चलाया।■

पूर्वोत्तर रेलवे में अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर पूर्वोत्तर रेलवे के कार्मिक विभाग के तत्वावधान में रेलवे अधिकारी क्लब एवं सैयद मोदी रेलवे स्टेडियम, गोरखपुर में 21 जून को योग शिविर का आयोजन किया गया। पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबन्धक श्री राजीव अग्रवाल, पूर्वोत्तर रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्ष श्रीमती अलका अग्रवाल, अपर महाप्रबन्धक श्री आनन्द प्रकाश, प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी श्री एल.बी. राय सहित प्रमुख विभागाध्यक्षों एवं वरिष्ठ रेल अधिकारियों ने रेलवे अधिकारी क्लब, गोरखपुर में आयोजित शिविर में योगाभ्यास किया। योग प्रशिक्षकों ने योग के विभिन्न आसनों एवं प्राणायाम का अभ्यास कराया। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर पूवोत्तर रेलवे के तीनों मंडलों - इज्जतनगर, वाराणसी एवं



लखनऊ में आयोजित विभिन्न योग शिविरों में रेलकर्मियों ने योगाभ्यास किया। ■

पूर्वोत्तर रेलवे में रक्तदान शिविर आयोजित



पूर्वोत्तर रेलवे महिला कल्याण संगठन एवं पूर्वोत्तर रेलवे क्रीड़ा संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में ललित नारायण मिश्र रेलवे चिकित्सालय एवं बी.आर.डी. मेडिकल कॉलेज ब्लॅड बैंक, गोरखपुर के सौजन्य से रेलवे अधिकारी क्लब, गोरखपुर में 'रक्त दान दिवस' के क्रम में 16 जून को रक्त दान शिविर का आयोजन किया गया। इस रक्त दान शिविर में महाप्रबन्धक, पूर्वोत्तर रेलवे, श्री राजीव अग्रवाल, अध्यक्ष, पूर्वोत्तर रेलवे महिला कल्याण संगठन श्रीमती अलका अग्रवाल सहित मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी, श्री पंकज कुमार सिंह सहित भारी संख्या में रेल अधिकारी, कर्मचारी, उनके परिजन एवं खिलाड़ियों ने 50 यूनिट रक्तदान किया। ■

महाप्रबन्धक द्वारा स्टेशनों एवं गाड़ी में यात्री सुविधाओं का निरीक्षण

महाप्रबन्धक, पूर्वोत्तर रेलवे, श्री राजीव अग्रवाल ने 22 जून को देवरिया सदर एवं गौरीबाजार रेलवे स्टेशनों पर उपलब्ध यात्री सुविधाओं का गहन निरीक्षण किया तथा वाराणसी-गोरखपुर इण्टरसिटी एक्सप्रेस में यात्री सुविधा सम्बन्धी फीटिंग्स का भी निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान प्रमुख मुख्य विद्युत इंजीनियर श्री बेचू राय, प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर श्री ए.के. पाण्डेय, प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त श्री ए.के. श्रीवास्तव, मुख्य वाणिज्य प्रबन्धक (एफ.एम.), श्री राधेश्याम सहित वरिष्ठ रेल अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

इसके उपरान्त, महाप्रबन्धक श्री अग्रवाल ने 15104 वाराणसी-गोरखपुर इण्टरसिटी एक्सप्रेस के साधारण श्रेणी कोच एवं वातानुकूलित कुर्सीयान में यात्रा कर रहे यात्रियों से वार्ता कर फीड बैक प्राप्त किया।

श्री राजीव अग्रवाल ने इण्टरसिटी एक्सप्रेस के खिड़की,



दरवाजों, शौचालयों एवं अन्य यात्री सुविधाओं का निरीक्षण किया।

यात्रियों ने महाप्रबन्धक श्री अग्रवाल से इण्टरसिटी एक्सप्रेस में वातानूकूलित कोच बढ़ाने तथा इस गाड़ी के समय-पालन में सुधार करने का सुझाव दिया। ■

पूर्वोत्तर रेलवे में विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पूर्वोत्तर रेलवे के यांत्रिक विभाग के इन्वायरमेन्ट एवं हाउस कीपिंग संगठन द्वारा 5 जून को मुख्यालय, गोरखपुर में अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये। कार्यक्रम का शुभारम्भ पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबन्धक श्री राजीव अग्रवाल द्वारा रेलवे अधिकारी क्लब, गोरखपुर में पौधारोपण कर किया गया। इस अवसर पर अपर महाप्रबन्धक श्री आनन्द प्रकाश, पूर्वोत्तर रेलवे महिला कल्याण संगठन (नरवो) की अध्यक्ष श्रीमती अलका अग्रवाल सहित वरिष्ठ रेल अधिकारियों एवं नरवो की सदस्याओं ने भी पौधारोपण किया। ■



क्षेत्रीय रेलवे राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक



पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबन्धक श्री राजीव अग्रवाल की अध्यक्षता में क्षेत्रीय रेलवे राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन 27 जून को महाप्रबन्धक बैठक कक्ष, गोरखपुर में किया गया।

इस अवसर पर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं प्रमुख मुख्य सिगनल एवं दूर संचार इंजीनियर श्री श्रीकान्त सिंह, सभी विभागाध्यक्ष, तीनों मंडल के अपर मंडल रेल प्रबन्धक, सभी मुख्य कारखाना प्रबन्धक तथा राजभाषा विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। ■

दक्षिण पूर्व रेलवे की पुस्तक का विमोचन

श्री जी.के. मोहंती, पूर्व मुख्य परिचालन प्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे द्वारा लिखित पुस्तक शीर्षक 'बंगाल नागपुर रेलवे – ए लिगेसी' का विमोचन 28 जून, 2019 को कोलकाता के नजरुल मंच में बी एनआर रिक्रिएशन क्लब द्वारा आयोजित एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में किया गया।

इस पुस्तक में दक्षिण पूर्व रेलवे के गौरवशाली इतिहास और वर्ष 1887 में बंगाल नागपुर रेलवे के आरंभिक रूप में इसकी विभिन्न उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अपने जन्म और पुनर्जन्म, बंटवारे एवं संशोधन के पश्चात बंगाल नागपुर रेलवे एवं इसके उत्तराधिकारी दक्षिण पूर्व रेलवे ने उपमहाद्वीप के सब से अधिक समृद्ध क्षेत्रों में विकास को गति दी है। यह पुस्तक उनके प्रभावों का दस्तावेजीकरण करती है। तेजी से अग्रसर होने वाली तकनीकी युग में दक्षिण पूर्व रेलवे अपने आप को अपडेट कर रही है, जिसका विवरण इस पुस्तक में दिया गया है। 'बंगाल नागपुर रेलवे – ए लिगेसी' पुस्तक को केवल इतिहास और विरासत के रूप में नहीं देखा गया है, बल्कि बंगाल नागपुर रेलवे और मौजूदा दक्षिण पूर्व रेलवे के विगत युग की बहुपक्षीय गतिविधियों की अभिव्यक्ति के रूप में देखा गया है। इस पुस्तक का सबसे बड़ा हिस्सा



बंगाल नागपुर रेलवे और दक्षिण पूर्व रेलवे के कार्य कलाप का विवरण है, जो न केवल सूचनात्मक है, बल्कि भावी पीढ़ी के लिए एक दस्तावेज है।

श्रीमती रश्मि रेखा मिश्रा, अध्यक्ष, दक्षिण पूर्व रेलवे महिला कल्याण संगठन, श्री अनुपम शर्मा, अपर महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे एवं श्री जेके साहा, प्रधान मुख्य यांत्रिक अभियंता, दक्षिण पूर्व रेलवे एवं अध्यक्ष, बीएनआर रिक्रिएशन क्लब इस पुस्तक विमोचन के अवसर पर उपस्थित थे।

श्री संजय मुखर्जी, पूर्व वित्त आयुक्त, रेलवे बोर्ड एवं श्री राधेश्याम, पूर्व महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे भी इस समारोह में उपस्थित थे। ■

दक्षिण पूर्व रेलवे क्षेत्रीय रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

दक्षिण पूर्व रेलवे क्षेत्रीय रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 2019 (अप्रैल-जून) की दूसरी बैठक 24 जून को श्री एच. के. साहू, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं वित्त सलाहकार व मुख्य लेखा अधिकारी (मुख्यालय) की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इस बैठक में सभी विभागों के प्रधान विभागाध्यक्ष, सभी मंडलों के अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं रेल कारखाना, खड़गपुर के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। इस बैठक में विशेष अतिथि के रूप में श्री वरूण कुमार, निदेशक/राजभाषा, रेलवे बोर्ड उपस्थित थे। बैठक का संचालन श्री पी.सी. डांग, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने किया। इस बैठक में दक्षिण पूर्व रेलवे पर हो रहे राजभाषा कार्यों की समीक्षा की गई। ■



जयपुर स्टेशन पर क्विक वाटरिंग सिस्टम से मात्र 10 मिनट में ट्रेन में भरा जा रहा है पानी



जयपुर स्टेशन पर ट्रेनों में पानी भरे जाने में लगने वाले समय में बचत करने के लिये क्विक वाटरिंग सिस्टम लगाया गया है यह प्रणाली पूर्णतया कम्प्यूटर आधारित है। यह प्रणाली SCADA (सुपरिऑसरी कंट्रोल एंड डेटा एक्विटवेशन सिस्टम) है। इस सिस्टम में 3 बूस्टर पम्प मुख्य फीडर से जुड़े होते हैं, जो कि पानी के उपयोग के अनुसार 2-5 माह तक पानी के प्रेशर को ऑटोमैटिक तरीके से मेन्टेन कर सकते हैं।

इस प्रणाली के उपयोग से 24/48 फुल लोड की ट्रेन में मात्र 10 मिनट में पानी भरा जा सकता है, इस प्रणाली से ट्रेन में पानी भरने में लगने वाले समय की बचत तो होती ही है साथ ही इस तकनीक के उपयोग में पानी की भी बचत होती है। इस सिस्टम को स्मार्ट फोन के द्वारा भी संचालित किया जा सकता है। इसमें पाइपों व नलों में लिकेज से होने वाले पानी की बर्बादी भी नहीं होती है। इस सिस्टम में पानी की खपत को मॉनीटर करने के लिये इनकॉमिंग एंड ऑउटगोइंग फीडर पर डिजिटल फ्लो मीटर लगे होते हैं जिससे पानी की अधिक खपत पर निगरानी रखी जाती है। इस प्रणाली के उपयोग से जल संरक्षण को भी बढ़ावा मिल रहा है। ■

आप को यह अंक कैसा लगा : हमें जरूर बतायें

फोन, व्हाट्सएप, एस.एम.एस. : 9717641075 या 9909909966
ईमेल : editorbhartiyarailrb@gmail.com

पत्र लिखें : संपादक, भारतीय रेल, 337-बी, रेल भवन, रेल मंत्रालय, नई दिल्ली-110001



पूर्व तट रेलवे में वन महोत्सव का आयोजन

पूर्व तट रेलवे की ओर से हरित भारत मिशन के तहत् एक माह तक वन महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस दौरान पूर्व तट रेलवे के महाप्रबंधक श्री विद्या भूषण के नेतृत्व में खोरधा रोड के मंडल रेल प्रबंधक सहित पूर्व तट रेलवे के सभी विभागाध्यक्षों ने पौधारोपण कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इस अवसर पर पूर्व तट रेलवे महिला कल्याण संगठन की पदाधिकारियों व सदस्यों सहित रेलवे के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में रेल कुंज स्थित रेल परिसर के अलावा मंचेश्वर में वृहद पैमाने पर पौधारोपण किया गया। ■





दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के रेल मार्गों का विद्युतीकरण



दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की अधोसंरचना का तेजी से विकास करने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है, चाहे व नई रेल लाइन बिछाने का कार्य हो या छोटी लाइन को बड़ी लाइन में परिवर्तित करने का कार्य हो। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के कार्य क्षेत्र में आने वाले ऐसे क्षेत्र जहाँ अब तक रेल नहीं पहुच पाई है ऐसे क्षेत्र में भी रेल पहुंचाने के कार्य को कर रही है। साथ ही साथ दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के कार्य क्षेत्र में बिछाये जा रही नई रेल लाइनों का विद्युतीकरण करने का काम भी किया जा रहा है। नव निर्मित रेल लाईनों का विद्युतीकरण करने का काम दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा पिछले 5 वित्तीय वर्षों में काफी तेजी से किया गया है। वित्तीय वर्ष 2015-16 में आमान परिवर्तन के कार्य के अंतर्गत नागपुर मंडल के डोगरीखुर्द-रामटेक 33.769 रुट किमी नई रेल लाइनों का विद्युतीकरण किया गया। 2017-18 में आमान परिवर्तन के कार्य के अंतर्गत नागपुर मंडल के गोंदिया-चंदापोर्ट रेल खंड 240 रुट किमी, कचापूडा-सिकारा रेल खंड पर 59 रुट किमी, छिंदवाड़ा-भंडारारोड रेल खंड पर 33 रुट किमी सहित कुल 332 रुट किमी रेल लाईनों को विद्युतीकृत किया गया। इसी प्रकार 2018-19 में गोंदिया-समनापुर रेल खंड 59 रुट किमी, सिकारा-नैनपुर रेल खंड 56 रुट किमी, नैनपुर-चिरैडोंगरी रेल खंड 19 रुट किमी, एवं नैनपुर-केलोद रेल खंड 48 रुट किमी सहित कुल 182 रुट किमी की नई रेल लाईनों को विद्युतीकृत किया गया। वित्तीय वर्ष 2019-20 के अप्रैल से जून 2019 तक रायपुर मंडल के अंतर्गत रायपुर-लाखोली रेल खंड 29 रुट किमी तक के नवनिर्मित रेल लाईनों को विद्युतिकृत किया गया। इस प्रकार विगत चार वर्षों में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा 576 रुट किमी तक नवनिर्मित रेल लाईनों को विद्युतीकृत किया गया है। वर्तमान वित्तीय वर्ष 2019-20 में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा 212 रुट किमी नवनिर्मित रेल लाईनों को विद्युतीकृत करने का लक्ष्य रखा गया है जिसके साथ ही साथ 535 रुट किमी रेल लाईनों को विद्युतीकृत करने का बोर्ड द्वारा दिया गया लक्ष्य भी पूरा किया जाएगा। ■



दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे मुख्यालय, बिलासपुर में 21 जून को पांचवें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह का आयोजन सेक्रसा ग्राउंड, बिलासपुर में किया गया। समारोह में श्री डी. गोविंद कुमार, प्रधान मुख्य यांत्रिक अभियंता, श्री सुखबीर सिंह, प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी तथा श्री आर. राजगोपाल, मंडल रेल प्रबंधक, बिलासपुर उपस्थित थे



5 जून को दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के बिलासपुर में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर प्रभातफेरी में अपर महाप्रबंधक श्री अनिल कुमार, मंडल रेल प्रबंधक श्री आर. राजगोपाल, विभागाध्यक्ष, मुख्यालय एवं मंडल के अधिकारीगण, सैकड़ों की संख्या में कर्मचारीगण, स्काउट गाइड के बच्चे एवं नागरिक सुरक्षा दल की टीमों ने भाग लिया

सतर्क गेटमैन को महाप्रबंधक ने सम्मानित किया

मध्य रेल भुसावल मंडल के अंतर्गत पचोरा-जलगांव सेक्शन के गेट संख्या 136 पर कार्य करते हुए श्री सुदेश्वर प्रसाद गुप्ता ने मालगाड़ी के एक वैगन में हॉट एक्सल को देखा तो खतरे का अनुमान लगाते हुए तुरंत लाल झंडी दिखाकर मालगाड़ी के गार्ड को सूचित किया, जिसने मालगाड़ी को तुरंत रोक दिया। श्री सुदेश्वर प्रसाद गुप्ता द्वारा हॉट एक्सल का समय पर पता लगाने से एक बड़ी दुर्घटना टल गई।



इस सराहनीय कार्य के लिए मध्य और पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री ए.के. गुप्ता ने श्री सुदेश्वर प्रसाद गुप्ता, गेटमैन को 5000 रुपये नकद और प्रशंसा प्रमाणपत्र पुरस्कार से सम्मानित किया।

इस अवसर पर, मध्य रेल के अपर महाप्रबंधक डॉ. आर. बद्री नारायण और श्री एस.के. अग्रवाल, प्रधान मुख्य अभियंता, श्री प्रकाश बुटानी, मुख्य संरक्षा अधिकारी, मध्य रेल और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। ■

रेपका के उत्पादन में भारी उछाल

वर्ष 2019-20 की पहली तिमाही में पहिया सेटों के उत्पादन में 109% की वृद्धि हुई है और अप्रैल-जून, 2018 में हुए 6151 पहिया सेटों के उत्पादन की तुलना में अप्रैल से जून, 2019 में 12838 पहिया सेटों का उत्पादन हुआ है। प्रति दिन एसेंबल किए गए औसत पहिया सेट अप्रैल, 2018 में 77 से बढ़कर अप्रैल, 2019 में 162 हो गए हैं। कास्ट पहिए और फोर्ज्ड धुरों के उत्पादन में भी क्रमशः 11% और 8% की वृद्धि हुई है। रेपका ने 11 जून, 2019 को 402 पहिया सेट असेंबली के सर्वश्रेष्ठ दैनिक उत्पादन की उपलब्धि हासिल की है। अप्रैल 2019 से कोलकाता मेट्रो के डिब्बों में रेपका के पहिए लगाए गए हैं। ■





12 जुलाई को नई दिल्ली के करनैल सिंह स्टेडियम में वृक्षारोपण करती हुई उत्तर रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती हरिन्दर कौर साथ में हैं संगठन की उपाध्यक्ष श्रीमती अर्चना जोशी, सचिव श्रीमती रेनू कपूर और संगठन की अन्य सदस्याएं एवं रेलकर्मी



उत्तर रेलवे महिला कल्याण संगठन द्वारा प्रत्येक वर्ष बच्चों के लिए ग्रीष्मकालीन कार्यशाला का आयोजन 15 मई से 15 जून तक किया गया है। इस कार्यशाला के समापन समारोह में श्रीमती हरिंदर कौर, अध्यक्षा, उत्तर रेलवे महिला कल्याण संगठन, तथा अन्य सदस्याएं उपस्थित थीं

आरडीएसओ में ई-ऑफिस का उद्घाटन एवं कार्यान्वयन

आरडीएसओ, लखनऊ में 16 जुलाई को ऑफिशियल कार्यों को निपटाने हेतु ई-ऑफिस प्रणाली की शुरुआत की गई। ई-ऑफिस के कार्यान्वयन से सरकारी कार्यों में अधिक दक्षता, जवाबदेही तथा पारदर्शिता आएगी।

आरडीएसओ के सभी निदेशालयों में प्रयोग हेतु ई-ऑफिस की शुरुआत श्री वीरेन्द्र कुमार, महानिदेशक, आरडीएसओ ने की। यह प्रणाली भारतीय रेलवे द्वारा शुरू की गई डिजिटल पहल के एक भाग के रूप में कार्यान्वित की गई है, जिससे कार्य की हरित प्रणाली (ग्रीन-वे) उन्नत होगी, कागज की खपत में महत्त्वपूर्ण कमी होगी तथा जिसके परिणामस्वरूप लागत में कमी आएगी। इसके अंतर्गत फाइलों ई-ऑफिस के माध्यम से एक कार्यालय से दूसरे कार्यालय को निर्बाध रूप



से भेजना सुनिश्चित किया जा सकता है। इस अवसर पर श्री दीपू श्याम, महाप्रबंधक, रेलटेल, लखनऊ ने ई-ऑफिस प्रणाली की सजीव प्रस्तुति भी दी। ■

केन्द्रीय रेल अनुसंधान बोर्ड की 48वीं बैठक का आयोजन



केन्द्रीय रेल अनुसंधान बोर्ड की 48वीं बैठक 9 जुलाई को आरडीएसओ, लखनऊ में आयोजित की गई। इस बैठक में अपर सदस्य सिविल श्री राकेश गोयल, अपर सदस्य यांत्रिक श्री अनिल कुमार अग्रवाल, अपर सदस्य विद्युत सुश्री मंजू गुप्ता, अपर सदस्य यातायात श्री अनुराग, अपर सदस्य सिग्नल श्री राजीव शर्मा एवं रेलवे बोर्ड के प्रधान कार्यकारी निदेशक/कार्यकारी निदेशक तथा आरडीएसओ के वरिष्ठ अधिकारीगण सम्मिलित हुए। महानिदेशक आरडीएसओ श्री वीरेन्द्र कुमार ने बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में आईआईटी/कानपुर, आईआईटी/खड़गपुर, आईआईटी/रुड़की, आईआईटी/मद्रास, आईआईटी/बीएचयू, डीआरडीओ, सेल, भेल, बीईएल के प्रोफेसर और वैज्ञानिक तथा सीमेन्स एवं एचएआरएससीओ के प्रधान भी सम्मिलित हुए। ■

आडीएसओ में वेण्डर लाउंज का उद्घाटन

आरडीएसओ के अभिकल्प भवन स्थित वेण्डर लाउंज का शुभारंभ 30 मई को किया गया। वेण्डर लाउंज स्थापित करने के निर्देश अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड श्री वी.के. यादव द्वारा 16 मार्च को आडीएसओ आगमन के समय दिये गये थे। वेण्डर लाउंज स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य विभिन्न औद्योगिक इकाइयों के प्रतिनिधियों को आरडीएसओ के विभिन्न निदेशालयों द्वारा अधिसूचित रेल सामग्रियों एवं उत्पादों से सम्बन्धित नवीन जानकारी एक ही स्थान पर उपलब्ध कराना है। प्रधान कार्यकारी निदेशकों एवं कार्यकारी निदेशकों से मिलने के लिए एकल बिंदु खिड़की प्रदान करने के लिए उचित तंत्र भी 17 जुलाई से शुरू किया गया है। इस दिशा में रेल उत्पाद से जुड़े विभिन्न वेन्डरों के लिये एक ऑनलाइन वेण्डर पोर्टल स्थापित किया गया है, जिसमें वेन्डरों द्वारा मांगी गई सभी जानकारियों के शीघ्र समाधान का प्रावधान है। वेन्डरों का पंजीकरण ऑनलाइन किया जाता है। फलस्वरूप पंजीकरण की



प्रक्रिया में समय पहले की 725 दिनों की अपेक्षा घटकर मात्र 134 दिनों का रह गया। आरडीएसओ में स्थापित वेण्डर लाउंज में सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाएं प्रदान की गई है; जैसे कि इण्टरनेट सेवा, कम्प्यूटर, एलईडी टीवी, आराम-दायक सोफा, मॉड्यूलर फर्नीचर, कॉफी मशीन, इत्यादि। ■

डीएफसी कार्य की प्रगति की समीक्षा हेतु उच्चस्तरीय बैठक आयोजित



13 जून को उत्तर मध्य रेलवे और समर्पित माल भाड़ा गलियारा के अधिकारियों के मध्य निर्माणाधीन फ्रेट कॉरिडोर की प्रगति पर एक उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक हुई। उत्तर मध्य रेलवे के महाप्रबंधक श्री राजीव चौधरी की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय के सभी प्रमुख विभागाध्यक्ष, मंडल रेल प्रबंधक, इलाहाबाद, श्री अमिताभ एवं अन्य अधिकारी तथा उनकी टीम और डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के प्रमुख अधिकारियों ने भाग लिया। श्री अनुराग सचान, प्रबंध निदेशक, डीएफसीसीआईएल, श्री अंशुमन शर्मा, निदेशक, पीपी, डीएफसीसीआईएल और मुख्य ब्रिज इंजीनियर, उत्तर मध्य रेलवे ने उत्तर मध्य रेलवे परिक्षेत्र में फ्रेट कॉरिडोर कार्यों के लक्ष्य एवं कार्ययोजना संबंधी पॉवर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण किया। लक्ष्यों के अलावा, विभिन्न निष्पादन एजेंसियों के बीच समन्वय मुद्दों पर भी चर्चा की गई और कई महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए। ■

एनजीटी निदेशों के अनुपालन में उत्तर मध्य रेलवे में बैठक आयोजित

14 जून को उत्तर मध्य रेलवे, मुख्यालय में राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) निदेशों के अनुपालन पर महाप्रबंधक उत्तर मध्य रेलवे श्री राजीव चौधरी की अध्यक्षता में एक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में एनजीटी निर्देशों के मुख्य बिंदुओं एवं उनके अनुपालन पर चर्चा की गई एवं समयबद्ध तरीके से निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए लक्ष्य तय किए गए। बैठक को सम्बोधित करते हुए महाप्रबंधक ने कहा कि बायोडिग्रेडेबल और नॉन-बायोडिग्रेडेबल कूड़ों का अलग-अलग निस्तारण किया जाना चहिये। उन्होंने सार्वजनिक कूड़े दानों के निकट सेंसर आधारित ऑडियो उपकरण लगाने का भी सुझाव दिया, जिससे कि यात्रियों को जागरूक किया जा सके। महाप्रबंधक ने कचरा संग्रह करने वाले बैग के बॉयोडिग्रेडेबल होने और अलग-अलग रंगों के होने का भी सुझाव दिया तथा सफाई गतिविधियों की जांच के



लिए स्टेशनों पर लगे सीसीटीवी कैमरों के प्रयोग की बात कही।

महाप्रबंधक ने आगे कहा कि हमें पानी के संरक्षण के लिए प्रौद्योगिकी, इनोवेशन, मशीनीकरण का उपयोग करना चाहिए। उन्होंने एनजीटी के महत्त्वपूर्ण बिंदुओं की मासिक प्रगति पर नजर रखे जाने के भी निर्देश दिये। ■

समर हाबी कैम्प का समापन समारोह



उत्तर मध्य रेलवे महिला कल्याण संगठन, मुख्यालय, इलाहाबाद की ओर से आयोजित समर हाबी कैम्प का समापन समारोह आयोजित किया गया। लगभग एक महीने तक चलने वाले समर हाबी कैम्प में कुल 185 बच्चों ने भाग लिया। श्री जितेन्द्र प्रजापति द्वारा स्केटिंग, मिस्टर चिन्मय बाला द्वारा आर्ट एवं क्राफ्ट, कुमारी मेनका द्वारा नृत्य तथा श्री राजा बाबू शर्मा द्वारा जूडो कराटे कोर्सों को सफलतापूर्वक सिखाया गया गया। इस समर कैम्प में भाग लेने वाले सभी बच्चों को उपहार एवं प्रमाण पत्र भी वितरित किए गए।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर मुख्यालय के रेलकर्मियों के बच्चों के लिए आयोजित ड्राईंग एवं पेन्टिंग प्रतियोगिता में संगठन की अध्यक्षा श्रीमती ललिता चौधरी द्वारा प्रतियोगिता के प्रत्येक ग्रुप के बच्चों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर संगठन की अन्य सदस्याएं भी उपस्थित थीं। ■

उत्तर मध्य रेलवे में एक उच्चस्तरीय संरक्षा समीक्षा बैठक

25 जुलाई को रेलवे बोर्ड के साथ उत्तर मध्य रेलवे, मुख्यालय में एक उच्च स्तरीय संरक्षा समीक्षा बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में मुख्य संरक्षा अधिकारी, उत्तर मध्य रेलवे, श्री एस.के. कश्यप, मुख्य कार्यकारी निदेशक संरक्षा, रेलवे बोर्ड, श्री नरेश चंद्र गोयल और महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे, श्री राजीव चौधरी उपस्थित थे। बैठक के दौरान मुख्य संरक्षा अधिकारी ने पिछले वर्ष उत्तर मध्य रेलवे के संरक्षा आंकड़ों पर एक प्रस्तुति दी। इस अवसर पर उत्तर मध्य रेलवे में हुई 4 महत्त्वपूर्ण दुर्घटना मामलों पर विस्तार से चर्चा हुई और भविष्य में इन दुर्घटनाओं से बचने के लिए सभी महत्त्वपूर्ण पहलुओं जैसे उनके कारणों, जिम्मेदारी और निराकरण पर चर्चा की गई।

इस अवसर पर एक संरक्षा एप्लिकेशन "Smart Application For Ensuring Train Safety & SAFETY" भी लॉन्च किया गया। यह व्यापक वेब आधारित प्रयोग संरक्षा संबंधी मापदंडों की बेहतर निगरानी, असामान्य अवस्था आदि की रिपोर्टिंग में मदद करेगा ताकि ट्रेनों का संरक्षित तरीके से बेहतर संचालन किया जा सके। गूगल प्ले स्टोर में उपलब्ध



यह ऐप किसी को भी किसी भी खतरे, असुरक्षित स्थिति को जियोटैग्ड तस्वीर के साथ भेजने की सुविधा प्रदान करता है जिससे कि तत्काल सुधारात्मक कार्रवाई की जा सकेगी।

इस अवसर पर प्रमुख कार्यकारी निदेशक संरक्षा, रेलवे बोर्ड, श्री गोयल ने सुझाव दिया कि ऐप में संरक्षा सम्बंधी और अधिक वीडियो, एनीमेशन सामग्री होनी चाहिए जो कि इसे उपयोगकर्ता के और अधिक अनुकूल बनायेगी। बैठक में उत्तर मध्य रेलवे के सभी विभागों के प्रमुख विभागाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष एवं सभी मंडल के वरिष्ठ संरक्षा अधिकारी उपस्थित थे। ■

अलीपुरद्वार जंक्शन में आईपीडब्ल्यूई (इंडिया) की तकनीकि संगोष्ठी आयोजित की गई

20 जून को अलीपुरद्वार जं. में आईपीडब्ल्यूई (इंडिया) के अलीपुरद्वार मंडल चेप्टर द्वारा सुरक्षा पर एक दिवसीय प्रशिक्षण सह संगोष्ठी का आयोजन किया गया। पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के प्रधान मुख्य इंजीनियर, श्री राजीव राजवंशी ने अध्यक्षीय भाषण पेश किया। इस मौके पर श्री के.एस. जैन, मंडल रेल प्रबंधक, अलीपुरद्वार एवं मंडल के अधिकारीगण मौजूद थे। इस संगोष्ठी में 221 भागीदारों ने भाग लिया।





संगोष्ठी के दौरान, विभिन्न महत्त्वपूर्ण विषयों पर उपस्थापन बनाया गया जैसे – एलडब्ल्यूआर ट्रैक, ट्रैक मशीनें, वेल्ड की यूएसएफडी टेस्टिंग, सिस्टेमेटिक ट्रैक मेंटेनन्स, वेल्डिंग में, मानसून एहतियात और व्यक्तिगत की तरह सामान्य सुरक्षा पर भी सुरक्षित कार्य आदि। ■

रेल कोच फैक्टरी में अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन



रेल कोच फैक्टरी, कपूरथला में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पूरे उत्साह के साथ मनाया गया। इस संदर्भ में आरसीएफ के सामुदायिक हाल में 200 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। श्री सी.एस. लाम्बास, उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर ने सभी का स्वागत किया व योग दिवस मनाने के उद्देश्य के बारे में विस्तार से बताया।

इस अवसर पर प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर श्री आर. के. मंगला एवं सभी उच्च अधिकारी उपस्थित थे। ■

मदुरै मंडल में प्रेमचंद जयंती समारोह का आयोजन

मदुरै मंडल के रेलवे अस्पताल में प्रेमचंद जयन्ती समारोह 31 जुलाई, 2019 को मनाया गया। इसमें सुश्री पद्मलता, अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक की अध्यक्षता में 'आज के युग में प्रेमचंद' विषय पर एक संगोष्ठी चलाई गई थी। इसमें पांच प्रतिभागी थे। अध्यक्षा सुश्री पद्मलता के अलावा, सुश्री अन्नत्ताई, सहायक नर्सिंग अधिकारी, श्री विघ्नेश, पिसियोथेरपिस्ट, श्री वेलमुरुगन, वरिष्ठ शिक्षक, श्री आर. गणेश, वरिष्ठ अनुवादक ने पेपर प्रस्तुत किया। इस संदर्भ में प्रेमचंद पुस्तकालय की ओर से केवल उनकी लिखी गई पुस्तकों की प्रदर्शनी रखी गई थी।

सभी प्रतिभागियों ने रसास्वादन किया। प्रेमचंद की किताबों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया गया था। संगोष्ठी के तुरंत बाद 15 कर्मचारियों ने प्रेमचंद की किताबें पुस्तकालय से ली। श्री ललित कुमार मनसुखानि, अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी ने संगोष्ठी के प्रथम तीन



विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया। उन्होंने अपने भाषण में भाषा का महत्व समझाते हुए, भाषा के संवर्द्धन में साहित्य की भूमिका को विस्तार से बताया। इसका आयोजन श्री ए. श्रीनिवासन, राजभाषा अधिकारी, मदुरै ने किया। ■



मंडल रेल प्रबंधक रायपुर ने खिलाड़ियों की सराहना की





आईसीएफ चेन्नै में 15 से 18 जुलाई तक आयोजित अखिल भारतीय अंतर रेल पॉवर लिफ्टिंग प्रतियोगिता में सराहनीय प्रदर्शन के लिए मंडल रेल प्रबंधक, रायपुर, श्री कौशल किशोर ने सराहना की।

इसी प्रकार उत्तर पूर्व रेलवे गोरखपुर में 18 से 20 जुलाई तक आयोजित अखिल भारतीय अंतर रेल हैंडबॉल प्रतियोगिता में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की महिला टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए काँस्य पदक प्राप्त किया। प्रथम स्थान पर पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर तथा द्वितीय स्थान पर दक्षिण मध्य रेलवे, सिकंदराबाद की टीम रही। इस वर्ष रायपुर मंडल की इंदु गुप्ता, प्रिया, मोनिका खनेल, सुमन, मीनाक्षी, एल दीपा, अरुणा किंडो एवं श्रीमती निशा पाटिल ने दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे टीम का प्रतिनिधित्व किया।

मंडल रेल प्रबंधक, रायपुर, श्री कौशल किशोर एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा) श्री शिव शंकर लकड़ा, वरिष्ठ मंडल खेल अधिकारी डॉ. आर सुदर्शन, मंडल खेल अधिकारी श्री आदित्य गुप्ता, मंडल खेल सचिव श्री स्वर्ण सिंह कलसी, आदि ने भी खिलाड़ियों को बधाई दी। ■

67वीं अखिल भारतीय रेलवे टेबल टेनिस चैम्पियनशिप आयोजित

अखिल भारतीय रेलवे टेबल टेनिस चैम्पियनशिप का आयोजन एनएफआरएसए इंडोर स्टेडियम, मालीगांव में किया गया। इसका उद्घाटन महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर सीमा रेलवे, श्री संजीव राय ने 3 जुलाई को किया। प्रतियोगिता में विभिन्न क्षेत्रीय रेलों के 14 दल से 116 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। इस इवेंट में, पुरुष संवर्ग में दक्षिण पूर्व रेलवे और महिला संवर्ग में पूर्वोत्तर सीमा रेलवे चैम्पियन बनी। पुरुष सिंगल्स में, दक्षिण पूर्व रेलवे के अनिर्वाण नन्दी और महिला सिंगल्स में, मध्य रेल की श्रुति अमुठे ने स्वर्ण पदक हासिल किया। ■



रेल की रोचक जानकारी हेतु

भारतीय रेल

पत्रिका का



फेसबुक पेज

https://www.facebook.com/bhartiyarailpatrika

लाइक करना न भूलें

मूक प्यार

मंजु
संयुक्त निदेशक, रेलवे बोर्ड

पिछले दो-तीन महीनों से ऑफिस में बहुत अधिक व्यस्तता रही थी। संसद सत्र, ऑफिस मीटिंग और दो बार ऑफिस दौरे पर दिल्ली से बाहर जाना पड़ गया था। यहाँ तक कि रविवार को भी ऑफिस के काम का दबाव बना रहा था। आज रविवार के दिन वह काफी हल्का महसूस कर रहा था और चाह रहा था कि रविवार की छुट्टी वह सिर्फ अपने साथ ही व्यतीत करे। दिमागी तौर पर ताजा महसूस करने का इससे बेहतर तरीका उसे नहीं समझ आ रहा था। सुबह के नाश्ते के बाद उसने अपनी पत्नी से कहा, "मैं पहले तल पर कुछ देर के लिए अकेला रहना चाहता हूँ। पिछले कुछ समय से बहुत शारीरिक और दिमागी थकावट हुई है। कुछ देर साधना करूँगा और कुछ मनपसंद संगीत और पुस्तकें पढ़ लूँगा।" उसकी पत्नी को यह बात पसंद नहीं आई और उसने कुछ शिकायत भरी नजरों से उसकी ओर देखा, जैसे कह रही हो कि पिछले दो-तीन महीनों से निखिल ने घरवालों के साथ भी समय व्यतीत नहीं किया था। इससे पहले कि वह अपनी शिकायत को शब्दों में व्यक्त करती, निखिल ने झट-से कहा, "दोपहर का खाना हम एक साथ खाएँगे। जब खाना तैयार हो जाए तो मुझे बुला लेना। शाम को बच्चों के साथ कहीं बाहर घूमने चलेंगे।" पत्नी के चेहरे पर आए तनाव के चिन्ह एकदम से गायब हो गए और वह हल्के-से मुस्कुरा दी।

कुछ पुस्तकें और पसंदीदा गानों और गजलों की कैसेट लेकर निखिल पहले तल वाले कमरे में चला गया। कुछ देर साधना करने के बाद वह विचार कर ही रहा था कि कौन-सी पुस्तक पहले उठाकर पढ़े कि उसकी पत्नी वहाँ आ गई और तीखी मुस्कान के साथ उसे एक टेलीग्राम देते हुए कहा, "लो, हो गया आपका आराम।" निखिल ने उसके हाथ से झटपट टेलीग्राम ले लिया और पढ़ने लगा – "रीमा की हालत गंभीर है। तुरंत आ जाइए" टेलीग्राम में इलाहाबाद के किसी अस्पताल का पता दे रखा था। जैसे ही उसने नजर ऊपर उठाई, पत्नी की नजरों में एक प्रश्न तैरता देखा, "यह रीमा कौन है।" उसने पत्नी की बात का जवाब दिए बिना अपने पीए का नंबर मिलाया और उससे कहा कि वह उसी रात की इलाहाबाद जाने वाली गाड़ी में उसका टिकट बनवा दे। फिर पत्नी की ओर मुखातिब होते हुए सांत्वना देते हुए कहा, "रीमा एक आईएएस ऑफिसर हैं और आजकल उनकी पोस्टिंग इलाहाबाद में है। हम दोनों का बचपन इकट्ठे खेल-कूद कर बीता है। एक अरसा हो गया उससे बात किए हुए और मुझे नहीं मालूम कि अचानक उसने मुझे क्यों बुलाया है पर इंसानियत के नाते मुझे जाना पड़ेगा। तुम मेरा बैग तैयार कर दो। शायद दो-तीन दिन का समय लग जाएगा।" थोड़ी देर में निखिल के पीए का फोन आ गया कि उसने उसके जाने की टिकट ले ली थी और वह उसे स्टेशन पर मिलेगा। निखिल को बड़ी हैरानी हुई थी कि टिकट कंफर्म मिला था। शायद स्कूलों में बच्चों की परीक्षाओं की वजह से ट्रेन में यात्रियों की भीड़ नहीं थी। ट्रेन सही समय पर थी। जैसे-जैसे ट्रेन दिल्ली स्टेशन छोड़ रही थी और इलाहाबाद की ओर आगे बढ़ रही थी, निखिल का दिमाग पिछली बातों पर घूमने लगा था।

निखिल तब नवीं कक्षा में पढ़ रहा था जब उसके पिताजी का स्थानांतरण लुधियाना से दिल्ली में हो गया था। सिविल लाइंस में घर के पास बने सार्वजनिक पार्क में निखिल अपने छोटे भाई अखिल के साथ रोज शाम को खेलने जाया करता था। इसी समय रीमा भी अपनी सहेलियों के साथ वहाँ खेलने आती थी। रीमा का व्यक्तित्व अपनी सहेलियों से बिल्कुल भिन्न था – साफ-सुथरी, घने बालों की दो चोटियाँ बनाकर उनमें रिबन गुँथे होते। सहेलियों में खेल का नेतृत्व अक्सर वही करती नजर आती थी। वह निखिल को बिल्कुल एक जापानी गुड़िया की भांति लगती थी। एक दिन उसने अपनी माँ से कहा, "मेरी दोस्ती जापानी गुड़िया से करा दो।" पहले तो उसकी माँ ने उसकी बात को कोई महत्त्व नहीं दिया पर जब वह बार-बार इस बात पर जिद करने लगा तो उसकी माँ उसके साथ पार्क में चली गई। माँ ने रीमा को इशारे से अपने पास बुलाया। वह बड़े आत्मविश्वास के साथ उसकी माँ के पास आई और माँ के पूछने पर अपना नाम बताया। उसकी माँ ने रीमा को चॉकलेट देना चाहा। पहले तो वह कुछ हिचकिचाई और फिर यह कहते हुए कि "वैसे तो मेरी माँ ने किसी से भी कुछ लेने के लिए मना किया हुआ है परंतु आप मुझे अच्छी आँटी लगती हैं, इसलिए ले लेती हूँ।" रीमा सातवीं कक्षा में पढ़ रही थी। मेरी माँ ने रीमा से उसके घर का पता पूछा। उसने बता दिया। मेरी माँ ने मेरा और अखिल का परिचय रीमा से कराते हुए कहा, "इन दोनों को भी अपने साथ खेल में शामिल कर लो, परंतु रीमा ने कहा, "मैं सिर्फ अपनी सहेलियों के साथ ही खेलती हूँ। लड़कों के साथ खेलने के लिए मेरी माँ ने मना किया है।" उसका जवाब सुनकर मेरी माँ मुस्कुरा दी। रीमा ने थोड़ी ही दूर कुछ खेलते लड़कों की तरफ इशारा करते हुए कहा, ''मेरे भाई वहां खेल रहे हैं। ये दोनों वहां जाकर उनके साथ खेल सकते हैं।"

मेरी माँ को रीमा की भोली-भाली बातें अच्छी लगी। दो दिन के बाद ही मेरी माँ मेरे पिताजी और हम दोनों भाइयों को साथ लेकर रीमा के घर चली गई। मेरी माँ को देखते ही रीमा ने अपनी माँ से कहा, "यह पार्क वाली आँटी हैं।"

उसके माता-पिता ने मेरे माता-पिता का स्वागत किया। रीमा कुछ ही देर में हम सबके साथ घुल-मिल गई। मेरे पिताजी की बड़ी-बड़ी मूंछों ने उसे काफी आकर्षित किया था। "आप तो बिल्कुल मेजर अंकल लगते हैं। मैं आपको मेजर अंकल बुलाया करूँगी।" इस तरह से हम दोनों परिवारों का एक-दूसरे के घर में आना-जाना शुरू हो गया। वह केवल घर के अंदर ही हम दोनों भाइयों के साथ खेलती थी जब उसके अपने दोनों भाई भी उसके साथ होते थे। मेरी कोई बहन नहीं थी। रक्षाबंधन आने पर मेरी माँ ने हम दोनों भाइयों से कहा कि हम रीमा से राखी बँधवा लें। मेरे मना करने पर मां ने कारण पूछा। इससे पहले कि मैं कुछ बोलता, मेरे छोटे भाई ने झट से कहा, "नहीं, वह हमें मारती है। मैं उससे राखी नहीं बँधवाऊँगा और फिर मुझे हल्के से आंख मार दी। अगले दिन जब इस बात का पता रीमा को चला तो वह हम दोनों भाइयों को मारने दौड़ी, "अच्छा, मैं मारती हूँ। अभी तो नहीं मारा था, अब मार कर दिखाती हूँ।"

पढ़ाकू स्वभाव की होने के साथ-साथ रीमा हर काम समय के अनुसार करती थी। उसकी इसी आदत की वजह से वह मेरी माँ, पिताजी और दादी की काफी प्रिय बन चुकी थी, यहाँ तक की वे हर मामले में रीमा से हम दोनों भाइयों की तुलना करते रहते। कभी-कभी तो मन में रीमा के प्रति ईर्ष्या जाग उठती, परंतु उसके सामने आते ही वह ईर्ष्या भाप बनकर उड़ जाती।

मैनेजमेंट की पढ़ाई करने के लिए मुझे पुणे कॉलेज में जाना पड़ा। रीमा ने विज्ञान विषय का चयन किया था। वह डॉक्टर बनना चाहती थी ताकि किसी गांव या छोटे शहर में जाकर गरीबों का इलाज कर उनकी मदद कर सके। जब भी कभी छुट्टियों में घर आता तो मेरा अधिकतर समय रीमा के साथ ही बतियाने में निकल जाता। भविष्य को लेकर उसके कुछ सपने थे। कुछ कर गुजरने की उसमें ललक थी। वह समाज के लिए कुछ करना चाहती थी, परंतु विज्ञान विषयों का चयन शायद उसके लिए सही नहीं था। इसलिए कॉलेज में उसके पिताजी ने उसे अर्थशास्त्र विषय में दाखिला दिलाया। अब उसमें एक ही ललक थी – आईएएस परीक्षा में पास होना।। वह दिन-रात उसी की तैयारी में लगी रहती। अब वह उतनी चंचल नहीं रह गई थी। बहुत ही कम बात करती। मैनेजमेंट की पढ़ाई पूरी होते-होते मुझे पुणे में ही नौकरी मिल गई। जब रीमा ने आईएएस की परीक्षा पास की तब मैं नौकरी के सिलसिले में ट्रेनिंग पर विदेश गया हुआ था। वापस आने पर खबर मिली कि वह भी आईएएस की ट्रेनिंग पर गई हुई थी। इसके बाद ऐसा सिलसिला शुरू हुआ कि मैं घर गया तो वह वहां नहीं मिली और अगर वह घर आई तो मैं कहीं न कहीं नौकरी के सिलसिले में बाहर था। इसी बीच मेरे पिताजी का स्थानांतरण अहमदाबाद हो गया। एक अरसा बीत गया था रीमा को देखे हुए।

रीमा से मुलाकात उसके बड़े भाई की शादी पर हुई।



शादी में निखिल अपने माता-पिता के साथ सपरिवार गया था। निखिल ने दूर से देखा कि रीमा किसी महिला से हँस-हँसकर बातें कर रही थी। हम सब लोगों को देखते ही वह 'आंटी', 'मेजर अंकल' कहते हुए मेरी माँ से लिपट गई। मेरी तरफ देखते ही उसने झेंप कर नजरें झुका लीं। उसे पहली बार साड़ी में देखा था और पहचान ही नहीं पा रहा था कि वह वही जापानी गुड़िया थी। मैं काफी देर तक उसे एकटक देखता रहा। सुनहरी जरी वाले बॉर्डर की काली साड़ी में वह बहुत खूबसूरत लग रही थी। मेरे माँ-पिताजी ने उसकी बहुत तारीफ की, पर मुझे चुप देखकर माँ ने मेरे कंधे पर हाथ मारते हुए कहा, "तुझे क्या हुआ है? यह तेरी जापानी गुड़िया तो है।" अपनी बात कहते-कहते माँ-पिताजी रीमा की माँ-पिताजी से मिलने घर के अंदर चले गए। शादी वाले माहौल में रीमा से कुछ खास बात नहीं हो पाई थी, परंतु उसके माँ-पिताजी से विदाई लेने से पहले मेरी माँ ने मेरे और रीमा के रिश्ते की बात शुरू की थी, परंतु रीमा की माँ ने बताया कि उन्होंने रीमा की शादी का फैसला उस पर ही छोड़ रखा है। वह रीमा से इस बारे में बात करेंगी और मेरी माँ को अवगत करा देंगी। उसकी माँ ने यह भी बताया था कि उन्हें इस रिश्ते से कोई ऐतराज नहीं है। रीमा का घर छोड़ने से पहले रीमा से मुलाकात नहीं हो पाई थी। न जाने वह कहाँ चली गई थी घर में किसी को कुछ पता नहीं था। ट्रेन छूटने का डर था, इसलिए माँ, पिताजी और मैं मायूस होकर उससे बिना मिले ही आ गए थे। थोड़े दिनों के बाद उसकी माँ ने मेरी माँ को

फोन पर बताया कि रीमा विवाह नहीं करना चाहती है और इसका कारण भी वह स्पष्ट रूप से नहीं बता रही है। उसकी माँ ने बताया कि रीमा के इंकार की वजह से घर में सभी लोग बहुत चिंतित हैं पर वह अपनी जिद पर अड़ी है। हमारे घर में भी थोड़े दिन उदासी छाई रही। अंततः मेरी माँ ने अपनी एक अन्य सहेली की बेटी से मेरा विवाह करा दिया। नीना एक अच्छी संगिनी साबित हुई और दो बेटों का पिता होने का सौभाग्य भी मुझे दिलाया। कभी-कभार माँ-पिताजी से या किसी कॉमन मित्र के मिलने पर रीमा और उसके घर वालों की खबर मिलती रहती। इधर मेरी भी नौकरी काफी व्यस्तता भरी थी। रीमा मेरी शादी पर तो नहीं आई थी, परंतु उसने अपनी शुभकामनाएँ भेज दीं थीं।

इलाहाबाद स्टेशन आ चुका था। निखिल स्टेशन से सीधा अस्पताल गया। रिसेप्शन से उसका कमरा नंबर पता किया। एक प्राइवेट रूम में प्रवेश करते ही निखिल ने देखा कि रीमा एक पलंग पर लेटी थी और एक नर्स उसका चेकअप कर रही थी। पल भर के लिए तो निखिल उसे पहचान ही न पाया। वह बहुत कमजोर लग रही थी। निखिल को देख कर उसकी आंखों में एक रौशनी-सी चमकी। होठों में हल्की-सी मुस्कुराहट आई। उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया तो निखिल ने भी आगे बढ़कर अपना हाथ उसके हाथ में दे दिया। रीमा कुछ कहना चाह रही थी, परंतु उसकी आवाज स्पष्ट न होने के कारण निखिल को कुछ समझ नहीं आ रहा था। उसने नर्स की तरफ देखा। वह निखिल को एक कोने में अलग से ले गई। उसने बताया, "रीमा की जिंदगी अब कुछ ही घंटे की बाकी बची थी। इसलिए आपको तार देकर बुलाया गया है।"

जब निखिल रीमा के बेड के पास दोबारा पहुंचा तो उसने अपने तकिए के नीचे से चिट्ठी निकालकर निखिल को पढ़ने के लिए दी। रीमा ने बड़े स्पष्ट शब्दों में लिखा था... "मैं सिर्फ और सिर्फ आपसे ही शादी करना चाहती थी, परंतु मैंने अविवाहित रहने का फैसला इसलिए किया था क्योंकि मेरी जन्म कुंडली में पहले विवाह में संबंध विच्छेद लिखा था। आपसे किसी भी प्रकार के संबंध विच्छेद के बजाय मैंने ताउम्र अविवाहित रहना पसंद किया। मैं समझती हूँ कि मेरे निर्णय की वजह से काफी लोगों को तकलीफ पहुंची थी पर मैं उन सब से माफी मांगती हूँ। अब जबकि मेरी जिंदगी कुछ ही समय की रह गई है तो मैं आपको कुछ जिम्मेदारी सौंपना चाहती हूँ। मेरे माँ पिता जी अब नहीं रहे और अपने भाइयों पर मुझे विश्वास नहीं कि वे मेरे द्वारा सौंपी गई जिम्मेदारी को बाखूबी निभाएंगे। मैं चाहती हूँ कि मेरी सारी चल-अचल संपत्ति का उपयोग गरीब लड़कियों की मदद के लिए किया जाए। दिल्ली में कई लड़कियाँ दूसरे शहरों से नौकरी करने आती हैं और रहने की सही व्यवस्था ना होने के कारण उन्हें काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसी लड़कियों के रहने की व्यवस्था के लिए मैंने कुछ एनजीओ से बात कर रखी है जो इस क्षेत्र में कुछ विस्तार करने का विचार रखते हैं। परंतु पैसे की कमी होने के कारण इस दिशा में कुछ सकारात्मक नहीं कर पा रहे। इन एनजीओ के कोन्टेक्ट नंबर आपको मेरी डायरी में मिल जाएंगे। आप उनसे संपर्क कर लड़कियों के लिए आश्रय की व्यवस्था करा दीजिएगा। मैंने अपनी 'विल' लिख छोड़ी है और मेरी संपूर्ण चल और अचल संपत्ति का 'ट्रस्टीशिप' मैंने आपके नाम कर दिया है। कुछ पैसे का उपयोग गरीब बच्चों को स्कॉलरशिप देने में किया जाए। मेरी अंतिम इच्छा है कि मेरी अस्थियों का प्रवाह प्रयाग में संगम घाट पर किया जाए।"

रात भर रीमा निखिल का हाथ थामे रही। जब उसके हाथ का ठंडापन निखिल के शरीर में एक अजीब सी सिहरन छोड़ने लगा तो वह समझ गया कि वह उसे हमेशा-हमेशा के लिए छोड़ कर जा चुकी थी। उसकी अंतिम इच्छा निखिल ने पूरी की और उसकी अस्थियों को प्रयाग तीर्थ के घाट में प्रवाहित कर दिया। बाकी दो इच्छाओं को पूरा करने के लिए वह शीघ्र से शीघ्र दिल्ली में अपने घर लौटना चाहता था। वापसी के सफर में वह हर पल रीमा की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता रहा था। रीमा का मूक प्यार निखिल के लिए मूक प्रार्थना बन चुका था। ■

आपकी अपनी लोकप्रिय पत्रिका



भारतीय रेल

अब

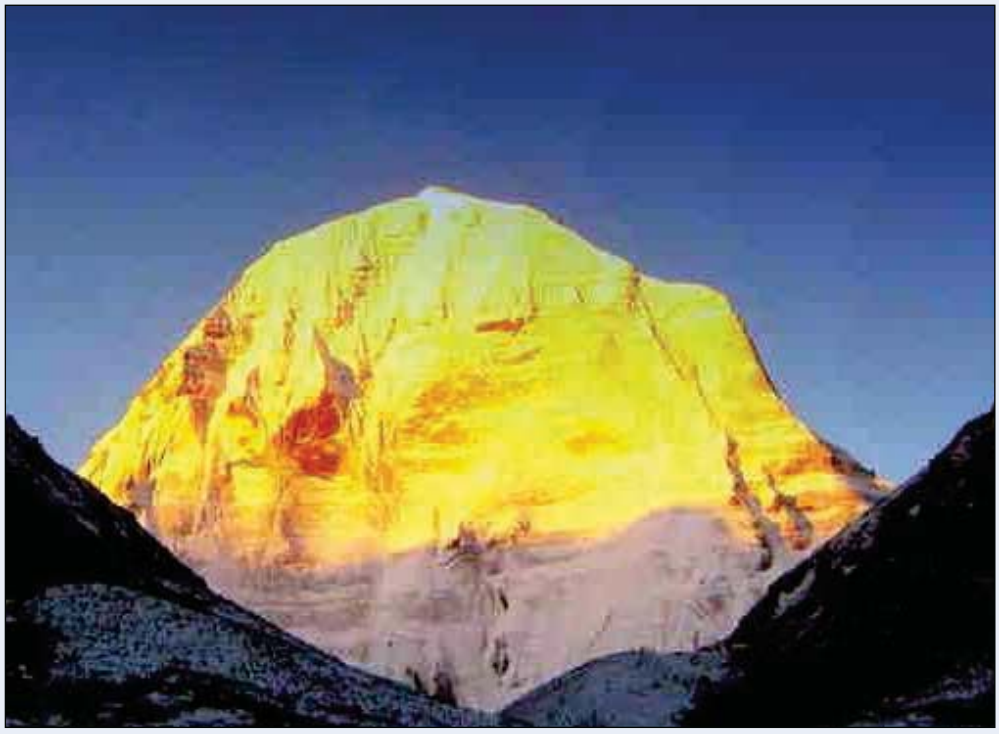
चाणक्यपुरी, नई दिल्ली में भी उपलब्ध है

आप यहाँ पर पत्रिका की सदस्यता एवं पत्रिका खरीद भी सकते हैं

श्रावण मास में भक्ति एवं आनंद की धार्मिक यात्राएँ

दुर्गादत्त शर्मा
पूर्व सचिव, उत्तर रेलवे ट्रैकिंग एवं माउंटेनियरिंग एसोसिएशन, नई दिल्ली

श्रावण मास पूर्णत: भगवान शिव को समर्पित है तथा आषाढ़ शुक्ल एकादशी से लेकर कार्तिक शुक्ल दशमी तक को 'चार्तुमास' कहा गया है। इस अवधि में जब सभी देवगण सो जाते हैं तब भक्तगण इन दिनों देवाधिदेव महादेव की ही उपासना करते हैं, कहते है समस्त हिमालय भगवान शिव की तपस्थली है और इस श्रावण मास में भगवान शिव के तीर्थ स्थलों की यात्रा कर श्रद्धालु अपना जीवन सफल मानते हैं। हिमालय की विभिन्न क्षेत्रों की चार प्रमुख यात्राओं में कैलाश मानसरोवर यात्रा एक ऐसी विशुद्ध धार्मिक यात्रा है, जहाँ पग-पग आगे बढ़ते हुए 'ओम नम: शिवाय' का जाप स्वत: मुँह से निकलता है हर भारतीय की इच्छा होती है कि जीवन में एक बार उसे कैलाश मानसरोवर की यात्रा का अवसर मिल जाए, परन्तु 250 किमी की इस यात्रा को करने का साहस बहुत कम लोग ही उठा पाते हैं। यह एक ऐसी यात्रा है जो प्रति वर्ष विदेश मंत्रालय द्वारा आयोजित की जाती है। 26 दिन की इस यात्रा का प्रारम्भ दिल्ली से होता है। विदेश मंत्रालय एवं कुमायुं मंडल विकास निगम द्वारा संचालित विशेष ए.सी. बसों द्वारा दिल्ली से चलकर अल्मोड़ा होते हुए यात्री धारचूला पहुँचते हैं वहाँ से तवाघाट तक बस से यात्रा करते हैं और यहीं से शुरू होती है कठिन पैदल यात्रा। समंगती, गाला, बुद्धि, गूंजी, कालापानी, नवीढंग होते हुए भारत तिब्बत के तकला कोट में पहुँचते है, तकरीबन 100 किमी की यह यात्रा काफी कठिन तथा चढ़ाई वाली है। तिब्बत सीमा पर पहुँचने के पश्चात कैलाश मानसरोवर की यात्रा की जिम्मेदारी चीनी अधिकारियों की होती है। कैलाश परिक्रमा करने वाले दारचेन से तथा मानसरोवर की यात्रा किद्ध से प्रारम्भ करते हैं। डेराफुक से कैलाश पर्वत का मनमोहक दृश्य देखने को मिलता है। सूर्यास्त के समय पड़ने वाली सुनहरी किरणें जब कैलाश



कैलाश पर्वत



यम द्वार (कैलाश मानसरोवर)


कैलाश मानसरोवर

पर्वत पर पड़ती हैं तो ऐसा दृश्य मन को अभिभूत करने वाला होता है।

अष्टपद से भी कैलाश पर्वत का अनुपम दृश्य मन को अभिभूत करने देने वाला होता है। 88 किमी परिधि में फैली मानसरोवर झील की परिक्रमा बस द्वारा की जाती है। मानसरोवर झील के शीतल जल में स्नान एवं पूजा-अर्चना के पश्चात् मन को जो शांति मिलती है लगता है मनोकामना पूरी हो गयीं।

यम द्वार की 12 बार परिक्रमाएं तथा उसके पश्चात् यम द्वार के बीच से निकलकर पैदल यात्रा करने का अपना महत्त्व है। डोल्मा पास के बारे में भी कहा जाता है कि तिब्बत की देवी डोल्मा उसकी रक्षा करती है। इस यात्रा के लिए जो ज्यादा समय नहीं निकाल पाते, उनके लिए नेपाल के रास्ते हवाई सेवा भी उपलब्ध है। अनेक मान्यता प्राप्त एजेंसियाँ कैलाश मानसरोवर यात्रा के पैकेज उपलब्ध कराती हैं।

जम्मू-कश्मीर की राजधानी श्रीनगर से 80 किमी की दूरी पर स्थित पहलगाम से शुरू होने वाली यात्रा में भक्त चंदनवाड़ी-पिस्सू घाटी, शेषनाग, महागुना दर्रापार करपंचतरणी पहुँचते हैं, पंचतरणी से अमर नाथ गुफा पहुँचने पर बर्फ से बने प्राकृतिक शिवलिंग को देख कर मस्तक श्रद्धा से झुक जाता है। मान्यता है कि इसी गुफा में भगवान शिव ने देवी पार्वती को अमर कथा सुनाई थी। इस यात्रा में लाखों श्रद्धालुओं के लिए मुख्य यात्रा के मार्ग में मुख्य स्थानों पर रहने, खाने एवं सुरक्षा के इंतजाम सरकार एवं स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा किये जाते हैं। भगवान अमरनाथ 'बर्फानी बाबा' के नाम से भी विख्यात हैं। कश्मीर स्थित भगवान अमरनाथ की एक महीने से भी ज्यादा चलने वाली इस यात्रा का समापन श्रावण मास की शुक्ल पूर्णिमा को होता है।

अमरनाथ गुफा जाने के लिए दूसरा मार्ग सोनमर्ग बालटाल से होकर जाता है। पहलगाम से यात्रा में जहाँ तीन से चार दिन लगते हैं, वही बालटाल से आप एक दिन में ही दर्शन कर वापिस बालटाल पहुँच सकते हैं।

भगवान शिव की तीसरी प्रमुख यात्रा हिमाचल के किन्नौर क्षेत्र में स्थित किन्नर कैलाश के नाम से विख्यात है। इस शिखर के बारे में मान्यता है कि किन्नर कैलाश चोटी पर भगवान शिव स्वयं निवास करते हैं और इसकी परिक्रमा को विशेष महत्त्व दिया जाता है। शिमला से सड़क मार्ग द्वारा कुफरी, नारकंडा, रामपुर, रिकांग्फ्यू होते हुए लाम्बर पहुँचते हैं। किन्नौर की सांगला घाटी को 'हिमालय के मुकुट का रत्न' भी कहा जाता है।

पुराने समय में किन्नर कैलाश की परिक्रमा की 200 किमी की यात्रा पंवारी बौद्ध मंदिर से प्रारम्भ होकर 'पुरबनी' 'रिब्बा' 'थांगी' 'लाम्बर' 'चारंग' 'लालती' तथा चारंग दर्रा पर कर चिटकुल, रकचम, सांगला, कामरू, हरांग घाटी होते हुए वापिस पवारी पर समाप्त होती थी, परन्तु अब मार्गों पर सड़क बन जाने के पश्चात् यह यात्रा 60-70 किमी रह गई है।

भगवान शिव की क्रीड़ा स्थली के रूप में विख्यात मणि महेश यात्रा में भी न केवल स्थानीय लोग वरन् देश के कोने-कोने से भक्त एवं श्रद्धालु आते हैं। हिमाचल के चंबा से भरमोर, राख, खड़ामुख होते हुए बस द्वारा पहुँचा जा सकता है। भरमोर से हरसर जीप द्वारा पहुँचते हैं जहाँ से पैदल यात्रा आरम्भ होती है (राधा अष्टमी के मौके पर मणि महेश झील पर लगने वाले मेले में यहाँ के निवासी बड़े उत्साह के साथ भाग लेते हैं)। हरसर से 'धनछो' का विशाल जल प्रपात एक पौराणिक कथा समेटे हुए है। कहते हैं कि शिवजी भस्मासुर से बचते हुए इसी प्रपात की कंदराओं में छिपे थे। धनछो से बुढ़हल नदी पार कर भैरव घाटी होते हुए गौरीकुंड पहुँच कर मणि महेश शिखर के प्रथम दर्शन होते हैं। यहाँ से दो किमी



अमरनाथ यात्रा

की सीधी चढ़ाई के पश्चात् मणि महेश की पवित्र झील में स्नान करने से ही सारी थकान मिट जाती है।

यहाँ के निवासी राधा अष्टमी के मौके पर मणि महेश झील पर लगने वाले मेले में बड़े उत्साह के साथ भाग लेते हैं। हजारों की संख्या में शिव भक्त मणि महेश झील में स्नान कर पूजा-अर्चना करते हैं और अपनी मनौती पूर्ण होने पर लोहे के त्रिशूल, कड़ी व झंडियाँ आदि यहाँ पर बने छोटे से मंदिर में चढ़ाते हैं।

कहा जाता है कि राधा अष्टमी के दिन सूर्य की किरणें जब कैलाश शिखर पर पड़ती हैं तो शिखर पर प्राकृतिक रूप से बने शिवलिंग से मणि जैसी आभा निकलती है और उसकी किरणें जब झील के पानी पर पड़ती हैं तो उस समय स्नान करने से मनुष्य को अनेक रोगों से मुक्ति मिलती है। इन उपरोक्त धार्मिक यात्राओं के अलावा श्रावण मास में भक्तगण गंगा से पवित्र जल लेकर कांवड़ यात्रा करते हुए अपने अपने शिवालयों में जल चढ़ाते है। कांवड़ यात्रा एक उपासना, तीर्थ सेवन जैसी परम पवित्र प्रक्रिया है, जिसके बदलते स्वरूप को सुधारने की आवश्यकता है।

यह स्थान/धार्मिक यात्राएँ न केवल भक्तों एवं श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करती हैं वरन् प्रकृति से प्यार करने वालों एवं ट्रैकिंग का शौक रखने वालों के लिए भी एक आदर्श ट्रैकिंग स्थान हैं। बर्फ से ढके पहाड़, रास्तों में बहने वाली नदियों पर जमी बर्फ और उस पर चलने का रोमांच एक दूसरी दुनिया में ले जाता है।

लो एल्टीट्यूड ट्रैक की बात करें तो सीढ़ीनुमा फैले खेतों एवं बागानों से गुजरते हुए फलों की मीठी खुशबू, रास्ते में पड़ते छोटे-छोटे घर और उस क्षेत्र के लोगों के रहन-सहन उनकी संस्कृति एवं उनका सरल व स्नेहभरा व्यवहार आपका मन मोह लेता है और उन स्थानों की ओर बार-बार जाने का मन करता है। प्रकृति के प्रति लगाव का यह शौक अगर लग गया तो आप वर्ष में एक बार तो अवश्य ही प्रकृति के नए-नए रूप और अलग-अलग क्षेत्रों की ओर जाने की इच्छा रखेंगे।

लेखक को उपरोक्त स्थानों पर ट्रैकिंग करने का अवसर मिला है, जहाँ भक्ति के साथ-साथ प्रकृति के साथ आत्मसात् होने का अनुभव अनूठा है। ■



मणि महेश लेक ट्रैक - कैलाश पर्वत



कैलाश किन्नौर

64वें राष्ट्रीय रेल सप्ताह-2019 में पुरस्कृत कर्मियों की सूची

क्र.	नाम	पदनाम	क्षेत्र
1	राकेश एस. पागी	कार्यालय अधीक्षक	मध्य रेल
2	अजीत देवलाल म्हसालकर	नयाचार निरीक्षक	मध्य रेल
3	राजेंद्र नागेश देशपांडे	वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर	मध्य रेल
4	मिखिल कुमार कारेकर	वरिष्ठ कुशलता अधिकारी	मध्य रेल
5	मोहित सोराडी	मंडल सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर	मध्य रेल
6	अरुण कुमार	मंडल बिजली इंजीनियर	मध्य रेल
7	डॉ. स्वप्नील धनराज निला	वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक	मध्य रेल
8	डॉ. दीपक डालमिया	वरिष्ठ मंडल चिकित्सा अधिकारी	मध्य रेल
9	शेख सफिकुल आलम	गेटमैन	पूर्व रेलवे
10	विलासी मिंज	उप निरीक्षक	पूर्व रेलवे
11	सुरेंद्र कुमार	मुख्य टिकट निरीक्षक	पूर्व रेलवे
12	बरून चन्द्र वार	वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर	पूर्व रेलवे
13	बिजन कुमार विश्वास	वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर	पूर्व रेलवे
14	उज्जल कुमार दास	वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर	पूर्व रेलवे
15	रमेश कुमार	उप मुख्य लेखा अधिकारी	पूर्व रेलवे
16	सज्जन पासवान	ट्रैक मेंटेनर	पूर्व मध्य रेलवे
17	गिरिजेश कुमार	कॉन्स्टेबल	पूर्व मध्य रेलवे
18	अवनी भूषण प्रसाद यादव	लोको पायलट	पूर्व मध्य रेलवे
19	प्रकाश चन्द्र बादल	लोको पायलट	पूर्व मध्य रेलवे
20	अशोक कुमार	मंडल पर्यावरण एवं हाउस कीपिंग प्रबंधक	पूर्व मध्य रेलवे
21	अनिल कुमार सिंह	उप मुख्य इंजीनियर	पूर्व मध्य रेलवे
22	मधुसूधनन टी.वी.	उप वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी	पूर्व मध्य रेलवे
23	गिरीधारी साहु	मुख्य नियंत्रक	पूर्व तट रेलवे
24	बिचित्रानंद प्रधान	वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर	पूर्व तट रेलवे
25	जी. सुनील कुमार	मंडल वाणिज्यिक प्रबंधक	पूर्व तट रेलवे
26	नन्द लाल	कीमैन	उत्तर रेलवे
27	समय सिंह गुर्जर	केबिनमैन	उत्तर रेलवे
28	मंजु जोशी	वरिष्ठ मेट्रन	उत्तर रेलवे
29	अमित कुमार भारती	स्टेशन मास्टर	उत्तर रेलवे
30	अनवर अंसारी	मुख्य माल पर्यवेक्षक (इस समय वाणिज्यिक निरीक्षक)	उत्तर रेलवे
31	अनुराधा सिंह	मुख्य टिकट निरीक्षक	उत्तर रेलवे
32	परमजीत कुमार	मुख्य लोको निरीक्षक	उत्तर रेलवे
33	मुकेश कुमार	मुख्य सतर्कता निरीक्षक	उत्तर रेलवे
34	राजेश कुमार शर्मा	वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी (लेखा)	उत्तर रेलवे
35	सुशील कुमार	सहायक मंडल सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर	उत्तर रेलवे
36	जगमोहन सी लाम्बा	कार्यपालक इंजीनियर	उत्तर रेलवे
37	स्वदेश राय	वरिष्ठ मंडल बिजली इंजीनियर	उत्तर रेलवे
38	डॉ. अमित बालानी	वरिष्ठ मंडल चिकित्सा अधिकारी	उत्तर रेलवे
39	राजेश कुमार	ट्रैकमैन	उत्तर मध्य रेलवे
40	विनोद कुमार सिंह	लोको पायलट	उत्तर मध्य रेलवे
41	हिमांशु शेखर उपाध्याय	वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक	उत्तर मध्य रेलवे
42	प्रकाश उपाध्याय	वरिष्ठ मंडल इंजीनियर	उत्तर मध्य रेलवे
43	प्रवीण कुमार	निरीक्षक	पूर्वोत्तर रेलवे
44	फरहत महमूद	वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर	पूर्वोत्तर रेलवे
45	रामवीर सिंह	वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर	पूर्वोत्तर रेलवे
46	सुमित गर्ग	वरिष्ठ मंडल बिजली इंजीनियर	पूर्वोत्तर रेलवे
47	पंकज कुमार दास	वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर	पूर्वोत्तर सीमा रेलवे
48	हिमांशु गुनावत	कोचिंग डिपो अधिकारी	पूर्वोत्तर सीमा रेलवे
49	हरीश	कॉन्स्टेबल	उत्तर पश्चिम रेलवे
50	वीरेन्द्र जौहर	चल टिकट निरीक्षक	उत्तर पश्चिम रेलवे
51	मनोज कुमार सिंह	वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त	उत्तर पश्चिम रेलवे
52	सत्य नारायण यादव	वरिष्ठ मंडल इंजीनियर	उत्तर पश्चिम रेलवे
53	श्याम सुन्दर मंगल	उप मुख्य बिजली इंजीनियर, उत्तर पश्चिम रेलवे	(इस समय सीपीडी/आरई/ अहमदाबाद)
54	अजीत कुमार पाल	पॉइंट्समैन	दक्षिण रेलवे
55	आर. पवुनुदुरई	वरिष्ठ लोको पायलट	दक्षिण रेलवे
56	एम. पी. शिनोज कुमार	उप निरीक्षक	दक्षिण रेलवे
57	षाजी जोर्ज	वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर	दक्षिण रेलवे
58	एफ. आर. ज्ञानसेल्वी	वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी (लेखा)	दक्षिण रेलवे
59	सी. धनेष कुमार	सहायक मंडल बिजली इंजीनियर	दक्षिण रेलवे
60	ए. विजुविन	वरिष्ठ मंडल वाणिज्यिक प्रबंधक	दक्षिण रेलवे
61	संजीत कुमार	ट्रैक मेंटेनर	दक्षिण मध्य रेलवे
62	गोत्तुमुक्कल वेंकट सुरपा राजू	तकनीशियन	दक्षिण मध्य रेलवे
63	जे. किशोर	कनिष्ठ इंजीनियर	दक्षिण मध्य रेलवे
64	आंजनेयुलु वड्डे	वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक	दक्षिण मध्य रेलवे
65	एन. मनोज	वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक	दक्षिण मध्य रेलवे
66	अल्लम कोटेश्वर राव	वरिष्ठ मंडल बिजली इंजीनियर	दक्षिण मध्य रेलवे

क्र.	नाम	पदनाम	क्षेत्र
67	सुदेब बिश्वास	वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर	दक्षिण पूर्व रेलवे
68	इंद्रनील मुखर्जी	खंड नियंत्रक	दक्षिण पूर्व रेलवे
69	सेख कामाल मुस्ताफ़ा	वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर	दक्षिण पूर्व रेलवे
70	सौरभ राज	वरिष्ठ सहायक मंडल इंजीनियर	दक्षिण पूर्व रेलवे
71	संतोश कुमार मलिक	मंडल परिचालन प्रबंधक	दक्षिण पूर्व रेलवे
72	विनेक मेश्राम	उप निरीक्षक	दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
73	उदय कुमार भारती	वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी	दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
74	तन्मय मुखोपाध्याय	वरिष्ठ मंडल वाणिज्यिक प्रबंधक	दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
75	देबस्मिता चट्टोपाध्याय बैनर्जी	सुरक्षा आयुक्त	दक्षिण पश्चिम रेलवे
76	के. कृष्ण चैतन्य	मंडल वाणिज्यिक प्रबंधक	दक्षिण पश्चिम रेलवे
77	गोविन्द कुमार शर्मा	सहायक मंडल इंजीनियर	पश्चिम रेलवे
78	ब्रजेश डी. मौर्या	सहायक वाणिज्यिक प्रबंधक	पश्चिम रेलवे
79	हरिकेश मीना	वरिष्ठ मंडल बिजली इंजीनियर	पश्चिम रेलवे
80	ऋतुराज मिश्र	वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी	पश्चिम रेलवे
81	रविरंजन कुमार	वरिष्ठ मंडल वित्त प्रबंधक	पश्चिम रेलवे
82	जी. मोहनन नायर	उप महाप्रबंधक (सेवानिवृत्त)	पश्चिम रेलवे
83	कामेश्वर पासवान	उप मुख्य सामग्री प्रबंधक	पश्चिम रेलवे
84	राकेश पांडे	ट्रैक मेंटेनर	पश्चिम मध्य रेलवे
85	प्रकाश खेवले	वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर	पश्चिम मध्य रेलवे
86	मधुर वर्मा	मंडल परिचालन प्रबंधक	पश्चिम मध्य रेलवे
87	संजय तिवारी	उप मुख्य बिजली इंजीनियर	पश्चिम मध्य रेलवे
88	विजय पाण्डेय	वरिष्ठ मंडल इंजीनियर	पश्चिम मध्य रेलवे
89	तापस कुमार दास	कॉन्स्टेबल	मेट्रो रेल,कोलकाता
90	अंकित कुमार वर्मा	वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर	चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना
91	डॉ. जयदीप मित्र	वरिष्ठ मंडल चिकित्सा अधिकारी	चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना
92	विजय	उप मुख्य डिज़ाइन इंजीनियर	डीज़ल रेल इंजन कारखाना
93	आर. रवि	मुख्य कार्यालय अधीक्षक	सवारी डिब्बा कारखाना
94	टी. दिलीप कुमार	उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर	सवारी डिब्बा कारखाना
95	भरथरी कुमार	वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर	रेल डिब्बा कारखाना
96	बसनगौड़ा पाटिल	वरिष्ठ तकनीशियन (सेवानिवृत्त)	रेल पहिया कारखाना
97	रमेश कुमार	तकनीशियन	केन्द्रीय रेल विद्युतीकरण संगठन
98	संतोष कुमार राजुला	उप मुख्य बिजली इंजीनियर	केन्द्रीय रेल विद्युतीकरण संगठन
99	मनोज कुमार सिंह	उप मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर	पूर्वोत्तर सीमा रेलवे (निर्माण)
100	राजीव रौशन	सहायक निरीक्षण इंजीनियर	अनुसंधान अभिकल्प एवं मानक संगठन
101	अमजद अली निज़ामी	वरिष्ठ अनुदेशक	भारतीय रेल सिविल इंजीनियरी संस्थान
102	अवधेश कुमार सिंह	स्टेशन मास्टर एवं अवसंरचना प्रभारी	भारतीय रेल परिवहन प्रबंधन संस्थान
103	अरविन्द दत्ता	उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर	डीज़ल रेल इंजन आधुनिकीकरण कारखाना
104	बीरज कुमार	सहायक कारखाना प्रबंधक	रेल पहिया कारखाना
105	प्रभात रंजन शुक्ल	उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर	आधुनिक रेल कोच फैक्टरी
106	अनुराग कुमार मिश्रा	मल्टी टास्किंग कर्मचारी	रेलवे बोर्ड
107	सच्चिदानंद चौधरी	निजी सहायक	रेलवे बोर्ड
108	लक्ष्मण सिंह रावत	निजी सहायक	रेलवे बोर्ड
109	सुरेश चन्द्र जैसवाल	वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर	रेलवे बोर्ड
110	विजय सिंह	अनुभाग अधिकारी	रेलवे बोर्ड
111	अशोक कुमार	अनुभाग अधिकारी	रेलवे बोर्ड
112	विरेन्द्र कुमार	उप निदेशक	रेलवे बोर्ड
113	मोनिका	उप निदेशक	रेलवे बोर्ड
114	बी. एल. लोहिया	उप निदेशक	रेलवे बोर्ड
115	पदमा शर्मा	संयुक्त निदेशक	रेलवे बोर्ड
116	वी. प्रकाश	संयुक्त निदेशक	रेलवे बोर्ड
117	रोहित परमार	निदेशक, रेलवे बोर्ड	(इस समय समूह महाप्रबंधक/वित्त, कॉनकोर)
118	अभिषेक कुमार	निदेशक	रेलवे बोर्ड
119	जवाहर लाल	निदेशक	रेलवे बोर्ड
120	दिलीप कुमार चावला	मुख्य कार्यालय अधीक्षक	उत्तर रेलवे
121	दीपक मूलचंदानी	वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक	पश्चिम रेलवे
122	विकास वधवा	कार्यालय अधीक्षक	उत्तर रेलवे
123	के. आर. विनायक राव	मुख्य कार्यालय अधीक्षक	रेल भर्ती बोर्ड/ बेंगलूरू
124	संजय कुमार	वरिष्ठ सचिवालय सहायक	रेलवे बोर्ड
125	बालकृष्ण साहू	अनुभाग अधिकारी	रेलवे बोर्ड

शील्ड विजेताओं की सूची

शील्ड का नाम	विजेता रेलवे
समग्र स्वास्थ्य सेवा शील्ड	पूर्व तट रेलवे
सुरक्षा शील्ड	उत्तर पश्चिम रेलवे
सिविल इंजीनियरी शील्ड	पश्चिम रेलवे, दक्षिण मध्य रेलवे और उत्तर रेलवे (संयुक्त रूप से)
चल स्टॉक शील्ड (पूर्ववर्ती यांत्रिक इंजीनियरी शील्ड)	पूर्व रेलवे
बिजली इंजीनियरी शील्ड	उत्तर पश्चिम रेलवे
सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियरी शील्ड	दक्षिण पूर्व रेलवे और पूर्व मध्य रेलवे (संयुक्त रूप से)
भंडार शील्ड	दक्षिण पश्चिम रेलवे एवं दक्षिण मध्य रेलवे (संयुक्त रूप से)
यातायात परिवहन शील्ड	दक्षिण मध्य रेलवे
लेखा एवं वित्त प्रबंधन शील्ड	पूर्व तट रेलवे
वाणिज्यिक शील्ड	पूर्व रेलवे
सिविल इंजीनियरी निर्माण शील्ड	दक्षिण पश्चिम रेलवे एवं दक्षिण पूर्व रेलवे (संयुक्त रूप से)
कार्मिक प्रबंधन शील्ड	दक्षिण मध्य रेलवे
सर्वोत्तम उत्पादन इकाई शील्ड	आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना
पर्यावरण एवं स्वच्छता शील्ड	पश्चिम रेलवे
सर्वोत्तम कारखाना (चल स्टॉक) शील्ड	गोल्डन रॉक कारखाना, दक्षिण रेलवे तथा जगाधरी कारखाना, उत्तर रेलवे (संयुक्त रूप से)
रनिंग रूम शील्ड	आमला रनिंग रूम, नागपुर मंडल, मध्य रेल
बिक्री प्रबंधन शील्ड	पश्चिम रेलवे
समपार तथा रोड ओवर/रोड अंडर ब्रिज संरक्षा कार्य शील्ड	उत्तर रेलवे तथा पश्चिम रेलवे (संयुक्त रूप से)
संरक्षा शील्ड	पूर्व रेलवे
गोविन्द वल्लभ पंत शील्ड	दक्षिण पूर्व रेलवे

अंतर - रेलवे चित्रकला प्रतियोगिता के विजेता

श्री पी. श्यामसुंदर राव आचारी
चपरासी
पूर्व तट रेलवे

श्री चन्द्र प्रकाश रामटहल
हेल्पर/खलासी
मध्य रेल

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता के विजेता

अराजपत्रित

प्रथम

श्री आदित्य आर्यन
वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर
कर्षण एवं चल स्टॉक, पूर्व तट रेलवे

द्वितीय

श्री अब्दुल नसीम
स्वास्थ्य निरीक्षक
दक्षिण रेलवे

राजपत्रित

प्रथम

श्री हिमांशु जैन
सचिव, महाप्रबंधक कार्यालय
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे

द्वितीय

श्री प्रवीणचन्द्र एन. परमार
वरिष्ठ प्रोफेसर (परिवहन प्रबंधन)
भारतीय रेल राष्ट्रीय अकादमी, वडोदरा

अंग्रेजी निबंध प्रतियोगिता के विजेता

अराजपत्रित

प्रथम

सुश्री डी. लावण्या
मुख्य प्रचार निरीक्षक
सवारी डिब्बा कारखाना

द्वितीय

श्री नीरज कुमार
वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर
मध्य रेल

राजपत्रित

प्रथम

श्री राजीव कुमार सक्सेना
एसडीजीएम एवं सीवीओ
दक्षिण पश्चिम रेलवे

द्वितीय

श्री टी. डेलसन जोसफ
उप वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी,
सवारी डिब्बा कारखाना

अंतर-रेलवे प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेता (सामूहिक प्रतियोगिता)

विजेता : दक्षिण रेलवे

श्री पी.वी. मनोज
डीसीएम/एसए

श्री टोनीश थॉमस
सीटीआई/टीवीसी

श्री पी.आर. गिरीश कुमार
जेई/टीवीसी

उप विजेता : सवारी डिब्बा कारखाना

श्रीमती एस. विजयाचित्रा
एसई/आईटी

श्री संतोष जे. अब्राहम
एसई/आईटी

श्री के. पुरुषोत्तम रेड्डी
मुख्य कार्यालय अधीक्षक

अखिल भारतीय रेल वृत्तचित्र प्रतियोगिता के विजेता

प्रथम

जनसंपर्क विभाग, पूर्व तट रेलवे
श्री जे.पी. मिश्र
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी

द्वितीय

जनसंपर्क विभाग, पूर्वोत्तर सीमा रेलवे
श्री पी.जे. शर्मा
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी

अंतर-रेलवे सांस्कृतिक प्रतियोगिता के विजेता

सुगम संगीत (पुरुष)

प्रथम

श्री पंकज बंडु जाधव
वरिष्ठ लिपिक
सवारी डिब्बा कारखाना

द्वितीय

श्री गौरव कुमार पाठक
कनिष्ठ लिपिक
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे

एकल नृत्य (क्लासिकल)

प्रथम

सुश्री मौसमी साहा
कार्यालय अधीक्षक
चित्तरंजन रेलइंजन कारखाना

द्वितीय

सुश्री महेश्वरी प्रधान
कनिष्ठ लिपिक
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे

सुगम संगीत (महिला)

प्रथम

श्रीमती पुष्पा त्रिपाठी
वरिष्ठ लिपिक
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे

द्वितीय

सुश्री शुभश्री दाम
कनिष्ठ लिपिक
पूर्वोत्तर रेलवे

सामूहिक नृत्य (लोक नृत्य)

प्रथम

पूर्व तट रेलवे

अरुण कुमार सुना टीएम-II/टीआईजी/एसबीपी	सत्य नारायण भोई टीएम-IV/टीआईजी/एसबीपी
अशोक कुमार नाग हेल्पर-II	अरुण टांडी टीएम-IV
जयंत टाकरी टीए-I	संजीब कुमार बिस्वाल टीएम-IV
सुचिस्मिता षड़ंगी हेल्पर-II	भानुप्रिया महानंदा हेल्पर-II
निर्झरिणी महाराणा केएसआई/एचपी-I	सबिता बनछोर केएसआई/एचपी-I

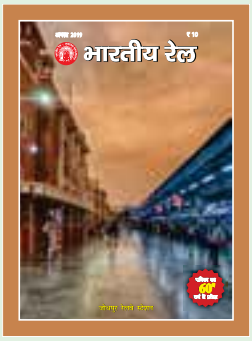
द्वितीय

पश्चिम मध्य रेलवे

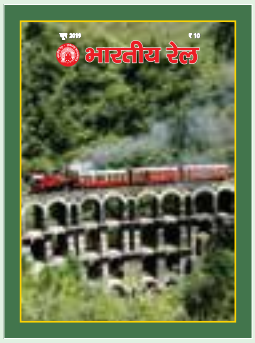
दीपा सिंह कार्यालय अधीक्षक	रिजवान अली खान कार्यालय अधीक्षक
कंचन पसेरिया कार्यालय सहायक	अरविंद पसेरिया कनिष्ठ लिपिक
दिलीप चिपेलकर कनिष्ठ लिपिक	गणेश स्वरुप विरह सीटीआई
आत्मानंद श्रीवास्तव सीटीआई	ज्वेल जॉन फिलिप कार्यालय अधीक्षक
पूजा विष्ट ट्रैकमैन/जेपीबी	मोहम्मद एजाज़ खान वरिष्ठ लिपिक



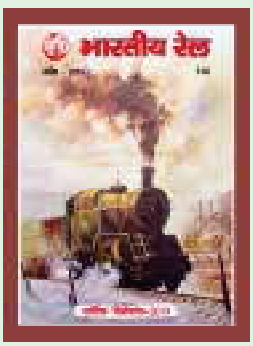
रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका











भारतीय रेल

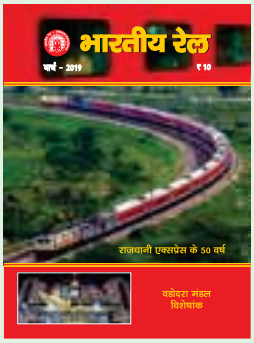
वर्ष 2020 में
विशेषांक हेतु

- क्षेत्रीय रेल • मंडल
- उत्पादन इकाई एवं अन्य

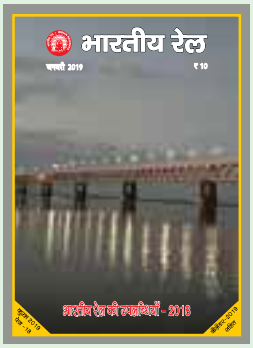
जो अपनी उपलब्धियों पर आधारित विशेषांक प्रकाशित करवाना चाहते हैं, वे कृपया संपर्क करें

संपादक, 9717641075,
editorbhartiyarail@gmail.com
editorbhartiyarailrb@gmail.com

विशेषांक हेतु विज्ञापन दरें सामान्य रहेंगी।
विज्ञापन दरें देखें (पेज नं. 4)











रेल, पर्यटन व साहित्य को एक साथ संजोये
रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एक मात्र हिन्दी मासिक पत्रिका



भारतीय रेल

आज ही सदस्य बनें



सदस्यता फॉर्म

नाम .....

पता .....

पोस्ट..... जिला .....

राज्य..... पिन कोड .....

मोबाइल ..... ई-मेल .....

वार्षिक सदस्यता	सर्व साधारण	रेलकर्मी	विशेषांक	एक प्रति
एक वर्ष	₹100*	₹90*	₹40	₹10
दो वर्ष	₹200*	₹180*	₹40	₹10
तीन वर्ष	₹300*	₹270*	₹40	₹10

* विशेषांक के साथ

रेल कर्मचारी ..... हाँ/नहीं वर्तमान सदस्यता (हो तो) संख्या ..... तारीख .....

देय राशि : डी.डी. ..... चेक ..... मनी ऑर्डर ..... पोस्टल ऑर्डर .....

डीडी/चेक/म.ओ./पो.ओ. नंबर ..... स्थान ..... रुपये ..... दिनांक .....

(डी.डी./चेक/म.ओ./पो.ओ. देय - 'व्यापार प्रबंधक, भारतीय रेल, नई दिल्ली')

संपर्क

310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली - 110001

(011) 23382531/23303665/23304456 (रेलवे नं. 43665, 44456)

ई-मेल : bmpr310rb@gmail.com / editorbhartiyarailrb@gmail.com

सदस्यता-फॉर्म की फोटोकॉपी मान्य है

YOUR PARTNERS IN SAFETY
SINCE 1999

ASHLOK

SOLDIERS OF SAFETY SOS







A.L.I.C.E

LIGHTNING PROTECTION

RoHS

UL

NFC 17-102:2011 CERTIFIED



10000+ MW

Solar Farms Across India Protected by Ashlok's Thor Helios & Counting...

CELEBRATING 20 YEARS IN YOUR SAFETY

EARTHING PROTECTION



BACKFILL COMPOUND(S)



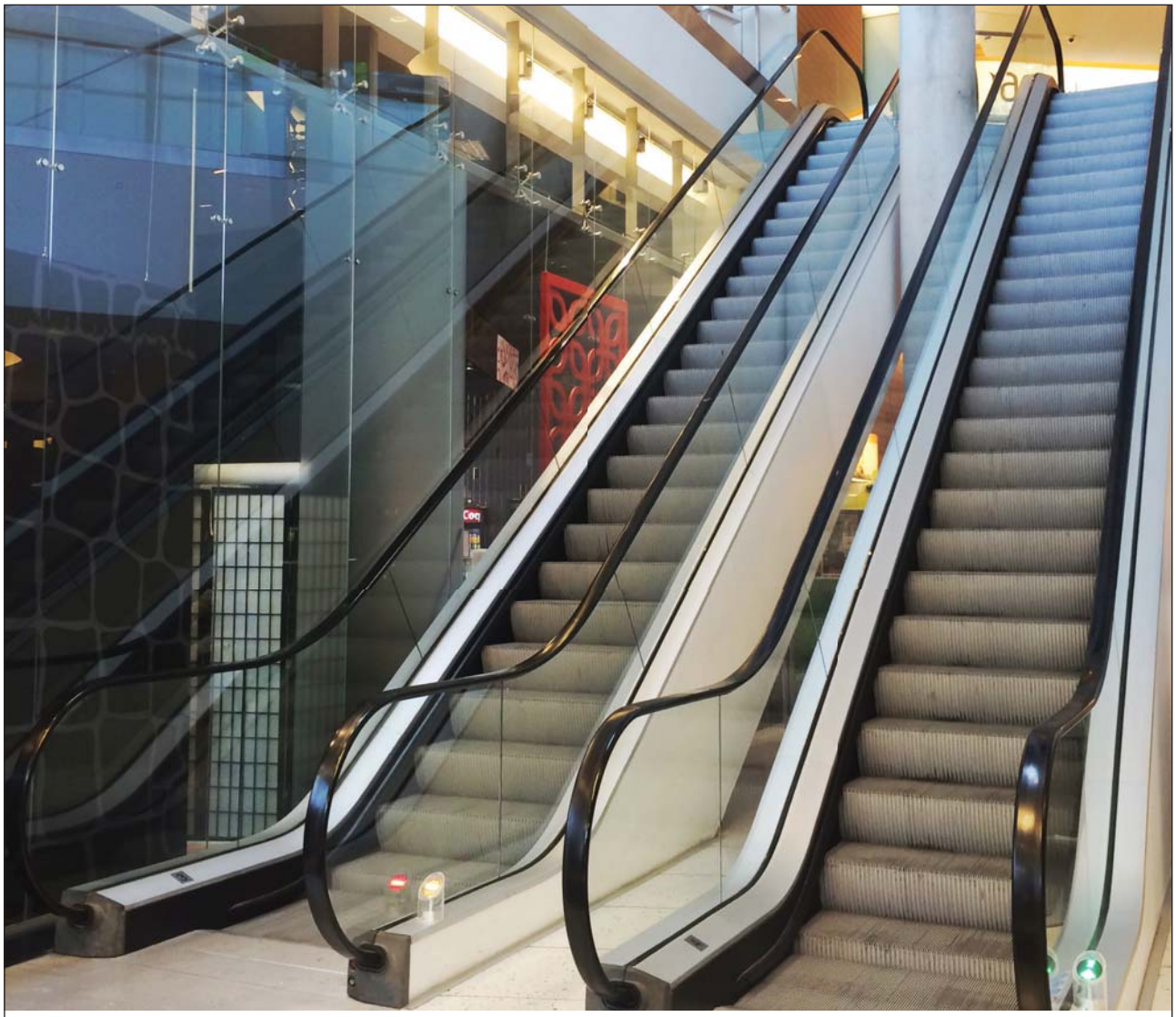
+91 -94440 87356

earthing@ashlok.com

wWw.ashlok.com

No. 58 | SIDCO Industrial Estate | North Phase | Ambattur | Chennai - 600 098.

पंजीयन संख्या : दिल्ली पोस्टल नं. डी.एल. (एन.डी.)-11/6031/2018-19-20
आर.एन.आई. रजिस्टर्ड नं. 14427/1960
आई.एस.एस.एन. 2457-0001
दिनांक 08 को प्रकाशित तथा दिनांक 10-11 को प्रेषित



Escalators
Railway, Metro Stations

Locomotives | Traction Alternators & Motors
Dynamic Brake Resistors | Cooling Fans | HVAC

Daulat Ram
Engineering Services Private Limited

10/2, NH-12, Simrai, Post Obedullahganj, Near Bhopal City, Dist. Raisen (MP) 464993 INDIA
Ph: 91 7480 231252 / 53 | Fax: 91 7480 231250 | info@daulatram.org | daulatram.com

मुद्रक व प्रकाशक : **प्रशान्त कुमार पट्टनायक** द्वारा रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के लिए मैसर्स जे.के. ऑफसेट ग्राफिक्स प्रा.ली., बी-278, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-20 में मुद्रित व 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली से प्रकाशित। संपादक : **योगेश अवस्थी**